रेल रश्मि

अंक : 70, दिसंबर 2015

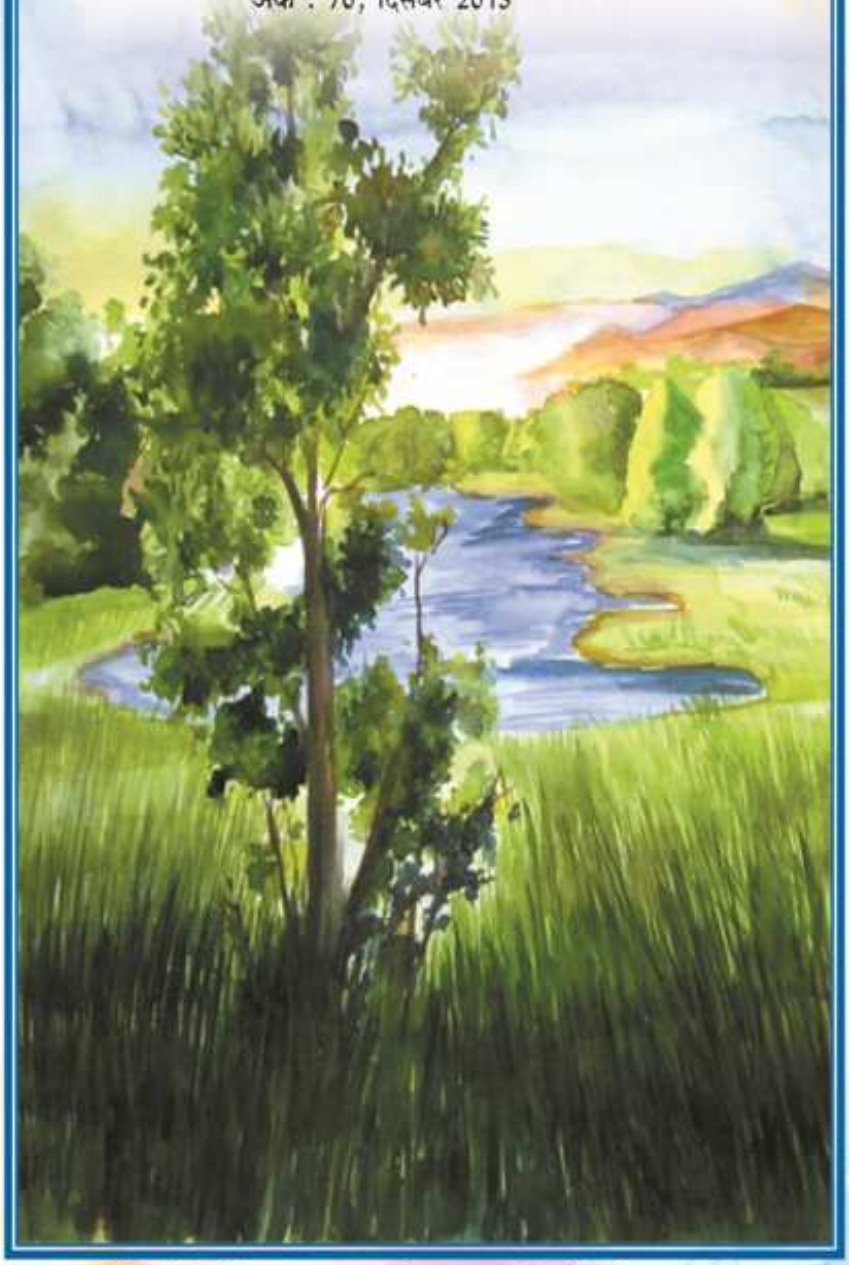

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका

22.11.15 को गोरखपुर स्टेशन पर
स्केलेटर का बटन दबाकर उद्घाटन करते
माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु
व रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा व अन्य विशिष्टगण

22.11.15 को बढ़नी स्टेशन पर गोरखपुर-मुंबई वाया बढ़नी
एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी देकर रवाना करते माननीय रेल मंत्री
श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु व रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा,
महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र व अन्य विशिष्टगण

06.11.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक
श्री राजीव मिश्र साथ में श्री ओ. पी. अग्रवाल, मुराधि
व श्री अनिल शर्मा, मु.या.इंजी.

06.11.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक
में महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र से हिंदी दिवस पर
लगाई गई सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी के लिए पुरस्कार ग्रहण करते
श्री अनिल शर्मा, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

06.11.15 को क्षेराकास की बैठक में
महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र से हिंदी दिवस पर लगाई गई
सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी के लिए पुरस्कार ग्रहण करते
श्री गुण सागर सिंह, मुकाधि/प्रशासन

06.11.15 को क्षेराकास की बैठक में
महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र से हिंदी दिवस पर लगाई गई
सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी के लिए पुरस्कार ग्रहण करते
श्री विजय खातरकर, अपर मुसुआ/रेसुब.

रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 70 दिसंबर 2015

संरक्षक:
राजीव मिश्र
महाप्रबंधक

मुख्य संपादक:
ओ. पी. अग्रवाल
मुख्य राजभाषा अधिकारी

उप मुख्य संपादक:
अखिलेश कुमार सिंह
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक:
वी. डुंगडुंग
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सह संपादक:
ध्रुव कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक व समस्त संपादन:
सुनील कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

पता:
राजभाषा विभाग
मुख्यालय कार्यालय परिसर
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012
टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)
0551-2203396
ईमेल- seniorol9@gmail.com

इस अंक में

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
आपने लिखा है		3
लोकमानस में राम (आलेख)	रण विजय सिंह	7
मृदा में घुलता जहर (लेख)	डा. राजेश हजेला	11
सरल-सहज राजभाषा (लेख)	प्रभाकर मिश्र	16
हिंदी के पहले कवि अमीर खुसरो (साहित्य)	दुर्गेश चंद्र ओझा	19
रामवृक्ष बेनीपुरी: संघर्ष में सौंदर्य की तलाश(साहित्य)	कृष्ण गोपाल श्रीवस्तव	21
काकोरी कांड के अमर शहीद:पं. राम प्रसाद बिस्मिल (लेख)	सुनील कुमार	23
पाँच उपग्रहों का प्रक्षेपण: एक बड़ी उपलब्धि (विज्ञान)	संजय वर्मा	26
गणित और मनोविज्ञान (अध्यात्म)	डा. हरिशंकर कुमार सिन्हा	27
लघु कथाएँ	के. एल. पांडेय	30
क्षणिकाएँ	अरविंद कुमार 'मुकुल'	31
अमान-परिवर्तन: एक परिदृश्य (तकनीकी)	एल. एन. मालवीय	32
रेन वाटर हार्वेस्टिंग (तकनीकी)	के. के. यादव	34
यूनिकोड के हिंदी फांट में टाइपिंग (लेख)	सपना खरे	35
शरणार्थी और विस्थापित (लेख)	संतोष कुमार पासवान	38
प्राथमिक शिक्षा में सुधार एवं रोजगार की संभावनाएँ (लेख)	मुकेश प्रधान	41
यात्रा-वृत्तांत	नीलम प्रभा श्रीवास्तव	43
मुस्कराइए कि आप गोरखपुर में हैं (व्यंग्य)	डा. के. के. चंद्र 'विश्वप्रेमी'	45

कविता, गीत एवं ग़ज़ल

यंत्रालय संरक्षा गीत	ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'	47
कामशियल ब्रेक (कविता)	अनिल कुमार दत्ता	48
कविताएँ	सुधीर कुमार 'चंदन'	49
कविताएँ	शंभू नारायण	50
कविताएँ	बाबू लाल शर्मा 'प्रेम'	51
कविताएँ	प्रवीण कुमार सिंह	51
गज़लें	सुशील 'साहिल'	52
कविताएँ	किरन श्रीवास्तव	53
गीत	दीनानाथ तिवारी	54
गतिविधियाँ		55

निःशुल्क वितरण हेतु

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

संपादक की कलम से...

साहित्य ज्ञान रूपी अमृत कोश का ही दूसरा नाम है क्योंकि इसमें सब तरह के भावों को प्रकट करने की क्षमता होती है। भाषा की शोभा, श्रीसंपन्नता, मान-मर्यादा का एकमात्र अवलंब साहित्य ही होता है। चाहे वह सामाजिक शक्ति हो या सभ्यता इसका एकमात्र निर्णायक साहित्य ही हो सकता है। न केवल निर्णायक ही बल्कि साहित्य रूपी आईने में ही सभ्यता-संस्कृतियों की क्षमता, सजीवता, जीवंतता का प्रत्यक्ष दर्शन हो सकता है। साहित्य हमेशा एक मित्र की भाँति मार्गदर्शन का काम करता रहा है। परिस्थितियाँ चाहे जितनी विषम हों, शब्द के प्रकाशन में विवेक का मार्ग आसान हुआ है। तभी तो यह स्वीकारने में किसी को भी हिचक नहीं कि साहित्य में तोप, तलवार और गोलों से भी ज्यादा अपूर्व शक्ति निहित है। साहित्य में वह शक्ति है कि वह मुर्दों में भी संजीवनी औषधि प्रदान कर जीवित कर सकता है। वास्तव में साहित्य अपने समय की अनुगूँज भी होता है तभी तो वह अपनी परिभाषा- 'स-हित' अर्थात सब का हित की प्रासंगिकता को आज तक कायम रखे हुए है।

समय और मनुष्य का साथ तो शाश्वत है। मनुष्य आकलन करता है कि हम कल से कितना आगे निकल चुके हैं। हमारी दिशा, दशा क्या है और जीवन-मूल्यों की क्या स्थिति है। हिंदी साहित्य का विहंगावलोकन करें तो हमें अपनी लेखनी पर गर्व का अनुभव होता है कि वस्तुत: हम मनुष्यता के पक्ष में ही लिख-पढ़ रहे हैं। हिंदी साहित्य का संसार ही मानवता के हित में पूर्णतया समर्थित है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा लिए हुए व्यापक मनुष्यता के हित में कार्य कर रहा है, जो निश्चित ही प्रशंसनीय है। 'सबको सन्मति दे भगवान' से 'विश्व-बंधुत्व' के चरमोत्कर्ष का ही मार्ग प्रशस्त होता है।

शब्दों के माध्यम का प्रयोग होता रहा है और आगे भी होता ही रहेगा क्योंकि इस माध्यम का कोई स्थानापन्न भी तो नहीं है। शब्दों को साहित्य में पिरोकर रचना- पढ़ना-पढ़ाना जारी रहना ही चाहिए। हमारी 'रेल रश्मि' पत्रिका भी शब्दों के माध्यम से हमारे रेलकर्मीबंधुओं के हृदय की अनुगूँज है जो अपनी कल्पनाशीलता, रचनाशीलता, नवीनता और विश्वसनीयता पर कायम है।

नववर्ष की शुभकामनाएँ,

(वी. डुंगडुंग)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

◆ आपने लिखा है ◆

भारत माता के भाल का कुंकुम

भारत माता के भाल का कुंकुम है हिंदी। हमें इसके सम्मान की रक्षा करनी ही चाहिए। तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित होकर राष्ट्रभाषा के गौरव को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। पूर्वोत्तर रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** यह कार्य विगत कई वर्षों से सफलतापूर्वक करती आ रही है। 'हिंदी दिवस विशेषांक' में प्रकाशित सभी लेख पर्याप्त श्रमपूर्वक लिखे गए हैं। ये लेख मनन करने योग्य हैं। इस अंक में 'ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता', 'हिंदी की शक्ति एवं सीमा', 'कुरुक्षेत्र की विचार-भूमि', 'राम के भरत' तथा 'हिंदी वर्तनी की अशुद्धियाँ' विशेष उपयोगी हैं। कहानियाँ विशेष नहीं जमीं, किंतु रण विजय सिंह का व्यंग्य 'दूसरे कलाम की खोज' पसंद आया। इस अंक में डा.सत्यनारायण त्रिपाठी, चाँद शीरीं, प्रवीण कुमार सिंह और ए.के.दत्ता की कविताएँ अच्छी रहीं।

जगदीश चंद्र श्रीवास्तव
सचिव, पारसनाथ परमावती देवी
जन सेवा संस्थान
सूर्यकुंड, गोरखपुर
संपर्क: 9696706842

'रेल रश्मि' के सितंबर अंक में राष्ट्रभाषा हिंदी से संबंधित सभी लेख विचारोत्तेजक और मनन करने योग्य हैं। राकेश त्रिपाठी ने जहाँ देश में राजभाषा की समस्याओं को ज्वलंत ढंग से उठाया है वहीं कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति और सीमाओं से अवगत कराया है। नीलम प्रभा ने अपनों के बीच परायेपन का दंश झेलती हिंदी का दर्द उकेरा है, तो वहीं राजेंद्र कुमार ने हिंदी वर्तनी की अशुद्धियों पर सारगर्भित चर्चा की है। इन लेखों से यह विशेषांक संग्रहणीय हो गया है। तकनीकी विषयों पर आधारित लेख भी विभागीय कर्मचारियों के लिए विशेष उपयोगी हैं।

इस अंक के अन्य लेखों में 'ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता' पर सुनील कुमार का, कमल नयन का 'राम के भरत' एवं डा. कृष्ण चंद्र लाल का 'कुरुक्षेत्र की विचार-भूमि' विशेष पठनीय और मनन करने योग्य हैं। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'दूसरे कलाम की खोज' रोचक है। प्रवीण सिंह और डा.सत्यनारायण त्रिपाठी की ग़ज़लें, चाँद शीरीं के मुक्तक, यूनिकोड (सपना खरे), हिंदी टाइपिंग टूल (श्याम बाबू शर्मा) जैसे लेख उपयोगी हैं।

एम.जे.श्रीवास्तव
मंडल सचिव
ऑल इंडिया पंजाब नेशनल बैंक
आफिसर्स एसोसियेशन यूनिट, गोरखपुर
संपर्क: 9450882600

जनभाषा हिंदी है प्रणम्य

देश में सर्वाधिक लोगों के द्वारा बोली और प्रयुक्त की जाने वाली भाषा हिंदी ही है। संविधान सभा ने भले ही 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी थी, किंतु भारतीय जनमानस की भाषा तो हिंदी बहुत पहले से ही मानी जाने लगी थी। आगे चलकर हिंदी साहित्य एवं हिंदी पत्रकारिता ने देश को एकसूत्र में जोड़ने और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। देश में हिंदी के समाचार-पत्र पढ़ने वाले पाठकों की संख्या अंग्रेजी के पाठकों की अपेक्षा कहीं बहुत अधिक है। देश में कंप्यूटर के आने के बावजूद हिंदी को एक नवीन स्वरूप मिला है। **'रेल रश्मि'** के 69 वें अंक के माध्यम से आप लोगों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति विनम्र दायित्व-बोध का परिचय दिया है। देश में राजभाषा की समस्या (राकेश त्रिपाठी), हिंदी वर्तनी की अशुद्धियाँ (राजेंद्र कुमार), हिंदी की शक्ति एवं सीमा (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव) समेत नीलम प्रभा और राजीव शर्मा के लेख पसंद आए। अन्य लेखों में 'ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता' (सुनील कुमार), 'कुरुक्षेत्र की विचार-भूमि' (कृष्ण चंद्र लाल) तथा 'दूसरे कलाम की खोज' (रण विजय सिंह) पठनीय रहे। कविताओं में डा. सत्य नारायण त्रिपाठी, प्रवीण सिंह, धुनी और ए.के.दत्ता की रचनाएँ पसंद आयीं।

इंद्रासन पांडेय
वरिष्ठ पत्रकार/दैनिक
'निष्पक्ष प्रतिदिन', गोरखपुर

संपर्क: 9651840199

श्रमसाध्य एवं विविधतापूर्ण

'रेल रश्मि' का सितंबर अंक बहुत ही समय से पाप्त हुआ। इस अंक में प्रकाशित सभी लेख अत्यंत ही श्रमसाध्य और विविधता से भरपूर होते हुए भी अत्यंत ज्ञानवर्द्धक हैं। डा. कृष्ण चंद्र लाल का लेख 'कुरुक्षेत्र की विचार भूमि' तथा कृष्ण गोपाल का लेख 'राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति और सीमा' विशेष रूप से मनन करने योग्य हैं। इन लेखकों ने दिसंबर अंक में 'रेणु के मैला आँचल का यथार्थ' और 'डा. लक्ष्मी नारायण लाल के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना' जैसे अत्यंत रोचक और उपयोगी लेख भी प्रस्तुत किए थे। बधाई!

सितंबर अंक में राकेश त्रिपाठी, कमल नयन पांडेय, श्याम बाबू शर्मा, सपना खरे और सुनील कुमार के लेख भी पसंद आये। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'दूसरे कलाम की खोज' अपनी मिसाल आप है और कलाम साहब के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि भी। इस अंक में प्रवीण सिंह और सत्यनारायण त्रिपाठी की काव्य रचनाओं में निहित काव्य-तत्व प्रशंसनीय हैं। नववर्ष की शुभकामनाओं सहित-

दुर्गेश चंद्र ओझा
उप संपादक 'आज', गोरखपुर
संपर्क: 9415456003

उपयोगी अंक

'रेल रश्मि' के सितंबर अंक के माध्यम से आपके राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रति बड़े सार्थक ढंग से कृतज्ञता एवं यथोचित सम्मान व्यक्त किया है। इस अंक में प्रकाशित लेखों में हिंदी के प्रति जो भावपूर्ण उद्‌गार नि:सृत हैं, वे वास्तव में रेखांकित करने तथा मनन करने योग्य हैं। हिंदी वर्तनी की अशुद्धियाँ (राजेंद्र कुमार), हिंदी की शक्ति एवं सीमा (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव) समेत राकेश त्रिपाठी, राजीव शर्मा और नीलम प्रभा के लेख विशेष उपयोगी और पठनीय हैं। 'कुरुक्षेत्र की विचार-भूमि' (कृष्ण चंद्र लाल), 'ब्राह्मणत्व'(सुनील कुमार) और 'राम के भरत (कमल नयन पांडेय) भी पसंद आये। कहानियाँ कुछ खास रोचक नहीं लगीं किंतु रण विजय सिंह का 'दूसरे कलाम की खोज' वाकई आनंद दे गया। कविताओं में सत्य नारायण त्रिपाठी, चाँद शीरीं, ए.के.दत्ता की रचनाएँ ध्यान आकृष्ट कराने में सफल हैं। एक उपयोगी अंक देने के लिए बधाई।

अशोक गुप्ता
एडवोकेट अंतर्राष्ट्रीय खेल कमेंट्रेटर
खेलकूद, गोरखपुर(उ.प्र)

स्तरीय और सम-सामयिक

'रेल रश्मि' सितंबर अंक देखने-पढ़ने का सुअवसर मिला। हिंदी दिवस विशेषांक का मुखपृष्ठ तो पसंद आया ही, इसमें प्रकाशित रचनाएँ और भी स्तरीय और सम-सामयिक हैं। तकनीकी लेखों में हिंदी टाइपिंग टूल (श्याम बाबू शर्मा), पेपर लाइन क्लीयर टिकट वर्किंग (एन.के सिन्हा), स्टील चैनल स्लीपर का निरीक्षण (ए. के. सेनगुप्ता), रेलवे दुर्घटना (नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव) जैसे लेख विशेष उपयोगी हैं।

इसी अंक में प्रकाशित हिंदी पर सभी लेख एक से बढ़कर एक हैं। इसमें अपनों के बीच परायी हिंदी(नीलम प्रभा), राष्ट्रभाषा के रूप में....(कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव)विशेष उल्लेखनीय हैं। साथ ही 'राम के भरत' (कमल नयन पांडेय) और 'कुरुक्षेत्र की विचार-भूमि' (डा. कृष्ण चंद्र लाल) तथा 'दूसरे कलाम की खोज' (रण विजय सिंह) रोचक और पठनीय हैं। डा.सत्य नारायण त्रिपाठी और प्रवीण सिंह की ग़ज़लें तथा ए.के.दत्ता, चाँद शीरीं और धुनी की कविताएँ ध्यान आकर्षित करती हैं।

विष्णु कुमार
नगर संवाददाता 'आज'
हुमायूँपुर दक्षिणी, गोरखपुर
संपर्क: 9935970464

'रेल रश्मि' के माध्यम से आज राष्ट्रभाषा की बेहद सराहनीय सेवा अत्यंत ही निष्ठा और परिश्रमपूर्वक कर रहे हैं जो अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। अंक 69 को आप लोगों के समवेत परिश्रम और कुशल संपादन ने संग्रहणीय बना दिया है। इस अंक में रोकश त्रिपाठी, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, नीलम प्रभा, सुनील कुमार, श्याम बाबू शर्मा, सपना खरे, रण विजय सिंह, राजेंद्र कुमार के लेख तथा डा.सत्य नारायण त्रिपाठी, चाँद शीरीं और ए.के.दत्ता की रचनाएँ पसंद आयीं।

अजित कुमार पांडेय
सदस्य, कुमार कृषि मित्र
गौरी बाजार, देवरिया (उ.प्र.)

प्रशंसनीय एवं स्तुत्य

वस्तुतः राष्ट्रीय विकास में विशेष योगदान देने वाली एकमात्र जनभाषा है। हिंदी जिसके प्रचार-प्रसार में 'रेल रश्मि' के माध्यम से पूर्वोत्तर रेलवे का राजभाषा विभाग प्रशंसनीय और स्तुत्य कार्य करता आ रहा है। इसके पीछे अनेक साथियों का परिश्रम और सार्थक दायित्व-बोध है जिसके लिए आप और आपके सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

सितंबर/2015 के अंक 69 में विशेष रूप से राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति और सीमा (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव), ब्रह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता (सुनील कुमार), हिंदी टाइपिंग टूल(श्याम बाबू शर्मा), कुरुक्षेत्र की विचार भूमि (कृष्ण चंद्र लाल), अपनों के बीच परायी हिंदी(नीलम प्रभा), यूनिकोड (सपना खरे), हिंदी वर्तनी की अशुद्धियाँ (राजेंद्र कुमार) पसंद आये।

प्रवीण सिंह, सत्यनारायण त्रिपाठी, दीनानाथ तिवारी, चाँद शीरीं की काव्य रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

मुकेश प्रधान
कार्याधी, मुपरिप्र कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9336413985

आपकी त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** का हिंदी विशेषांक हस्तगत हुआ। कई लेख विधि जानकारियों से लबरेज हैं। राकेश त्रिपाठी ने राजभाषा की समस्याओं को उठाया है, तो कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ने हिंदी की शक्ति एवं सीमा को रेखांकित किया है। राजीव शर्मा ने हिंदी को राष्ट्रीय एकत्व का पुंजीभूत आलोक माना है। कुछ हट कर दो लेख हैं- डा.कृष्ण चंद्र लाल का दिनकर रचित 'कुरुक्षेत्र की विचार भूमि' एवं कमल नयन का 'राम के भरत' जो पठनीय हैं। हमेशा की तरह रण विजय सिंह का व्यंग्य अपनी मिसाल आप हैं। यहीं नाम गिनाने को जगदीश नारायण श्रीवास्तव का लेख 'नई रचना की बेचैनी का शहर' बस यों ही-सा लगता है जो गुदगुदाता तो है, किंतु बेअसर-सा होकर रह जाता है। काव्य खंड में सत्य नारायण त्रिपाठी, धुनी, प्रवीण सिंह की रचनाएँ भी पसंद आयीं।

विनोद कुमार
अध्यक्ष, ललित कला-संगीत
विकास परिषद, गोरखुपुर इकाई
संपर्क: 09452844237

आपकी पत्रिका का हिंदी दिवस विशेषांक मिला। कई लेख अच्छे हैं जैसे- 'राम के भरत' (कमल नयन), 'कुरुक्षेत्र की विचार भूमि' (डा. कृष्ण चंद्र लाल), 'देश में राजभाषा की समस्या' (राकेश त्रिपाठी), 'राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति और सीमा' (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव), 'अपनों के बीच परायी हिंदी' (नीलम प्रभा श्रीवास्तव), 'देश को एकसूत्र में बाँधे है हिंदी' (राजीव शर्मा), 'ब्रह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता' (सुनील कुमार) समेत इस अंक की कहानियाँ पठनीय हैं। तकनीकी लेख भी उपयोगी हैं। जगदीश नारायण श्रीवास्तव का लेख 'नई रचना की बेचैनी का शहर' बहुत कुछ नाम गिनाने को जैसा है। उनकी स्मृतियों में डा. अशोक सक्सेना छूट गये जिन्होंने 'सरस्वती स्वयंवर' विश्वविद्यालय के हालात पर व्यंग्य नाटक लिखा। फिर एक और लेखक कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव का जिक्र भी होना लाजिमी लगता है जिनके बाल नाटक 'परी और गुब्बारे वाला' को प्रत्यूष नाट्यमंच के तत्वावधान में डा. गिरीश रस्तोगी ने शायद सन 1974 में किया था। इनकी कोई पुस्तक अथवा संकलन भले ही न आया हो, किंतु इनकी लेखन-यात्रा जारी है। क्या लोहा लोहे को काटता है!....

काव्य खंड में डा.सत्यनारायण त्रिपाठी, प्रवीण सिंह, ए.के.दत्ता की रचनाएँ अच्छी लगीं। अन्य लेखों में सपना खरे, राजेंद्र कुमार, श्याम बाबू शर्मा के लेख भी रोचक और ज्ञानवर्द्धक हैं। रण विजय सिंह के व्यंग्य भी बहुत ही सटीक और सधे हुए लगे।

कपिलदेव मणि त्रिपाठी
सेवानिवृत्त फर्मासिस्ट
सूर्य विहार कालोनी, गोरखपुर
संपर्क: 9984075636

चूँकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझकर अपनाएँ।

डा. भीमराव अंबेडकर

राजभाषा विकास का सांविधिक निदेश

संविधान का अनुच्छेद-346

'संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी; परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।'

संविधान का अनुच्छेद-347

किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

◆ आलेख ◆

लोकमानस में राम

रण विजय सिंह

जिस राम के बारे में हम आज बात कर रहे हैं वे रघुवंशी थे। अर्थात उस वंश में उनसे पूर्व रघु जैसे पराक्रमी ने जन्म लिया था। यह वही रघु थे जिन्होंने कौत्स को गुरुदक्षिणा देने के लिए 14 करोड़ स्वर्ण-मुद्राओं की वर्षा करने हेतु कुबेर को बाध्य किया था। उनसे पूर्व यह वंश महाप्रतापी इक्ष्वाकु के नाम से जाना जाता था। इक्ष्वाकु जिनके पराक्रम और सहयोग से देवों ने असुरों पर विजय पाई थी। राम के बाद भी यह रघुवंश ही रहा क्योंकि राम का व्यक्तित्व इतना व्यापक था कि उसे एक वंश तक सीमित रखना सूर्य को मुट्ठी में बंद रखने जैसा होता। इसी सार्वभौमिक और विराट व्यक्तित्व के कारण रघुवंशी राम लोकमानस में बसे हुए हैं। राम का स्वरूप लोकमंगल और लोकरक्षक का है। यहाँ यह भी बता देना समीचीन होगा कि रघु और इक्ष्वाकु की लोकमंगल और लोकरक्षक की भूमिका अद्वितीय थी पर वह कौन सा गुण था जिसने राम को आज तक न केवल भारतीयों अपितु इंडोनेशिया, खासकर बाली द्वीप, कंबोडिया, थाईलैंड, मारिशस, फीजी, गुयाना आदि के निवासियों के मानस में भी प्रेरक और आराध्य के रूप में अक्षुण्ण रखा है।

आज पूरी मानवता आतंक के साये में जी रही है। कब कहाँ किस रूप में लोग हिंसा के शिकार हो जाएँ इसका ठिकाना नहीं होता है। ऐसे लोग जो कि हर चीज से तटस्थ हैं। निर्दोष हैं। वहीं इस हिंसा के सर्वाधिक शिकार बनते हैं। लोग मस्त हैं किंतु पस्त नहीं क्योंकि उन्हें भरोसा है कि राम की कृपा से एकदिन सब ठीक हो जाएगा। उन्हें आततायी ताड़का, मारीच, सुबाहु, खर और दूषण की कहानी ज्ञात है। रावण के इन आततायियों से पूरा आर्यावर्त्त भयाक्रांत था। उत्तर में ताड़का, मारीच और सुबाहु तो मध्य में खर-दूषण और त्रिशिरा के अनियंत्रित आतंक से लोग न केवल पीड़ित थे अपितु निरंतर जन और धन की हानि भी सह रहे थे। यद्यपि सीता के स्वयंवर वर्णन को पढ़ने से ऐसा लगता है कि देश में तमाम पराक्रमी राजा विद्यमान थे फिर भी या तो वे इनके साथ थे या कि इनका सामना करने का सामर्थ्य नहीं कर पा रहे थे। ऐसा न होता तो विश्वामित्र को यौवन की देहरी पर भी न पहुँच पाए राम को इनसे मुकाबले के लिए दशरथ से मांगने अयोध्या नहीं आना पड़ता।

राम ने ताड़का का वध किया। आज आततायियों के अपराध का परीक्षण उनके धर्म, लिंग, आयु यहाँ तक कि राष्ट्रीयता के आधार पर किया जा रहा है। राम ने उदाहरण से हमें बता दिया है कि एक जैसे अपराध के लिए एक ही जैसी सजा होनी चाहिए। अपराधी, अपराधी होता है, लिंग, जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्रीयता के आधार पर उनमें भेद नहीं करना चाहिए। रावण के इन आततायियों का आतंक काफी दीर्घकाल से जड़ जमाये था। अन्यथा विद्युज्जिह्व के मारे जाने के बाद इस क्षेत्र में रहने के लिए रावण की बहन सूर्पनखा नहीं आती। हर आतंकवादी घटना के बाद लोग यह सोच कर संतोष करते हैं कि जब रावण का अंत हो गया तो वर्तमान आततायियों का भी शीघ्र ही अंत हो जाएगा।

बालि स्थानीय निरंकुश और अन्यायी राजा था। उसके अन्याय से लोग पीड़ित थे। उसे भी राम ने न केवल दंड दिया अपितु उसके प्रश्न पर इस दंड का जो कारण- 'अनुज बधू, भगिनी, सुत नारी, सुनु सठ कन्या सम ये चारी। इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई, ताहि बध्यै कछु पाप न होई।।' बताकर उसे निरुत्तर भी कर दिया।

लोक में राम की यही समदर्शी छवि व्याप्त है इसलिए व्यक्ति सभी अपराधियों के साथ एक जैसा न्याय चाहता है। जब भी इसमें किसी विचलन की संभावना आती है तो वह व्यग्र हो जाता है और हे राम! अब आप ही देखिए-कहकर, सब कुछ राम के हवाले कर देता है।

आज हर व्यक्ति, राम जैसा पुत्र पाना चाहता है। उसकी इस इच्छा का कारण राम का दुष्ट संहारक स्वरूप नहीं है। मैंने उनके दुष्ट संहारक स्वरूप को वर्तमान संदर्भ से जोड़ने के लिए किया है। लोक में राम की सर्वाधिक व्याप्त छवि माता-पिता के आज्ञाकारी रूप में है। पिता के एक इशारे पर दुर्दम्य राक्षसों से संघर्ष करने महर्षि विश्वामित्र के साथ चल देना। राजतिलक के अवसर पर 14 वर्ष के वनवास का आदेश शिरोधार्य करते समय

विमाता कैकेयी से- 'मुनिगन मिलनु विसेषि वन सबहि भाँति हित मोर। तेहि मँह पितु आयसु बहुरि सम्मत जननी तोर।।' कहकर न केवल उन्हें भविष्य में होने वाले अपराध-बोध से मुक्त करने का प्रयास करते हैं अपितु वन-गमन को अपने लिए एक अच्छे अवसर के रूप में बताकर इसके कारण किसी भी प्रकार की द्वेष अथवा दुर्भावना का संचार न होने की बात भी कहते हैं।

राम का वन जाना वास्तव में उनके लिए एक बड़ा अवसर था। इन्हीं 14 वर्षों में राम का चरित्र पूरी तरह से निखर कर लोक के सामने आया। उनका माता-पिता का आज्ञाकारी स्वरूप, न्याय और धर्म के मार्ग पर चलने वाले ऋषियों, मुनियों और अन्य लोगों का रक्षक स्वरूप, आततायियों को दंडित करने वाला स्वरूप, निषादराज गुह्य और शबरी का मान बढ़ाने वाला स्वरूप इसी काल में सामने आते हैं। तात्पर्य यह कि विपरीत परिस्थितियों में न केवल सामान्यजन अपितु ईश्वर का भी सर्वोत्कृष्ट सामने आता है।

राम, पिता के कहने पर न केवल वन जाते हैं वरन अयोध्या का ऐश्वर्यशाली राज्य भी विमाता से उत्पन्न अपने भाई को सौंप देते हैं। रावण का चरित्र पूरी तरह से इसके विपरीत है लंका का राज्य और किसी से नहीं बल्कि अपने ही सौतेले भाई कुबेर से छीना था। लंका विजय के बाद नियमतः इसके सिंहासन पर राम का ही अधिकार होना चाहिए था पर 'सो संपदा विभीसनहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ।'

उस सोने की लंका को तो राम पहले ही विभीषण को सौंप चुके थे। राम का यही त्याग भारतीय समाज को भाता है क्योंकि यहाँ पर छीनने वाले नहीं बल्कि देने वाले की महत्ता है। राम के एक अन्य यशस्वी पूर्वज सत्यवादी हरिश्चंद्र को भी लोग इसीलिए याद करते हैं। उन्होंने न केवल अपना राज्य दान कर दिया था बल्कि अपने इसी कर्तव्य की पूर्ति के लिए स्वयं को भी बेच दिया था।

मैं संयुक्त फैजाबाद जनपद के एक गाँव कहरा सुलेमपुर का रहने वाला हूँ। आज मेरा गाँव अंबेडकर नगर जनपद में है। मेरे पूर्वज बस्ती जनपद से यहाँ आए थे। प्रथम पूर्वज के दो पुत्रों ने सहयोगियों के साथ दो गाँव बसाये। क्षेत्र में आस-पास बीसों गाँव में कोई इस्लाम मतावलंबी नहीं है। किंतु छोटे भाई के बसाये गाँव बरौली में कहीं से आकर एक परिवार बस गया था। पहली पीढ़ी के वृद्ध बुढ़ऊ साईं कहे जाते थे। उनके चार बेटे बड़का साईं, छोटका साईं, मंझला साईं, सझला साईं कहकर पुकारे जाते थे। आस-पास के गाँवों की एकलौती रामलीला बुढ़ऊ साईं लगवाते थे। कटनी के समय लोगों से मांग-मांग कर धान-गेहूँ इकठ्ठा करते थे। इनके बाद भी पैसा कम पड़ता था। उस कमी को वे किसी अन्य से नहीं बल्कि इक्का चलाने वाले अपने दो बेटों बड़का और छोटका साईं से पूरा करवाते थे। बड़का साईं इस बारे में पूछने पर कहते थे- बाप के कहने पर तो राम जी अयोध्या का राज-पाट छोड़ दिए थे, यह तो केवल कुछ पैसों की बात है। निष्कर्ष यह कि राम का त्याग केवल हिंदुओं ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतीय समाज को प्रेरणा देता है।

राम ने अपने समय के बड़े-बड़े बलशालियों को परास्त किया। अभिमानियों का मानमर्दन किया। जिस शिव धनुष को कोई हिला नहीं सका था उसे राम ने पलक झपकते ही न केवल उठाया बल्कि प्रत्यंचा चढ़ाने के क्रम में भंगभी कर दिया था। राम ने इन सारे कार्यों को सहजता से लिया। इससे उनमें किसी प्रकार का अभिमान नहीं पनपा। न तो त्याग से और न ही पराक्रम से।

आज रामलीलाएँ दो अवसरों पर होती हैं। एक विजयादशमी और दूसरी राम के विवाह के समय। अर्थात समाज के लिए राम के जीवन की ये दोनों घटनाएँ महत्वपूर्ण हैं। विजयादशमी के समय की रामलीला में जहाँ राम का पूरा जीवन चरित दिखाया जाता है वहीं अगहन में होने वाली रामलीला को राम विवाह तक ही सीमित रखा जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि समाज राम और सीता के दांपत्य को आदर्श मानता है। सीता अयोध्या के ऐश्वर्य को छोड़कर वन में राम का अनुसरण करतीं हैं तो सीता के लिए राम जगद्विजयी रावण के रण करते हैं। वे सूर्पणखा का प्रेम निवेदन ठुकराते हैं। आजीवन एक पत्नीव्रत रहते हैं। सीता के प्रति उनका अगाध और मर्यादित प्रेम अशोक वाटिका में हनुमान के माध्यम से लिए गए उनके संदेश- 'तत्व प्रेमकर मम अरुतोरा, जानत प्रिया एक मनु मोरा। सो मनु सदा रहत तोहिं पाई जानु प्रीतिरस ऐतनहि माहि' से देखा जा सकता है। इतना मर्यादित प्रेम संदेश विश्व में दूसरा नहीं है।

राम की बात कहते हुए राम-राज्य का उल्लेख कैसे छोड़ा जा सकता है। आज भी हर व्यक्ति आदर्श राज्य की कल्पना की रामराज्य की कल्पना के रूप में देखता है। इसमें धर्म या पंथ निरपेक्षता आड़े नहीं आती है। गाँधी जी के सपनों के भारत में राम-राज्य की कल्पना थी। समाजवादी पुरोधा लाहिया न केवल राम और रामायण के बल्कि राम-राज्य के भी कायल थे।

राम के साथ लक्ष्मण 14साल तक वन में रहे। लक्ष्मण के प्रति राम का अगाध प्रेम उनके शक्ति लगने के समय दिखाई पड़ता है। सीता और लक्ष्मण दानों ही राम के साथ वन में थे। सुख-दु:ख सहे। स्वभावत: सीता व लक्ष्मण औरों से अधिक उन्हें प्रिय भी होने चाहिए। किंतु जब राजधर्म निभाने की बात आती है तो राम एक-एक कर दोनों का त्याग कर देते हैं। उनके न्याय के लिए सभी समान थे। पत्नी-भाई कोई भी क्यों न हो। किसी का विशेषाधिकार नहीं। आज तो यह पत्नी और पुत्र-पुत्री, भाई-भतीजों से होता हुआ दूर के संबंधियों और जाति तथा धर्म भाइयों तक पहुँच गया है। राम राज्य में सबके लिए समान कानून था। बाकी यदि प्रजा की समृद्धि की बात करें, सुख की बात करें तो 'नहीं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना, नहि कोऊ अबुध न लच्छन हीना' तो था ही। अर्थात समाज हर तरह से विकसित था।

लोकमानस अपने शासक में राम की न्यायप्रियता और सामाजिक विकास के आयाम देखना चाहता है। आज भी उसका आदर्श अकबर, अशोक या विक्रमादित्य का शासन नहीं बल्कि रामराज्य है। जब विक्रमादित्य की बात अयोध्या में हो रही है तो इस विषय में एक प्रचलित कथा का उल्लेख करना भी आवश्यक है। विक्रमादित्य को अपनी न्यायप्रियता का अभिमान हो गया। अभिमान इतना भी नहीं था कि अपने को राम जैसा मानने लगते पर अपनी प्रजा को राम की प्रजाके समकक्ष अवश्य समझने लगे। विक्रमादित्य जैसे महान शासक के लिए यह अहंकार ठीक नहीं था अत: काग भुशुंडि के उनके इस भ्रम-भंग के लिए एक उपाय किया। उन्होंने राजा को रामराज्य में अयोध्या के चतुष्पथ पर रखे रत्न भरे थालकी कथा सुनाई । थाल के रत्न धूल खाते रहे किंतु किसी नगर वासी यहाँ तक कि पशु-पक्षियों ने भी उन्हें नहीं छुआ। यह राम की अयोध्या का लोभरहित चरित्र था। जैसी राजा वैसी प्रजा। विक्रमादित्य ने जब अयोध्या की खुदाई कराई तो वह थाल ज्यों का त्यों मिला। रत्नों से भरा। कहा जाता है उन्होंने उसी धन से अयोध्या का पुनरुद्धार कराया।

निष्कर्षत:राम किसी भी कारण से पस्त मानवता के लिए अवलंब हैं। मध्य युग में जब प्रजा विदेशी शासकों के अत्याचारों से त्राहि-त्राहि कर रही थी- तब तुलसी के राम के रूप में वे उसे सांत्वना देते रहे। अपने देश से हजारों मील दूर फीजी, मारीशस, अफ्रीका और लातीना अमरीका के देशों में वे उसे धैर्य बँधाते रहे। राम के लिए कुछ भी असंभव नहीं है और उनके कृपा पात्र के लिए भी। यह मानकर सभी विषम परिस्थितियों से छुटकारे के लिए वह राम का स्मरण करता है। उसके लिए राम से बड़ा राम का नाम है जो सदैव उसके साथ है। उसकी हर सफलता का कारणर राम है तो दुख और विफलता भी उसी पर निर्भर है। अत: सदैव तेरा तुझको अर्पण की स्थिति रहती है। वह राम जैसा पुत्र चाहता है। पुत्र के उत्पन्न होने पर जब सोहर गायी जाती है तो पिता राजा दशरथ और जातक राम होता है।

विवाह गीतों में वधू सीता तो वर राम होता है। वह अपने लिए राम जैसाराजा चाहता है। दवा भी राम बाण चाहता है। लोक में राम और उनकी अयोध्या जैसा और कुछ नहीं है। इसीलिए संतों का मुद मंगलमय समाज चलते-फिरते जंगम तीर्थराज की भाँति आज यहाँ एकत्रित है। तीर्थराज प्रयाग अपनी शुद्धि के लिए अयोध्या आते हैं और लोगों के पाप धुलते-धुलते जो कलुष एकत्रित रहता हैउसे बहा कर पुन: लोक कल्याण में तत्पर होते हैं। यह सब केवल इसलिए है क्योंकि अयोध्या और सरयू- दोनों राम से जुड़े हैं। वह राम जो कि लोकमानस में हर प्रकार के आदर्शों में अद्वितीय स्थान रखते हैं। वह लोकरंजक हैं, लोकरक्षक हैं और साथ ही साथ हर दशा में लोकप्रेरक भी है।

राम एक आदर्श सखा भी हैं। वे चाहते तो बालि को सखा बना सकते थे। वह सुग्रीव से अधिक पराक्रमी और रावण-विजयी भी था पर उन्होंने उसके विपरीत सुग्रीव को चुना। सुग्रीव और विभीषण को न केवल उन्होंने राजा बनाया बल्कि पूरे जीवन भर सखा धर्म का पालनभी किया।

जहाँ राम हों, रामसखा हो वहाँ हनुमान को होना ही है। वे अपने को राम का सेवक मानते हैं पर राम उन्हें

कभी लक्ष्मण तो कभी भरत जैसा प्रिय कहते हैं। सेवक को भाई जैसा सम्मान देना- राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम के अतिरिक्त कौन कर सकता था? उन पर राम की कृपा का फल है कि आज कमोवेश राम जितने मंदिर हनुमान के भी हैं। यह राम के सेवा धर्म के सम्मान की लोक स्वीकृति है।

एक मलयाली लोककथा के अनुसार एक दिन सिंहासन पर बैठे हुएराम अपनी अंगूठी से खेल रहे थे। एकाएक अंगूठी गिरकर सिंहासन के नीचे एक छिद्र में चली गयी। हनुमान उसके पीछे-पीछे गए। अंगूठी पाताल लोक पहुँच गयी। हुनमान भी पीछे-पीछे गए। पाताल लोक के राजा के प्रश्न पर जब उन्होंने वहाँ अपने आने का कारण बताया तो उसने राम की अंगूठी लाने का आदेश दिया। अंगूठियों से भरा एक थाल लाया गया। राजा ने हनुमान से उसमें राम की अंगूठी लेने को कहा। सभी अंगूठियाँ एक जैसी थीं। सब पर राम-राम अंकित था। हनुमान को दुबिधा में देख राजा ने उन्हें बताया कि हर युग में राम होते हैं और प्रस्थान से पूर्व उनकी अंगूठी इसीप्रकार गिरकर पाताल लोक आ जाती है। इस कथा का तात्पर्य यह है कि राम हर युग में समीचीन रहेंगे और लोक मानस में इसीप्रकार बने रहेंगे।

लोक मानस में जिस राम की छवि है वह तुलसी के राम हैं। वैसे तो राम की अनेक कथायें हैं। कितने ही लोगों ने राम कथा लिखी है। 360 रामायणों का उल्लेख तो दिल्ली विश्वविद्यालय वाली पुस्तक में टिप्पणीकार रामानुजम् जी ही करते हैं।किंतु लोकमानस ने जो स्वीकृति तुलसी के राम और उनकी रामकथा की दी है वह किसी अन्य को प्राप्त नहीं है इसलिए मैंने मूल में तुलसी की रमकथा को ही रखा है। तुलसी ने कई रामकथाओं, पुराणों आदि के समन्वय से मानस की रचना की है। अत: मैंने यह उचित समझा कि उनके द्वारा वर्णित रामचरित के आधार पर इस लेख की संरचना की जाए।

तुलसी के राम ने समाज में मर्यादा स्थापना का कार्य किया है। आज समाज का शायद ही कोई व्यक्ति हो जो उनके रामचरित से परिचित न हो। उसकी किसी न किसी अर्धाली को उद्धृत न करता हो। शिक्षित हो या अशिक्षित। हर कोई उनकी रामकथा से परिचित है। तुलसी का महाकाव्य जन-जन में प्रचलित है। इसकी लोकप्रियता का श्रेय यद्यपि तुलसीदास को भी दिया जा ना चाहिए पर राम का चरित्र तो स्वयं में ही एक काव्य है। तुलसी प्रकांड विद्वान अवश्य थे पर राम के बिना उन्हें भी इतनी सफलता नहीं मिल सकती थी। यह सब राम के लोकमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप के कारण संभव हुआ।

अंत में लोकमानस में व्याप्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की छवि को शत-शत नमन। ✠✠

भूतपूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क:09794849749

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य तिलक

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टति तामहु: परमां गतिम्।।

कठोपनिषद 2/3.10

अर्थात जब पाँच ज्ञानेंद्रियाँ तथा मन और बुद्धि शांत हो जाते हैं एवं बुद्धि कार्य नहीं करती वह परम गति कहलाती है।

◆ लेख ◆

मृदा में घुलता ज़हर

डा.राजेश हजेला

अनादिकाल से ही भारतीय जनमानस सदैव से अपने पर्यावरण की शुचिता के प्रति सचेत एवं जागरूक रहा है। वैदिक काल से अब तक के समस्त भारतीय वांङमय में पर्यावरण के प्रति एक विशिष्ट चिंतन-दृष्टि दिखायी देती है। भारतीय मनीषियों ने सदैव पंचतत्व की शुद्धि पर बल दिया है। स्वस्ति-वाचन मंत्रों में कामना की गयी है कि द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी सभी शांति एवं कल्याण देने वाले हों; सभी जल, औषधियाँ और वनस्पतियाँ हमें सुख-शांति प्रदान करें। सभी देवता, परब्रह्म परमेश्वर और सभी सम्मिलित रूप में शांति देने वाले हों; आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की शांति हो तथा वह शांति हममें सदैव वृद्धि को प्राप्त हो-

ऊँ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांति। वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्मशांतिः, सर्व शांतिः शांतिरेव शांतिः, सा मा शांतिरेधि।। ऊँ शांतिः, शांतिः,शांतिः।। सर्वारिष्ट-सुशांतिर्भवतु।।

-यजुर्वेद 36.17

माँ हमें जन्म देती है किंतु हम पल कर बड़े होते हैं इस मिट्टी में। इसकी सोंधी सुगंध हमारे रोम-रोम में परमात्मा की तरह व्याप्त रहती है। यह मृदा जीवन-प्रदायिनी है। हम इसके उपकार से कभी उऋण नहीं हो सकते। भारत भक्ति स्त्रोतम् में कहा गया है कि हे मातृभूमि देवी! (जिसकी रक्षा स्वयं विष्णु पति रूप में करते हैं) मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। हे सागर रूपी परिधानों और पर्वत रूपी स्तनों से शोभायमान धरती माता! मुझे चरणों से स्पर्श के लिए क्षमा करो-

समुद्र वसने देवि! पर्वतस्तन मंडले
विष्णु पत्नि! नमस्तुभ्यं पाद स्पर्शम् क्षमस्व मे।

इन मंत्रों में समग्र पर्यावरण को शुद्ध एवं सुखद बनाने की कामना की गयी है किंतु आज ये मंत्र अपनी अर्थवत्ता को खो चुके हैं। अतिशय बुद्धिवाद की प्रचंडता ने मानव-हृदय से अपनी धरती से लगाव के उपरोक्त समस्त भाव तिरोहित कर दिए हैं। फलस्वरूप वह सब कुछ अपने अधिकार में करने हेतु बावला हो रहा है। परिणाम? प्रकृति के पावन-स्वरूप को प्रदूषण का राहु क्षण-प्रतिक्षण अपने विषाक्त पंजों में निष्ठुरतापूर्वक दबोच कर विषाक्त बनाता जा रहा है।

आज का मनुष्य स्वार्थवश इतना व्यावसायिक हो चुका है कि वह अपनी ही भावी पीढ़ी की चिंता किए बिना वर्तमान काल में ही संपूर्ण सुख-सुविधाओं का दोहन कर लेना चाहता है। परिणाम सामने है। आज न पृथ्वी शुद्ध है, न वायु और न ही जल। प्राचीन काल से ही मृदा को शुद्धिकारक माना गया है। पुरातन ग्रंथों में हाथ धोने के लिए और यहाँ तक कि नहाने के लिए भी मिट्टी को उपयुक्त बताया गया है। साथ ही उर्वरक तत्व निरंतर ह्रासमान होते जाने के कारण कृषि कार्य हेतु भी वह प्राणहीन होती जा रही है।

मृदा का उपयोग मुख्यतः कृषि के लिए होता है। इसमें या तो मौलिक रूप से उर्वर तत्व होते हैं अथवा इन तत्वों को कृत्रिम रूप से इसमें समाविष्ट किया जाता है किंतु जब मृदा में कुछ अनुपयोगी या विकृतिकारक तत्व मिल जाते हैं तो कृषि कार्य के लिए भी उसकी उपयोगिता क्षीण हो जाती है। इस विकृति को हम मृदा-प्रदूषण कहते हैं। लगभग सभी विद्वानों ने मृदा-प्रदूषण का यही तात्पर्य स्वीकार किया है। डा. शिवगोपाल मिश्र के अनुसार- 'कोई भी ऐसा पदार्थ चाहे सजातीय हो या विजातीय जो मृदातंत्र में मिलकर भूमि की उपयोगिता को प्रभावित करे वह मृदा-प्रदूषक कहलाता है। प्रदूषकों के कारण उत्पन्न स्थिति जो सामान्य से भिन्न होती है, प्रदूषण कहलाती है।' जब भौतिक या मानवीय कारणों से मृदा की गुणवत्ता घटने लगती है तो उसे मृदा का ह्रास कहा जाता है। यह ह्रास मृदा के कटाव, अधिक उपयोग से पोषक तत्वों की कमी, तापमान में घट-बढ़ जीवांश का असंतुलित अनुपात और प्रदूषकों के मिश्रण से उत्पन्न होता है। कोई भी पदार्थ जो मिट्टी में मिलकर उसकी उत्पादकता पर प्रभाव डालता है, उसे हम मृदा-प्रदूषक कहेंगे।

डा.बी.एल.शर्मा के अनुसार- ''मृदा के विनाश में मानवीय क्रियाकलाप भी किसी तरह कम नहीं होते। मानव स्वयं मृदा के शोषण में बहुत बड़ा कारक है। वह

अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धरातल पर मृदा का अनेक रूप से उपयोग कर उनसे उत्पादन के रूप में अपने साधन जुटाता है और इनका हनन करता है, इसे 'मृदा का चीर हरण' कहा गया है।'' अत: स्पष्ट है कि मृदा के सामान्य गुण को अनुपयोगी एवं विकृत करने वाले तत्व ही उसे प्रदूषित करते हैं।

मृदा प्रदूषण के सबसे बड़े कारक कीटनाशक और रासायनिक उर्वरक हैं। इसमें निहित तत्व मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवों को नष्ट कर देते हैं तथा उसके तापमान को प्रभावित कर उसके पोषक तत्वों से रासायनिक प्रक्रिया करके उसकी गुणवत्ता को भी नष्ट कर देते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार सन 1965-66 में विश्व में लगभग 2503 अरब टन कीटनाशकों की खपत थी जो सन 2014 में बढ़कर 4674 अरब टन हो गयी। कीटनाशकों के प्रयोग से तात्कालिक रूप से पहले तो फसलों का उत्पादन बढ़ जाता है किंतु बाद में ये फसल के लिए लाभदायक कीड़ों को भी मारते हैं और इसप्रकार मृदा की गुणवत्ता विनष्ट करने के बाद फसलों की आंतरिक अवसंरचना एवं जींस को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन्हें 'रेंगती मृत्यु' कहना पूर्णत: उचित है।

कीटनाशकों का प्रयोग करते-करते भूमि स्वयं को उनकी आदी बना लेती है जिससे उनका प्रयोग बंद होने पर वह अपनी प्रतिरोधक क्षमता खो देती है तथा बड़ी कठिनाई से आगामी कई वर्षों में अपनी पुरानी उत्पादक-क्षमता को वापस प्राप्त कर पाती है। जिस वर्ष कीटनाशकों का प्रयोग न किया जाए या कम हो तो उत्पादन उसी मात्रा में घटता जाता है। एक समय ऐसा भी आता है कि उत्पादन के संदर्भ में मृदा बिल्कुल क्षमताहीन हो जाती है और उसमें खारापन बढ़ जाता है।

डाइक्लोरो डाइफिनाइल ट्राईक्लोरोआक्साइड(डी. डी.टी.) तथा अन्य रासायनिक तत्व मृदा में समाविष्ट होकर उसको गहराई में पहुँच जाते हैं और मृदा की उत्पादन क्षमता को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त ये तत्व वनस्पतियों तथा सब्जियों के माध्यम से मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर असाध्य बीमारियों का कारण बन जाते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार छिड़काव के लिए प्रयुक्त डी.डी.टी. का 75प्रतिशत मृदा में गिर जाता है और वह वहीं संचित होता रहता है। इस डी.डी.टी. से मृदा में रहने वाले अनेक उपयोगी जीव भी नष्ट हो जाते हैं। पारा तथा सोडियम भी मृदा में संचित होते हैं। ये तत्व मृदा की ऊपरी सतह में एकत्र हो जाते हैं और कालांतर में इनका हानिकारक प्रभाव वनस्पतियों एवं जीवों को प्रभावित करके प्र्यावरण के असंतुलन का कारण बनता है।

वन सदैव से हमारे पोषक तथा हमारी संस्कृति के प्रतीक रहे हैं लेकिन मनुष्य उनका अनियंत्रित दोहन करके मृदा-क्षरण को बढ़ावा दे रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार आगामी 20 वर्षों में संपूर्ण विश्व की कृषि योग्य भूमि का लगभग एक-तिहाई भाग नष्ट हो जाएगा। यदि वनों का कटान न रोका गया तो दिल्ली भी वीरान हो जाएगी। ज्ञातव्य है कि रेगिस्तान देश की राजधानी की ओर बढ़ रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से भूमि की गुणवत्ता में निरंतर कमी आती जा रही है जिससे उसकी उत्पादन क्षमता में गिरावट आ रही है। आगामी समय में इसके गंभीर परिणाम होंगे। भोजन, रेशा या आवश्यक उत्पादों का उत्पादन करने वाली भूमि पहली योजना के आरंभ में प्रति व्यक्ति 0.33 हेक्टेयर से 12वीं योजना (सन 2011-16) के अंत तक घटकर 0.23 हेक्टेयर हो जाने का अनुमान है। स्थिति इसीतरह बिगड़ती रही तो अब तक प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादन जो औसत 0.26 प्रति हेक्टेयर है, आगे इससे भी कम हो सकता है।

मृदा अपक्षरण का प्रमुख कारण वनों का विनाश है। वृक्ष मृदा को बाँधने का कार्य करते हैं। वृक्षों के न होने से मृदा के बहाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है तथा ऊपर की मिट्टी बह जाती है। एक रिपोर्ट के अनुसार किसी भूमि से वनों के नष्ट हो जाने पर उसकी उपजाऊ मिट्टी की हानि पहले कीी तुलना में 400 गुना अधिक बढ़ जाती है। भारत में भूमि कटाव एक गंभीर समस्या है। एक हेक्टेयर भूमि से लगभग 16.35 टन मिट्टी प्रति वर्ष बह जाती है। इसप्रकार भारत के संपूर्ण क्षेत्रफल से 5, 334 मिलियन टन मिट्टी प्रति वर्ष बह जाती है।

औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ भी मृदा के प्रदूषण में प्रमुख कारक की भूमिका निभाते हैं। औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ नगरीय क्षेत्रों में व्यापार तथा औद्योगिक क्रियाओं के फलस्वरूप प्लास्टिक, कूड़ा-कचरा, कागज, रबड़,

काँच तथा धातु इत्यादि में परिवर्तित होकर निकलते हैं। इन औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थों से मृदा प्रदूषित हो जाती है तथा उसकी उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है। भारत के महानगरों में मुंबई ठोस अपशिष्ट पदार्थों के निष्कासन में प्रथम स्थान पर है। यहाँ प्रतिदिन 3000टन से भी अधिक ठोस अपशिष्ट पदार्थ तथा 2500 टन से भी अधिक अन्य अपशिष्ट पदार्थ निकलते हैं। दिल्ली(2100 टन),चेन्नई(1200टन),बेंगलुरु(1000टन), कानपुर(850टन), लखनऊ (700टन) और चंडीगढ़ (300टन) क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे तथा सातवें स्थान पर हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि सन 2021 तक इन महानगरों से ठोस अपशिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन लगभग डेढ़ गुना हो जाएगा।

मृदा प्रदूषण के कारकों में एक अन्य प्रमुख कारक रेडियो सक्रिय अपशिष्ट पदार्थ हैं। ये कारक परमाणु बमों के विस्फोट व परीक्षण द्वारा, परमाणु बिजली घरों के व्यर्थ कचरे द्वारा परमाणु संयंत्रों में रिसाव से उत्पन्न होते हैं। प्राकृतिक यूरेनियम अयस्क के खनन, सांद्रण, संवर्द्धन से लेकर संपूर्ण नाभिकीय ईंधन-चक्र-प्रक्रम से होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया में अत्यधिक घातक रेडियो सक्रिय पदार्थ जैसे- 230टी. एच., 226आर.ए., 222आर.ए., 222आर.एन., 210पी. बी.आदि प्रचुर मात्रा में बनते हैं। ऐसा देखा गया है कि धूल-कणों के रूप में स्ट्रांशियम (एस. आर.-90) ग्रहण होता है तो उसकी सांद्रता में 90गुनी वृद्धि हो जाती है। अतः जलोढ़ मिट्टी रेडियो सक्रिय आइसोटोप ग्रहण करके घातक बन सकती है।

मृदा-प्रदूषण प्रमुख जटिलतम समस्याओं में से एक है, जिसे रोकना आज की परिस्थितियों में अपरिहार्य हो गया है। शासकीय स्तर पर भारत सरकार का पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, केंद्रीय पर्यावरण निदेशालय, गंगा परियोजना निदेशालय, राष्ट्रीय परती भूमि विकास मिशन, विश्व पर्यावरण तथा विकास आयोग, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम तथा अनुसंधानिक सतर पर अभियांत्रिकी और ग्रामीण प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.इ.आर.टी.), इलाहाबाद; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई. सी.ए.आर.), नई दिल्ली; शीलाधर मृदा विज्ञान शोध संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद; राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (एन.इ.इ.आर.आई.-नीरी), नागपुर जैसे महत्वपूर्ण संस्थान कार्यरत हैं लेकिन ये सब संस्थान स्वयं कार्य नहीं कर सकते। ये केवल परियोजनाओं की शुरुआत कर सकते हैं, उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं तथा उनकी समीक्षा कर सकते हैं। इन सब कार्यों को धरातल पर संपादित करने का दायित्व तो हमारा है, जो हमें ही करना होगा। भूमि के समन्वित उपयोग, जल संसाधनों की उचित व्यवस्था, जैविक विच्छेदन की प्रक्रिया, कीटनाशकों के प्रयोग पर नियंत्रण, रासायनिक उव्रकों का संतुलित उपयोग, कूड़ा-कचरा को जला कर उसकी कंपोस्ट खाद एवं बायो-गैस बना कर तथा अम्लीय मिट्टी में चूने का प्रयोग करके नाभिकीय विघटन उत्पाद स्ट्रांशियम (एस.आर.-90) के अवशोषण पर रोक इत्यादि उपायों द्वारा मृदा-प्रदूषण की बढ़ती विभीषिका में कमी लायी जा सकती है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद(आई.सी.ए.आर.), नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक डा. मंगला प्रसाद राय के अनुसार- 'यूरिया के गलत उपयोग के कारण गेहूँ की जड़ें कमजोर हो रही हैं। यूरिया के ट्रॉप ड्रेसिंग से गेहूँ की जड़ें नीचे जाने की जगह सतह के ऊपर पड़ी नाइट्रोजन को लेने के लिए ऊपर ही फैलने लगती है। इससे पौधा मजबूती के साथ जमीन को पकड़ने में असमर्थ रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि वर्षा के साथ हवाओं के चलने से फसलें गिर जाती हैं। इससे गेहूँ के दाने पड़ने कम हो जाते हैं, साथ ही दाने पतले भी हो जाते हैं और पैदावार में भारी गिरावट आ जाती है। ट्रॉप ड्रेसिंग से यूरिया का 65 प्रतिशत हिस्सा सीधे वातावरण में चला जाता है। यूरिया नाइट्रेट में परिवर्तित होकर हवा में घुल जाती है जिससे फसल को अपेक्षित लाभ नहीं होता है। यूरिया का प्रयोग फसलों की बुआई के समय ही बीजों के साथ भूमि के भीतर होना चाहिए। परंपरागत खेती का तरीका बेहद वैज्ञानिक होता है। इसे हम आधुनिकता के नाम पर भूलते जा रहे हैं। परंपरागत हल से जुताई होने पर खेतों की मिट्टी कठोर नहीं होने पाती जबकि ट्रैक्टरों द्वारा बार-बार जुताई करने से खेत कठोर हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि फसलों की जड़ें नीचे नहीं पहुँच पाती हैं। जड़ें ऊपर ही ऊपर रहने के कारण तेज हवाओं के झोंके से फसलें गिर जाती हैं। विशेष रूप से गेहूँ के लिए यह ठीक नहीं है। इसके विपरीत सरकार रोटावेटर

की खरीद को प्रोत्साहित करने के लिए सब्सिडी दे रही है। इससे भूमि का निचला हिस्सा धीरे-धीरे सख्त हो रहा है। पुराने जमाने के किसान सहज ज्ञान से खेती करते थे। वे फसलों की संवेदनशीलता को महसूस करते थे। अगर इसके साथ विज्ञान को जरूरत भर जोड़ दिया जाता तो खेती को चार चाँद लग जाते। वर्तमान कृषि विज्ञान से अनभिज्ञ हमारे पहले के किसान परंपरागत जानकारियों के आधार पर खेती करते थे।'

भारत सरकार के कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह का भी कहना है कि 'केंद्र सरकार ने परंपरागत खेती की शुरुआत करने के लिए पहल की है। इससे आपदा को मात देने की कोशिश होगी। इसमें जहाँ रसायनों का प्रयोग नहीं के बराबर होगा वहीं जैविक खादों से की जाने वाली खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा। परंपरागत व जैविक खेती से जहाँ लागत कम होगी वहीं पैदावार में कमी नहीं आएगी। इससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी। अब परंपरागत खेती ही विकल्प होगी। खेती के तौर-तरीकों में घालमेल से ज्यादा गड़बड़ी हो रही है। किसानों में खाद के प्रयोग की विधियों की जानकारी देने के लिए अभियान चलाया जाएगा। खाद उत्पादक कंपनियों के साथ कृषि प्रसार व्यवस्था को और दुरुस्त किया जाएगा। किसानों को फसल-चक्र के प्रयोग से खेतों की उर्वरा क्षमता को बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। इसके लिए फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित किया जाएगा। फसल बीमा योजना में भी सुधार किया जा रहा है। किसानों को अब फसल बीमा योजना की जगह मौसम आधारित बीमा का विकल्प चुनने को कहा गया है।' भारत सरकार वित्तीय वर्ष 2015-16 में किसान आमदनी बीमा योजना लागू करने हेतु प्रतिबद्ध है जिससे किसानों को भविष्य में होने वाली क्षति की भरपायी हो सकेगी। इस बीमा योजना में राज्य सरकारों को हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार दिया जाना प्रस्तावित है।

मृदा प्रदूषण की दिन-प्रतिदिन बढ़ती विभीषिका की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए 20 दिसंबर 2013 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 68वें सत्र में प्रत्येक वर्ष 05दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय मृदा दिवस मनाये जाने का निर्णय लिया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से मृदा के महत्व को पुनः रेखांकित करते हुए वर्ष 2015 को अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष घोषित किया गया। वर्ष 2015 को अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष घोषित किए जाने पर भारत सरकार ने भविष्य में अपना पूरा ध्यान मृदा की गुणवत्ता को बनाये रखने तथा कृषि नीति को प्रोत्साहन देने पर विशेष रूप से केंद्रित किया है।

भारत में कृषि की उन्नति एवं कृषकों की खुशहाली के लिए गंभीर रूप से चिंतित केंद्र सरकार ने इस संबंध में कई उपाय किए हैं। मृदा की सेहत जाँचने तथा उसके अनुरूप खाद का प्रयोग करने के लिए विशेष प्रावधान किए जा रहे हैं। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना के कार्यान्वयन से मृदा की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायता मिलेगी। मूल्यवर्धित कृषि, बाजार सुधार, प्रौद्योगिकी के प्रयोग और अप्रयुक्त क्षमता वाले क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। छोटे व मझोले किसानों की दशा सुधारने के लिए 'जैविक खेती' और 'ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी' पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। शीघ्र खराब होने वाले बागवानी उत्पादों को संरक्षित करने के लिए भारत सरकार ने 'मूल्य स्थिरीकरणकोष' का गठन किया है। इससे आवश्यक खाद्य उत्पादों की महँगाई पर नियंत्रण करने में सहूलियत मिलेगी। केंद्र सरकार की ओर से देशी पशु प्रजातियों के संरक्षण और विकास के उद्देश्य से 'राष्ट्रीय गोकुल मिशन' प्रारंभ किया गया है। जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभावों से बचने के लिए देशी प्रजातियाँ प्रभावी सिद्ध होंगी। छोटे व सीमांत किसानों की अतिरिक्त आय के लिए 'पशु धन विकास' को प्राथमिकता दी जा रही है। देश के महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी अपने अभिभाषण में कहा है कि भारत सरकार किसानों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। राष्ट्रपति ने 'अन्नदाता सुखी भव' का संदेश देते हुए भारत में होने वाली खुशहाली का श्रेय खाद्य सुरक्षा के प्रहरी देश के अन्नदाताओं को ही दिया है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने भी वर्ष 2015-16 को 'किसान वर्ष' घोषित किया है। राज्य सरकार ने इस संबंध में कई घोषणाएँ भी की हैं। संकर बीजों के उपयोग को प्रोत्साहन देने के लिए 50 करोड़ तथा प्रमाणित बीजों पर अनुदान के लिए 81 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। रासायनिक खादों के भंडारण के लिए 100 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। किसानों

को नि:शुल्क सिंचाई उपलब्ध कराने के लिए 200 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना' के लिए 778 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। 'राष्ट्रीय फसल बीमा कार्यक्रम' के लिए 180 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। किसानों को कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए 150 करोड़ आवंटित किए गए हैं। 'भूमि सेना योजना' के लिए 114 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। 'नि:शुल्क बोरिंग योजना' के लिए 36 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। 'कामधेनु योजना' के लिए 50 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

कृषि मामलों के जानकार सुरेंद्र प्रसाद सिंह के अनुसार- 'जलवायु-विशेष (क्लाइमेटिक जोन) के अनुरूप नीतियाँ बनाने की जगह देशव्यापी नीतियों के कारण किसानों को इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता है। वास्तव में अलग-अलग जलवायु क्षेत्र के अनुरूप अलग-अलग नीतियाँ अपनाना ही सार्थक होगा। इन्हीं नीतिगत खामियों के चलते भू-जल की कमी वाले पंजाब और हरियाणा में गेहूँ, चावल और गन्ना जैसी अधिक पानी की आवश्यकता वाली फसलों की खेती की जाती है। इसप्रकार एक ओर भू-जल के गिरते स्तर तथा दूसरी ओर मिट्टी की उर्वरा शक्ति में गिरावट आने से गेहूँ व चावल की उत्पादकता नीचे खिसकने लगी है, जो खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा है। खेती के साथ बागवानी, डेयरी, पशुधन व मत्स्य पालन जैसी अनुषांगिक गतिविधियों को उचित प्रोत्साहन नहीं दिया जा रहा है। स्वतंत्रता के छ: दशक बाद भी देश की दो-तिहाई खेती वर्षा पर अधारित है। सिंचाई जैसी मूलभूत आवश्यकताएँ लगातार नजरअंदाज हुई हैं जिसका दुष्परिणाम सामने है। मानसून में थोड़ी भी न्यूनता व अनिश्चितता देश की अर्थव्यवस्था को डाँवाडोल कर देती है।'

धान की खेती में विशेष योग्यता रखने वाले बिहार राज्य में नालंदा जिला के प्रगतिशील कृषक सुमंत कहते हैं कि मिट्टी की गुणवत्ता पर पयार्प्त ध्यान देना होगा। जाँच के बाद मिट्टी के मिजाज के माफिक खाद और रसायन का प्रयोग वाजिब होता है। हरी और जैविक खाद के प्रयोग से खेतों की उर्वरा शक्ति भी बनी रहेगी और उत्पादन भी भरपूर मिलेगा। ढेंचा के मार्फत मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर्याप्त मात्रा तक बढ़ाई जा सकती है। उसके साथ दूसरे पोषक तत्व बायोमॉस की उपलब्धता भी खेत में बढ़ जाती है। ढेंचा की फसल को पलटकर मिट्टी में मिला देने के बाद खेत में फार्मयार्ड मेनीनोर के छिड़काव से फसल कारगर होती है। सरकार को चाहिए कि मिट्टी के परीक्षण की सुविधाएँ सुलभ कराने के साथ इस विषय में किसानों को जागरुक भी करे।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिला के ग्राम सैदनपुर स्थित आम बागान के मालिक अमर हबीबुल्लाह के अनुसार उत्कृष्ट कृषि के लिए कृषि वैज्ञानिकों की सलाह ली जाए और गुणवत्ता को अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप बनाया जाए। बागवानी केंद्र के वैज्ञानिकों से सलाह कर बिना कीटनाशकों और रसायनों के स्वादिष्ट आम उगाने का प्रयोग किया जा रहा है। भारत से आम के निर्यात में भारी कमी आयी है। कीटनाशकों के कारण प्रदूषित मिट्टी में घुल चुके रसायनों से आम का स्वाद बिगड़ रहा है। यदि इसे ठीक कर लिया जाए तो निर्यात से आय की अच्छी संभावना है।

अंत में, यदि मृदा-प्रदूषण को नहीं रोका गया, उसकी रोकथाम नहीं की गई, अधिक उपज लेने के लालच में किसान अनियंत्रित उर्वरकों का प्रयोग करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब रेगिस्तान की धूल सबको अपने आगोश में समाहित कर लेगी। पर्यावरण का शुद्धीकरण करने में वनों व प्रकृति की महत्वपूर्ण भूमिका है। अत: मिट्टी की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए वनों का संरक्षण और उनका कटान रोकना अति आवश्यक है। उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग निर्मल जल को क्षारीय बना देगा। मानव को भोजन मिलना तो दूर पानी भी नहीं मिलेगा। मृदा प्रदूषण को रोकने का दायित्व केवल सरकार का नहीं है। जब तक इस भूमंडल पर रहने वाला हर व्यक्ति मृदा के महत्व को नहीं समझेगा, अपने दायित्व का निर्वाह नहीं करेगा, सचेत और सजग नहीं होगा तब तक मृदा प्रदूषण को नहीं रोका जा सकता है और इसकी विभीषिका से नहीं बचा जा सकता है। अत: किसी के लिए नहीं अपने सुरक्षित भविष्य के लिए मृदा प्रदूषण की बढ़ती विभीषिका को रोकिए! राकिए!! रोकिए!!! ✠✠

सलाहकार (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
मोहल्ला-हाता करम खाँ
फर्रुखाबाद-209625 (उ.प्र.)
संपर्क: 09450205346

◆ लेख ◆

सरल-सहज राजभाषा

प्रभाकर मिश्र

संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो जाने के बाद केंद्र सरकार ने हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लगातार प्रयास किए हैं। इसके लिए उसने नियम-कानून बनाए और अपने मंत्रालयों/विभागों, अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों आदि के कामकाज में संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी के प्रयोग की व्यवस्था की। यही नहीं राजभाषा नीति के क्रियान्वयन पर निगरानी रखने के लिए बुनियादी ढाँचा भी तैयार किया गया जो अभी तक बना हुआ है। इसके अंतर्गत संविधान के उपबंधों, 1963 के 'राजभाषा अधिनियम', 1976 के 'राजभाषा नियम' और गृह मंत्रालय द्वारा हर साल जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रमों के अनुपालन और इम्लीमेंटेशन पर नज़र रखने, आवश्यकता होने पर अनुवाद करने और कर्मचारियों को हिंदी में काम करने की ट्रेनिंग देने के लिए हर स्तर पर राजभाषा विभागों, अनुभागों, इकाइयों, प्रकोष्ठों और समितियों का नेटवर्क खड़ा किया गया।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अनुसार कुछ कागजात को द्विभाषी रूप में तैयार और जारी किया जाना आवश्यक है, इसलिए अंग्रेजी के कोड-मैनुअलों, स्टेशनरी, फार्मों, नियम व शर्तों, सूचियों-अनुसूचियों आदि को अंग्रेजी से हिंदी में बदलने के लिए अनुवाद का सहारा लिया गया। 1950 में ही भारत सरकार ने 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' का गठन किया जिसका काम अंग्रेजी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्याय ढूँढ़ना था। इस आयोग ने अनेक शब्दावलियाँ बनाई जिनमें अधिकांश शब्द संस्कृत की धातुओं, उपसर्गों और प्रत्ययों का उपयोग कर गढ़े गए। इससे शब्दकोशों में संघनित्र, परिकलित्र, संगणक, प्रसंस्करण जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्द बहुतायत में शामिल हो गए।

अनुवादकों ने भी अति शुद्धतावादी रवैया अपनाते हुए अनुवाद करते समय अंग्रेजी के प्रत्येक शब्द के लिए उसका हिंदी पर्याय देने की नीति अपनाई और शब्दकोशों का सहारा लेकर ऐसा किया भी। इस क्रम में अंग्रेजी के साथ-साथ अरबी-फारसी के शब्दों को भी खोज-खोज के चलन से बाहर कर दिया गया। कहना न होगा कि सरल शब्दों जैसे कानून, दर्ज, कर्ज और ख़रीद जैसे आम बोलचाल के शब्दों की जगह विधि, प्रविष्टि, ऋण और क्रय का प्रयोग किया गया। इस तरह जिस भाषा को अपनाया, उसमें संस्कृतनिष्ठ और क्लिष्ट शब्दों की बहुतायत थी। आसानी से समझ में न आने के कारण यह भाषा कभी भी आम जनता के लिए आसान नहीं हो पाई। इसतरह सरकारी हिंदी जन-हिंदी नहीं बन सकी।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में अनुवाद कार्य की अधिकता रहती है कार्य को तय समय में पूरा करने की चिंता में कई बार क्वालिटी से समझौता करना पड़ता है। अच्छे अनुवादकों की भी कमी है। कुछ विभागों में अनुवादकों के पद विभागीय परीक्षाओं के आधार पर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से भी भरे जाते रहे हैं ऐसे अनुवादकों से उपयोगी, शुद्ध और स्पष्ट अनुवाद की अपेक्षा नहीं की जा सकती। आजकल अनुवाद कार्य प्राइवेट अनुवाद एजेंसियों से भी कराया जाता है। ज्यादातर एजेंसियाँ घटिया और फ़िजूल अनुवाद करती हैं। अशुद्ध अनुवाद, जटिल और अस्पष्ट शब्दों के प्रयोग और समझ में न आने वाले वाक्य सरकारी हिंदी को न तो समृद्ध कर रहे हैं, न ही लोकप्रिय बना रहे हैं, बल्कि इसकी जड़ों पर प्रहार कर रहे हैं। इससे तो लोकभाषा हिंदी और सरकारी हिंदी के बीच खाई निरंतर बढ़ रही है।

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग एक किस्म की मजबूरी है और जो काम मजबूरी में करना पड़े, वह हमेशा अनमने ढंग से ही होता है। जाहिर है ऐसी स्थिति में सरकारी कामकाज की जो शब्दावली बन गई है, वह कुछ ज्यादा ही विशिष्ट और राजसी है। इसलिए वह आम बोलचाल की भाषा से दूर अलंकृत और प्रायः असहज लगती है। इससे अंग्रेजी पृष्ठभूमि से तैयार हो रहे युवा अधिकारी हिंदी में मामूली नोट या टिप्पणी लिखने से भी कतराते हैं। इस असहज हिंदी की ओर इशारा करते हुए कविवर हरिवंशराय बच्चन जी ने लिखा है- 'सरकारी संरक्षण में एक नयी हिंदी (सरकारी भाषा) पनप रही है। इस भाषा में बड़े पैमाने पर

सरकारी कामकाज हो रहे हैं। प्रतिवर्ष इसे समृद्ध बनाने में करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं।..... इस भाषा की खूबी है कि यह चीनी (दुनिया की सबसे कठिन भाषा) से भी कठिन है और इस भाषा का ईजाद करने वाले खुद इसे नहीं समझते।' हिंदी भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी भी स्वीकार करते हैं कि उन्हें मौजूदा सरकारी हिंदी समझ में नहीं आती। वे बोलचाल की हिंदी में काम करना पसंद करेंगे।

जो भाषा सदियों से हमारी बोलचाल का आधार रही है, उसमें पारिभाषिक शब्दों ने घुसकर उसे जटिल बना दिया है। भाषाई शुद्धतावादी यह नहीं समझते कि भाषा का क्लिष्ट होना उसकी लोकप्रियता और स्थायित्व की गारंटी नहीं है। भाषा की जीवंतता की पहली और महत्वपूर्ण शर्त है कि वह लोक से न कटे। भाषा बौद्धिकों-विद्वानों की गिरफ्त में आकर मरने लगती है।

हिंदी को आम-आदमी के कामकाज की भाषा के रूप में विकसित किया जा सकता है। इसके लिए अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को लेना ज़रूरी है। वैसे भी भूमंडलीकरण के इस युग में भाषाओं के बीच शब्दों के लेन-देन में तेजी आई है। भाषा की समृद्धि का यह राज है कि वह विकास की प्रक्रिया में दूसरी भाषाओं के शब्दों को पचा लेती है। किसी भी भाषा के जीवित रहने और फलने-फूलने के लिए विस्तार और बदलाव ज़रूरी है।

अंग्रेजी से हिंदी में साइकिल, बस, टिकट, कैमरा, फिल्म, मीडिया, टेंशन, पेंशन, राशन-कार्ड, एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी., एन.जी.ओ., बी.पी.एल., रिजर्वेशन, स्ट्रोक, हर्ट-अटैक, ब्लड-प्रेशर, डायबिटीज, मोबाइल, सिम, चिप, चिप्स, रिचार्ज, टॉपअप, माउस, क्लिक, की-बोर्ड सरीखे अनेकों शब्द रोज आ रहे हैं और हिंदी उन्हें आत्मसात् करती जा रही है। उसने कंप्यूटर शब्द स्वीकार कर लिया, 'संगणक' को परे हटा दिया। इसी प्रकार हस्पताल/अस्पताल जैसे शब्दों ने चिकित्सालय को पीछे छोड़ दिया है। जनता के लिए भावों-विचारों का आदान-प्रदान अधिक महत्वपूर्ण है। हम हिंदीवालों को भूलना नहीं चाहिए कि अंग्रेजी में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के बहुत सारे शब्द इस्तेमाल हो रहे हैं।

केंद्र सरकार भी राजभाषा की इस समस्या को जानती है इसीलिए हिंदी प्रयोग की मानिटरिंग करने वाले गृह-मंत्रालय द्वारा समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी किए जाते रहे हैं। कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है-

1) कार्यालय ज्ञापन संख्या II/13034/23/75-रा.भा. (ग) दिनांक 17.3.1976

इस कार्यालय ज्ञापन में यह स्पष्ट लिखा गया था कि सरकारी हिंदी कोई अलग किस्म की हिंदी नहीं है। यह काफी नहीं है कि लिखने वाला अपनी बात खुद समझ सके कि उसने क्या लिखा है। जरूरी तो यह है कि पढ़ने वाले को समझ में आ जाए कि लिखने वाला कहना क्या चाहता है। इस ज्ञापन में यह सलाह भी दी गई थी कि दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में हिचक नहीं होनी चाहिए। यदि हिंदी में लिखा तकनीकी शब्द कठिन लगे तो 'ब्रैकेट' में अंग्रेजी पर्याय लिखा देना चाहिए। आधुनिक यंत्रों, तरह-तरह के पुर्जों और नए जमाने की चीजों के जो अंग्रेजी नाम चलते हैं, उनका कठिन अनुवाद करने की बजाय उन्हें फिलहाल मूल रूप में ही देवनागरी लिपि में लिखना सभी के हित में होगा।

2) कार्यालय ज्ञापन संख्या 13017/1/88 (ग) दिनांक 27 अप्रैल, 1988

इस कार्यालय ज्ञापन में लिखा गया था कि प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में आयोजित केंद्रीय हिंदी समिति की 02.12.1987 की बैठक में भी यह विचार व्यक्त किया गया था हिंदी में किए गए अनुवाद सरल और स्वाभाविक भाषा में हों। अनुवाद की भाषा ऐसी हो जो आम व्यक्ति की समझ में आसानी से आ जाए।

3) शासकीय पत्र संख्या 1/14013/04/99 रा.भा. (नीति) दिनांक 30.6.1999

इस शासकीय पत्र में यह कहा गया था कि अनुवाद की भाषा-शैली सहज, सरल, स्वाभाविक (नेचुरल), पठनीय और बोधगम्य (आसानी से समझ आने वाली) होनी चाहिए। इस पत्र के साथ सरल अनुवाद के उदाहरण भी दिए गए थे।

4) कार्यालय ज्ञापन सं. 1/14011/04/2010-रा.भा. (नीति-1) दिनांक 19.7.2010

इस कार्यालय ज्ञापन में कहा गया था कि अनुवाद में न केवल सरल और सुबोध शब्द इस्तेमाल किए जाएँ बल्कि जहाँ तक हो सके वाक्य छोटे-छोटे बनाएँ और हर शब्द का अनुवाद करने की बजाय वाक्य या उसके अंश के भाव को हिंदी भाषा की शैली में लिखें। अंग्रेजी

या दूसरी भाषाओं के आम इस्तेमाल में आने वाले शब्दों के कठिन हिंदी शब्द बनाने की बजाय उन्हीं शब्दों को देवनागरी लिपि में लिख देना चाहिए।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सचिव द्वारा जारी 26 सितंबर, 2011 के परिपत्र में सरकारी कार्यालयों में हिंदी के सरलीकरण के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

1. विदेशी शब्द जो हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे- टिकट, सिगनल, लिफ्ट, स्टेशन, रेल, पेंशन, पुलिस, ब्यूरो, रेल, मेट्रो, एयरपोर्ट, स्कूल, बटन, फीस, बिल, कमेटी, अपील, ऑफिस, कंपनी, बोर्ड, गजट तथा अरबी, फारसी, तुर्की के शब्द जैसे- अदालत, कानून, मुकदमा, कागज, दफ्तर, जुर्म, जमानत, तनख्वाह, तबादला, फौज, बंदूक, मोहर को उसी रूप में अपनाने से भाषा में प्रवाह बना रहेगा।

2. बहुचर्चित अंग्रेजी शब्दों का देवनागरी में लिप्यांतरण करना कभी-कभी ज्यादा अच्छा रहता है बजाय इसके कि किसी कठिन और बोझिल शब्द को गढ़कर लिखा जाए। 'प्रत्याभूति' के स्थान पर 'गारंटी', परिदर्शक के स्थान पर 'गाइड', अनुच्छेद के स्थान पर 'पैरा', यंत्र के स्थान पर 'मशीन,' मध्याह्न भोजन के स्थान पर 'लंच', व्यंजन सूची की जगह 'मैन्यू,' भंडार की जगह 'स्टोर', अभिलेख के स्थान पर 'रिकार्ड' आदि जैसे प्रचलित शब्दों को हिंदी में अपनाया जा सकता है। इसीप्रकार संगणक के स्थान पर 'कंप्यूटर', मिसिल के स्थान पर 'फाइल', कुंजीपटल के स्थान पर 'की-बोर्ड', शब्दों का इस्तेमाल अधिक वांछनीय होगा।

3. यदि कोई तकनीकी अथवा गैर-तकनीकी ऐसा शब्द है जिसका आपको हिंदी पर्याय नहीं आता तो उसे देवनागरी में जैसे-का-तैसा लिख सकते है जैसे इंटरनेट, वेबसाइट, पेनड्राइव, ब्लॉग आदि।

इस पत्र की प्रति राजभाषा विभाग के तीनों अधीनस्थ कार्यालयों/संस्थानों नामत: सेंट्रल हिंदी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट यथा- सीएचटीआई (केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान), सेंटर ट्रांसलेशन ब्यूरो यथा- सीटीबी (केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो) तथा रीजनल इम्लीमेंटेशन आफिसेज यथा- आरआईओज (क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों) एवं सेंटर कमीशन फॉर साइंटिफिक एंड टेक्निकल टर्मिनॉलोजिज यथा- सीएसटीटी (केंद्रीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग) जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन है (और अनुवाद के क्षेत्र में सर्वोच्च न्यायपालिका द्वारा घोषित शीर्षतम संस्था है), को भेजी गई और उन्हें यह निर्देश दिया गया कि इस पत्र में की गई अपेक्षा अनुसार क्रमश: हिंदी भाषा प्रशिक्षण, अनुवाद प्रशिक्षण, कार्यालयों में इस्तेमाल की भाषा और हिंदी अनुवाद के लिए तैयार/अपडेट किए जा रहे शब्दकोशों में तदनुसार परिवर्तन लाएँ।

इसमें सभी मंत्रालयों/विभागों संगठनों से यह अनुरोध किया गया कि यूजर (प्रयोगकर्ता) की हैसियत से, वे जिन शब्दों का हिंदी भाषा द्वारा अपनाया जाना उचित समझते हैं, उन्हें लगातार निदेशक, सीएसटीटी, निदेशक, सीएचटीआई, निदेशक, सीटीबी, सचिव, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), सचिव, स्कूली शिक्षा तथा साक्षरता, तथा सचिव, उच्च शिक्षा (मानव संसाधन विकास मंत्रालय), को उपलब्ध कराते रहें ताकि यह प्रक्रिया निरंतर और स्थायी रूप से चलती रहे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकार की मंशा सरल-सहज राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने की है। अब हम सभी का कर्तव्य है कि अपने काम-काज में आम बोल-चाल की भाषा का प्रयोग करें। इससे हम जनता की सेवा बेहतर ढंग से कर सकेंगे। ✠✠

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर
बरेली-243122
संपर्क: 09411048379

विश्व में वह कौन सीमाहीन है
हो न जिसका स्रोत सीमा में मिला
क्यों रहोगे क्षुद्र प्राणों में नहीं
क्या तुम्हीं सर्वेश एक महान हो।

महादेवी वर्मा

◆ साहित्य ◆

हिंदी के पहले कवि अमीर खुसरो

दुर्गेश चंद्र ओझा

सूफी संत, कवि, विचारक, संगीतज्ञ, इतिहासकारक, भाषाविद्, छंदशास्त्र के ज्ञाता, अपने समय में दिल्ली के अनेक प्रसिद्ध बादशाहों के हेमराज, दरबारी होने के साथ ही हजरत निजामुद्दीन औलिया के खास के चेले। अमीर खुसरो के व्यक्तित्व और कृतित्व से जुड़ी विशेषताओं की सूची बहुत ही लंबी है। विश्व इतिहास में ऐसी अप्रतिम और बहुरंगी प्रतिभा शायद ही मिले।

प्रख्यात अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन था, किंतु वह अपने उपनाम 'खुसरो' से मशहूर हुए। उनको अनेक बादशाहों ने अलग-अलग उपाधियों से अलंकृत किया था। मसलन, हीरामन, अमीर, तूती-ए-हिंद, मल्लिक्कुशोअरा आदि। उनके पीर हजरत निजामुद्दीन औलिया तो उन्हें स्नेहवश 'तुर्क' ही कहा करते थे। जहाँ तक खुद खुसरो की बात है, उन्होंने अपने बचपन में 'सुल्तानी' नाम से अशआर कहे थे।

मोमिनाबाद अर्थात उत्तर प्रदेश के एटा जिला के एक कस्बे पटियाली में सन 1253 में जन्में खुसरो अपने पिता सरदार सैफुद्दीन महमूद के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। सैफुद्दीन तुर्किस्तान के लचीनी कस्बे के सरदार थे, किंतु चंगेज खाँ के जुल्मों-सितम से तंग आकर मोमिनाबाद (उ.प्र.) में आ बसे। इसके बाद सैफुद्दीन बहुत जल्द अपनी योग्यता और सूझ-बूझ से 'गुलाम वंश' के इल्तुतमिश के खास सलाहकार बन गए। कुछ ही दिनों में उनका विवाह नवाब इमादुल मुल्क की बेटी के साथ हुआ जिससे उनके तीन पुत्र हुए- एजाजुद्दीन अलीशाह, एहसानुद्दीन अहमद और अबुल हसन यमीनुद्दीन। खुसरो जब सात-आठ साल के रहे होंगे, तभी उनके वालिद सैफुद्दीन महमूद की निर्मम हत्या कर दी गई। फलतः तीनों बच्चों की परवरिश और जिम्मेदारी इनके नाना इमादुल मुल्क के ऊपर आ गई।

इमादुल मुल्क बचपन में ही यमीनुद्दीन को हजरत निजामुद्दीन औलिया की खानकाह में लेकर गए। दरवाजे तक पहुँचते ही अपने नाती खुसरो से उन्होंने कहा औलिया की तारीफ करते हुए- 'तुम इनके मुरीद बनोगे और यहीं पर रहते हुए तालीम हासिल करोगे।' खुसरो ने नाना से पूछा- 'मुरीद क्या होता है?' तब उन्होंने समझाया कि 'मुरीद कहते हैं जान हासिल करने का इरादा रखने वाले को।' यह सुनकर खुसरो वहीं दरवाजे के पास बैठ गए और मन ही मन औलिया से पूछा- 'मैं अंदर उनके पास आऊँ या यहीं से वापस लौट जाऊँ।'

तभी भीतर से ख्वाजा ने कहला भेजा- 'सच की खोज का इरादा लेकर हाजिर हुए हो तो आ जाओ, वरना वापस लौट जाओ।' यह सुनते ही संदेशवाहक के चरण छूकर खुसरो दौड़ते हुए हजरत निजामुद्दीन औलिया के पास पहुँचे जिन्होंने देखते ही उन्हें अपने गले से लगा लिया। खुसरो ने उन्हें उसी दिन से अपना आध्यात्मिक गुरु अर्थात पीर बना लिया और सूफीवाद के 'चिश्तिया' सिलसिले को अपना लिया। ग़रीब नवाज़ ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती, ख्वाजा खुदबुद्दीन बख़्तियार काकी, बाबा फ़रीद और हज़रत निजामुद्दीन औलिया जैसे महान संतों ने भारत में जिस सूफी मत की स्थापना की; उसको अमीर खुसरो ने बहुत ही सरल और सहज तरीके से जन-जन तक पहुँचा दिया।

काहे को ब्याही बिदेस रे लखि बाबुल मोरे
छाप तिलक सब छीनी रे मो से नयना मिलाय के
आज रंग है हे माँ रंग है हे री, मेरे महबूब के घर रंग है री
तेरी सूरत के बलिहारी निजाम
बहुत कठिन है डगर पनघट की

जैसी रचनाएँ इसकी अच्छी मिसाल हैं। बताते हैं कि अमीर खुसरो ने तकरीबन एक सौ किताबें लिखीं। इनकी ज्यादातर रचनाएँ अरबी, फारसी, तुर्की, हिंदी और उर्दू में हैं। इनमें से फारसी में लिखे पाँच दीवान, दस मनसबियाँ बेहद मकबूल हैं। वह यद्यपि गद्य, पद्य, ग़ज़ल, मसनवी, गीत, दोहे, मुक्तक, कसीदा, मरसिया, मुकरनी, ढकोसला, दो सुखना, कव्वाली जैसी साहसिक परंपराओं को उन्होंने ही ईजाद किया। दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली भाषा को 'हिंदवी' नाम सबसे पहले खुसरो ने ही दिया था। यही शब्द बाद में 'हिंदी' बना और तुर्की कवि अमीर खुसरो ही हिंदी के पहले कवि बने।

अमीर खुसरो ने जीवन काल में गुलाम वंश, खिलजी वंश से लेकर तुगलक वंश तक के लगभग दर्जन भर सुल्तानों के शासन और सत्ता-संघर्ष के खूनी

खेल को करीब से देखा था, किंतु स्वयं वह अत्यंत ही निर्लिप्त भाव से साधना और भक्तिमयी काव्य में लीन रहे। अपने जीवन-काल में उन्हें सभी सुलतानों से आदर-सम्मान और प्रेम भाव भी मिला। अलाउद्दीन खिलजी से लेकर गयासुद्दीन तुगलक तक वह दिल्ली के कई सुलतानों के दरबार में बतौर संगीतकार भी रहे। सच तो यह है कि यदि खुसरो न होते तो संगीत का सुर वर्तमान में कुछ और होता।

कुछ अलग किस्म के साज बजा करते और भाषा भी कुछ और ही तरह की होती। खुसरो ने भजन के वजन पर उसके मुकाबले कव्वाली को गढ़ा। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की खयाल गायकी के खोज अथवा अन्वेषण का श्रेय भी उन्हें ही दिया जाता है। उन्होंने 'ध्रुपद गायन' में फारसी लय और ताल को जोड़कर खयाल पैदा किया था। इनकी अनेक रचनाएँ हिंदुस्तानी और क्लासिकल बंदिश और ग़ज़ल में इस्तेमाल की जाती है। एक जनश्रुति के अनुसार उन्होंने पखावज (मृदंग) को दो हिस्सों में बाँटकर 'तबला' नामक नये साज का ईजाद किया। इसीलिए कुछ लोग उन्हें आधुनिक उत्तर भारतीय संगीत का जनक भी कहते हैं।

अमीर खुसरो हजरत निजामुद्दीन औलिया के कितने अजीज रहे, इसका अंदाजा इसी बात से लग जाता है कि रात की इबादत के वक्त केवल उन्हीं को औलिया के साथ रुकने की इजाजत थी। वह प्रायः कहा करते थे- 'मैं सबसे ऊब सकता हूँ, किंतु खुसरो से नहीं।' इस तुर्के दिल में आग सुलग रही है। कयामत के दिन इससे मेरा नाम-ए-कमाल यानी कर्म लेखा ही पवित्र हो जाएगा। औलिया बहुत ही गर्व के साथ कहते थे- 'जब परमात्मा पूछेगा कि तुम मेरे लिए क्या लेकर आये हो तो मैं खुसरो को पेश कर दूँगा।'

खुसरो के जीवन से जुड़ा एक मशहूर जुमला है- 'दिल्ली अभी दूर है।' यह बात उन दिनों की है जब अमीर खुसरो गयासुद्दीन तुगलक के दिल्ली दरबार में बतौर दरबारी कार्यरत रहे। तुगलक खुसरो को तो पसंद करता था किंतु निजामुद्दीन औलिया के नाम से चिढ़ा करता। एक बार किसी सफर से दिल्ली लौटते समय बादशाह ने खुसरो के मार्फत औलिया तक संदेश भिजवाया कि उसके दिल्ली पहुँचने के पहले ही वह दिल्ली छोड़ दे। खुसरो ने बेहद दुखी और संजीदा मनःस्थिति में पीर से पूछा- 'अब क्या होगा?' सुनकर निजामुद्दीन ने कहा- 'घबराओ मत खुसरो। हनूज दिल्ली दूर अस्त यानी दिल्ली अभी दूर है।' सचमुच में दिल्ली बादशाह गयासुद्दीन तुगलक से बहुत दूर हो गयी। वह जिस खेमें में ठहरा था, वह भयंकर आँधी-तूफान में टूटकर ढह गया और उसकी राह में ही मौत हो गयी। तब से ही कहावत चल पड़ी- 'दिल्ली अभी दूर है।'

हजरत निजामुद्दीन औलिया कहा करते थे- 'खुसरो मेरे बाद ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेगा। उसकी मौत के बाद उसे मेरे करीब ही दफ़न करना क्योंकि वह मेरा साहबे इसरार है और उसके बिना तो मैं जन्नत में भी कदम नहीं रख सकता।'

अमीर खुसरो की मज़ार दिल्ली में है। सन 1325 में जब खुसरो दिल्ली से बाहर गए हुए थे तब हजरत निजामुद्दीन का इंतकाल हो गया। खुसरो जब वापस दिल्ली आये तब औलिया के निधन की बात सुनकर बेहाल हो गए। हजरत की कब्र पर जाकर उन्होंने कहा-

'गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केश
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।'

इसतरह उन्होंने अपने शुभचिंतकों को भी बता दिया कि अब वह भी ज्यादा दिनों के मेहमान नहीं हैं। सचमुच कुछ ही महीनों के बाद खुसरो की इहलीला भी समाप्त हो गयी। उनको हजरत औलिया की मजार के पास तो नहीं, किंतु उनके मकबरे के पास ही दफनाया गया। उनका शुमार दुनिया के महान सूफी संतों में किया जाता है।

अमीर खुसरो की मज़ार पर हर मज़हब और जाति के लोग सिर झुकाते हैं। उनके निधन के सदियों बाद भी उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करने वालों का ताँता-सा लगा रहता है। हर साल देश-विदेश से आने वाले हजारों तीर्थयात्री अजमेर ग़रीब नवाज़ की दरगाह पर चादर चढ़ाने से पहले दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन ओलिया और उसके प्रिय शिष्य अमीर खुसरो की मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाकर ही ख्वाज़ा से दुआएँ मांगते हैं। मन की मुराद पूरी करने के प्रतीक स्वरूप संगमरमर की जालियों में बेहद अकीदत के साथ धागा बाँधते, फूल चढ़ाते हैं। धूप अगरबत्तियाँ जलाकर मन्नतें मांगते हैं। यह सब गंगा-जमुनी तहज़ीव की खास रवायतें हैं। ✠✠

उप संपादक 'आज'
बैंक रोड, गोरखपुर
संपर्क: 09415456003

रामवृक्ष बेनीपुरी: संघर्ष में सौंदर्य की तलाश

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

साहित्यसेवी रामवृक्ष बेनीपुरी

का जीवन मुख्य रूप से भारतीय नवजागरण काल के व्यक्तित्वों की याद दिलाता है। वैसा ही जीवन-संघर्ष वैसा ही बहुमुखी कर्मक्षेत्र भी। उनके लिए साहित्य-सृजन और राजनीतिक सक्रियता में अथवा पत्रकारिता और समाज सुधार में कोई अंतर्विरोध नहीं था।

स्वाधीनता आंदोलन के दौर में ऐसे अनेक प्रमुख व्यक्तित्व हुए जिनका प्रेरणामय और उद्देश्यपूर्ण जीवन किसी एक क्षेत्र विशेष में बँधकर नहीं रहा। रामवृक्ष बेनीपुरी भी कवि, कथाकार, नाटककार, पत्रकार, शब्द-चित्रकार, जीवनी-लेखक और अनुवादक रहे। साथ ही एक स्वतंत्रता सेनानी, कृषक, श्रमिक नेता और समाजवादी विचारक भी थे। वह आजादी के पहले जितनी बार जेल गए, उतनी बार कोई दूसरा भारतीय लेखक नहीं गया। इसीतरह आजादी मिलने के बाद वह जितनी बार विदेश यात्राओं पर गए, उतना तो उस समय तक राहुल सांकृत्यायन भी नहीं गए थे।

रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुभव-संसार को उनके संघर्ष, अध्ययन और यात्राओं ने पर्याप्त समृद्ध किया। विशुद्ध साहित्यकार अथवा विशुद्ध राजनीतिज्ञ की भाववादी सोच और अवधारणा का वह एक प्रतिवाद थे। संवेदनशीलता उनकी राजनीति को मानवीय बनाती थी और उनका अनुभव उनके साहित्य को सजीव बनाता था। वह अमर विषयों पर अथवा विश्व-साहित्य में जगह बनाने के लिए लिखने के बजाय सामान्य-जन के लिए लिखते थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में- कहानी, उपन्यास सहित अपने शब्द-चित्रों में जो माटी की मूरतें गढ़ी, वे देश के जीते-जागते जनसाधारण के शौर्य और संघर्ष को, उनकी शक्ति और साधना को बहुत ही संजीदगी और सहानुभूति के साथ प्रस्तुत करतीं हैं।

आजादी के बाद 'गेहूँ और गुलाब' के शब्द-चित्रों के जरिये रामवृक्ष बेनीपुरी ने ऐसा पुस्तक आंदोलन चलाने का प्रयास किया जो संघर्ष के बीच भी हमें सौंदर्य देखने की दृष्टि दे। बैठे-बिठाये की सौंदर्य-साधना से अलग संघर्ष में सौंदर्य देखने की कोशिश उन माटी की मूरतों से गहरे लगाव का नतीजा था, जिन्हें राजनीति प्राय: बिसराती जा रही थी और साहित्य भी जिनसे मुँह मोड़कर निजी कुंठा और घुटन के संत्रास में डूबता जा रहा था। स्वाधीनता के संघर्षपूर्ण मूल्यों के जरिये वह एक नये किस्म के जनवादी सौंदर्य-बोध की आधारशिला रखने का प्रयत्न कर रहे थे। किंतु सत्ता और उसके तंत्र की मदद से साहित्य का विकास किसी अन्य ही दिशा में हो रहा था।

ऐसी हवा के साथ रामवृक्ष बेनीपुरी कतई नहीं बहे। उनकी साहित्यिक चेतना ऐसी 'उदार' दृष्टि से इस कदर बेमेल है कि छठे-सातवें दशक में तो वह विस्मृति के खाने में डाल दिए गए। वर्ष 1999 तो रामवृक्ष बेनीपुरी और शिवपूजन सहाय का जन्मशती वर्ष रहा। इस वर्ष उनकी 116वीं जयंती है जो 23 दिसंबर 2015 को पड़ेगी। वर्ष 1955 में 'नई धारा' के संपादकीय में उन्होंने लिखा था- 'साहित्य को यह भी सोचना पड़ेगा कि सत्ता से अलग भी समाज का एक बहुत बड़ा अंग है। उसकी सेवा करना क्या उसका दायित्व नहीं? यदि सत्ता और उस बड़े अंग की सेवा में विरोधाभास हो जाए तो वह किसकी सेवा को प्रमुखता दे?' उत्तर उनके प्रश्न में ही निहित है।

आज जब सत्ता-तंत्र में उपस्थित रहकर उसकी ताकत और ऊर्जा का इस्तेमाल करने वाले लेखक समाज को साहित्य में बहिष्कृत करते हैं, तब बेनीपुरी का प्रश्न उग्रपंथी राजनीति का शुरू से अंतर्विरोध था। अपनी शुरुआती कहानी 'चिता के फूल' में चौदह वर्षीय बालक रामू के माध्यम से वह स्वराज्य के आंदोलन की पड़ताल करते हुए दिखाते हैं कि ब्रिटिश दमनचक्र के कारण कांग्रेस के तमाम कार्यकर्ताओं में फौजी प्रवृत्ति बढ़ रही है।

समाजवादियों की फूट और अवसरवाद से क्षुब्ध होकर उन्होंने लाल रूस और लाल चीन में समाजवादियों की क्रांति का प्रारंभिक इतिहास लिखा। कार्ल मार्क्स और रोजा लक्सेम्बर्ग जैसे क्रांतिकारियों का जीवन-वृत्त लिखा। देश में समाजवादी समाज के निर्माण का स्वप्न पाले रहे। महात्मा गाँधी के बाद सर्वाधिक श्रद्धा उनकी

जयप्रकाश नारायण के प्रति रही। अंतिम दिनों में उन्हें पक्षाघात हो गया था जिससे वह ऊबर नहीं सके और 07 दिसंबर 1968 को उन्होंने यह असार संसार छोड़ दिया। उन्होंने कहा था कि 'साम्यवाद राष्ट्रीय नहीं हो सकता; राष्ट्रीय साम्यवाद तो नाजीवाद है।'

साहित्यकार जगदीश चंद्र माथुर के नाम अपने 08मार्च1959 के पत्र में उन्होंने लिखा है- 'मेरे उमड़ते उल्लास और बेमिसाल मस्ती पर तो बहुतों की दृष्टि गयी किंतु आहत भावनाओं पर कम लोगों ने ही ध्यान दिया। जो लिखा गया, उससे तृप्ति नहीं हुई और जो लिखना चाहता हूँ, लिख न सका।' एक जुझारु व्यक्तित्व के कारुणिक प्रसंग भी ऊर्जा देते हैं। उन्होंने 'बालक', 'युवक', 'जनता', 'हिमालय', 'नई धारा', 'संघर्ष' जैसी पत्र-पत्रिकाओं से हिंदी जगत को समृद्ध किया। 'माटी की मूरतें', 'नयी नारी', 'लाल तारा', 'गेहूँ और गुलाब', 'मुझे याद है', 'पैरों में पंख बाँधकर' जैसी गद्य कृतियाँ दी तो 'तथागत', 'अंबपाली', 'विजेता' जैसे नाटक दिए। वह हर कीमत पर फासिज्म का विरोध करते रहे। वह एक दूरदर्शी साहित्यसेवी थे जिसका उद्देश्य भारत के लोगों के जीवन को बदलना रहा। ✠✠

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'
बैंक रोड, गोरखपुर-273001(उ.प्र.)
संपर्क: 9451202409

लेखकों/ रचनाकारों से निवेदन

'रेल रश्मि' में प्रकाशनार्थ रेल से संबंधित तकनीकी, गैर-तकनीकी, लेख, कहानी, कविता, ग़ज़ल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कृपया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर पाठ अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पिन कोड संख्या व संपर्क नंबर अवश्य उद्धृत करें।

कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। साथ ही रचना दो से तीन फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।

रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक
रेल रश्मि
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर-273012
ईमेल: seniorol9@gmail.com

काकोरी कांड के अमर शहीदः पं.रामप्रसाद बिस्मिल

सुनील कुमार

इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे।
अपनी ही जमीं होगी, और अपना आसमां होगा।

इन शब्दों के उद्‌गार हृदय में सजाने क्रांतिवीर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल को तो उनके जीते जी ये अरमान पूरे नहीं हो पाये, लेकिन उनके और उनके जैसे हजारों बलिदानियों की कुर्बानी यों ही बेकार नहीं गयी। हमारे भारत वर्ष को आजादी अवश्य मिली। अंग्रेजों को मजबूरन भारत छोड़ना पड़ा। आज हम सब भारतवासी अपनी इस आजादी को पूरे जश्न के रूप में मनाते हैं। इस आजादी के जंग में न जाने कितने अमर शहीदों ने अपने लहू का एक-एक कतरा भारत माता को अर्पित किए।

11 जून 1897 को शाहजहाँपुर में जन्में पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की उम्र मात्र 30 वर्ष की रही होगी जब काकोरी षड्‌यंत्र केस में उन्हें फँसा कर 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर की जिला जेल में फाँसी दे दी गयी। एक देशभक्त वीर को ब्रिटिश हुकूमत द्वारा दिया गया सर्वोच्च पुरस्कार था। उस अमर वीर बलिदानी के रक्त से सींचकर गोरखपुर की धरती भी पवित्र हो गयी और इतिहास के पन्नों पर सदा-सदा के लिए अंकित हो गयी। इस वीर नौजवान के पार्थिव शरीर को पवित्र राप्ती नदी के पूर्वी तट (राजघाट) ने पंच-तत्वों में विलीन होने में अपना भरपूर योगदान दिया है। इस काकोरी कांड में क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त 1925 को एक पैसेंजर ट्रेन से सरकारी खजाना को लूटा था। अंग्रजों ने इसे षड्‌यंत्र का रूप देकर पं. रामप्रसाद बिस्मिल को सजाए-मौत दे दी।

जब यह खबर अखबारों में 10 अगस्त 1925 को छपा तो पूरा देश सन्न रह गया। चारों तरफ सन्नाटा-सा छा गया। अखबारों ने छापा कि- '9 अगस्त की शाम को अज्ञात लुटेरों ने काकोरी और आलमबाग रेलवे स्टेशन के बीच 8 डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को टेलीफोन के आठवें खंभे के पास रोककर रेल विभाग की तिजोरी डिब्बे से उतारकर सरेआम उसे तोड़ कर लूट लिया। एक यात्री की भी इन डाकुओं ने हत्या कर दी। हालाँकि इन डाकुओं ने किसी अन्य यात्री को मारा-पीटा नहीं और न ही उन्हें लूटा। ऐसी रोमांचकारी घटना इससे पहले सुनने में नहीं आयी थी। इसलिए सब भौचक थे कि आखिर इस घटना का क्या कारण था और किस गिरोह ने किया था। इसे मात्र साधारण डाकुओं का काम नहीं समझा गया जो कि प्रायः असहाय लोगों का ही धन लूटने का काम करते हैं।' अवध चीफ कोर्ट के चीफ जज लुईश शर्ट ने 'काकोरी षड्‌यंत्र कांड' केस के मुकदमे के अपने फैसले में इस घटना का उल्लेख किया है।

लखनऊ से पहले काकोरी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन रूककर जैसे ही आगे बढ़ी क्रांतिकारियों ने चेन खींचकर उसे रोक लिया और गार्ड के डिब्बे से सरकारी खजाने का बक्सा नीचे गिरा दिया। उसे खोलने की कोशिश की गयी किंतु जब वह नहीं खुला तो अशफाक उल्ला खाँ ने अपना माउजर मन्मथनाथ गुप्त को पकड़ा दिया और हथौड़ा लेकर बक्सा तोड़ने में जुट गए। मन्मथनाथ गुप्त ने उत्सुकतावश माउजर का ट्रिगर दबा दिया जिसके चलते गोली छूट गई और अहमद अली नाम का मुसाफिर मौके पर ही ढेर हो गया। शीघ्रतावश चाँदी के सिक्कों व नोटों से भरे चमड़े के थैलों को चादरों से बाँधकर उन्हें भागना पड़ा। ब्रिटिश सरकार ने इसे ट्रेन डकैती को गंभीरता से लिया और डी.आई.जी. के सहायक मि. आर. ए. हार्टन के नेतृत्व में स्कॉटलैंड की सबसे तेज-तर्रार पुलिस को इसकी जाँच का काम सौंपा गया। क्रांतिकारियों द्वारा सरअंजाम दिए गए इस काकोरी कांड का एकमात्र उद्देश्य था ब्रिटिश हुकूमत के तख्ते को पलट देना। अंग्रेजी सरकार क्रांतिकारियों की इस मंशा को भाँप गयी और पूरे हिंदुस्तान से क्रांतिकारियों को पकड़कर जेलों में भरा जाने लगा।

सी.आई.डी. ने गंभीर छानबीन कर सरकार को इस बात की पुष्टि कर दी कि काकोरी ट्रेन डकैती क्रांतिकारियों की एक सुनियोजित षड्‌यंत्र है। पुलिस ने इस कांड के संबंध में जानकारी देने व इस षड्‌यंत्र में शामिल किसी भी क्रांतिकारी को गिरफ्तार करवाने के लिए इनाम की घोषणा की। पुलिस ने जाल बिछाकर 26 सितंबर 1925 की रात में बिस्मिल के साथ पूरे

हिंदुस्तान से 40 से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार कर लिया। काकोरी कांड में केवल 10 ही लोग वास्तविक रूप से शामिल हुए थे। अत: उन सभी को नामजद किया गया। पुलिस ने बनारसीलाल को सरकारी गवाह बनाकर अचूक औजार की तरह इस्तेमाल किया और बिस्मिल के विरूद्ध पूरा अभियोग दर्ज कर सेंट्रल जेल भेज दिया। चीफ कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सर लुइस शर्ट और विशेष न्यायाधीश मोहम्मद रजा के सामने मामले पेश हुए। रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी पैरवी खुद की। बिस्मिल ने चीफ कोर्ट के सामने जब धारा-प्रवाह अंग्रेजी में फैसले के खिलाफ बहस की तो सरकारी वकील बगलें झाँकते नजर आए। बिस्मिल की इस तर्क क्षमता पर चीफ जस्टिस लुइस शर्ट को उनसे यह पूछना पड़ा- 'मि. रामप्रसाद! फ्रॉम ब्हिच यूनीवर्सिटी यू हैव टेकेन द डिग्री ऑफ लॉ।' इस पर उन्होंने हँसकर कहा- 'एक्सक्यूज मी सर! ए किंगमेकर डजन्ट रिक्वायर एनी डिग्री।'

काकोरी कांड का मुकदमा लखनऊ में चल रहा था। पं. जगतनारायण मुल्ला सरकारी वकील के साथ-साथ उर्दू के शायर भी थे। उन्होंने अभियुक्तों के लिए 'मुल्जिमान' की जगह 'मुलाजिम' शब्द बोल दिया। फिर क्या था पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने तपाक से उन पर ये चुटीली फब्ती कसी-

मुलाजिम हमको मत कहिए, बड़ा अफसोस होता है।
अदालत के अदब से हम यहाँ तशरीफ लाये हैं
पलट देते हैं हम मौजे-हवादिस अपनी जुर्रत से
कि हमने आँधियों में भी चिराग अक्सर जलाये हैं।।

उनके कहने का मतलब था कि वे मुलाजिम नहीं हैं बल्कि राजनीतिक बंदी हैं। अत: उनके साथ तमीज से पेश आएँ। चीफ कोर्ट ने 22 अगस्त 1927 को जो फैसला सुनाया उसके अनुसार रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्रनाथ लाहिड़ी व अशफाक उल्ला खाँ को आई.पी.सी. की दफा 121 (ए) व 120(बी) के अंतर्गत आजीवन कारावास तथा 302 व 396 के अनुसार फाँसी की सजा का हुक्म हुआ। फैसले में निर्णय दिया गया कि रामप्रसाद बिस्मिल को फाँसी पर तब तक लटकाया जाए जब तक प्राण न निकल जाए। कोर्ट के इस फैसले से समूचे देश में सनसनी फैल गई। काकोरी कांड के सभी फाँसी प्राप्त अभियुक्तों की सजाएँ कम करने का भरपूर प्रयास किया गया परंतु लंदन के न्यायाधीश व सम्राट के वैधानिक सलाहकारों ने उस पर बड़ी सख्त दलील दी कि 'इस षड्यंत्र का सूत्रधार रामप्रसाद बिस्मिल बड़ा ही खतरनाक और पेशेवर अपराधी है। यदि उसे क्षमादान दिया गया तो वह भविष्य में इससे भी बड़ा और भयंकर कांड कर सकता है। उस स्थिति में सरकार को हिंदुस्तान में शासन करना असंभव हो जाएगा।' परिणामस्वरूप प्रिवी कौंसिल ने क्षमादान की अपील भी खारिज कर दिया।

16 दिसंबर 1927 को बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा का आखिरी अध्याय (अंतिम समय की बातें)पूर्ण करके जेल से बाहर भिजवा दिया। 18 दिसंबर 1927 को माता-पिता से अंतिम मुलाकात की और सोमवार 19 दिसंबर 1927 (पौष कृष्ण एकादशी विक्रमी संवत 1984) को प्रात: 6.30 बजे गोरखपुर की जिला जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई। बिस्मिल के बलिदान का समाचार सुनकर बहुत बड़ी संख्या में जनता जेल के फाटक पर एकत्र हो गई। जेल का मुख्य द्वार बंद ही रखा गया और फाँसीघर के सामने वाली दीवार को तोड़कर बिस्मिल का शव उनके परिजनों को सौंप दिया गया। शव को डेढ़ लाख लोगों ने जुलूस निकालकर पूरे शहर में घुमाते हुए पावन राप्ती नदी के किनारे राजघाट पर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

शहीदे आजम भगत सिंह ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि फाँसी पर ले जाते समय बिस्मिल ने बड़े जोर से कहा- 'वंदे मातरम्! भारत माता की जय' और शांति से चलते हुए कहा-

'मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र और तेरी जुस्तजू रहे।।

फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर बिस्मिल ने कहा- 'आई विश द डाउनफॉल ऑफ ब्रिटिश इंपायर' अर्थात मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ। इसके पश्चात यह शेर भी कहा-

'अब न अहले वल्वले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले-बिस्मिल में है।

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और एक मंत्र पढ़ना शुरू किया, रस्सी खींची गई। पं. रामप्रसाद जी

फाँसी पर लटक गए।

आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना सबसे बड़ा खौफनाक दुश्मन समझा। उनकी माता जी ने कहा था- 'मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दु:खी नहीं। मैं श्रीरामचंद्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। वैसा ही मेरा 'राम' था। बोलो श्रीरामचंद्र की जय।'

1927 में बिस्मिल के साथ तीन अन्य क्रांतिकारियों के बलिदान ने पूरे हिंदुस्तान के हृदय को हिलाकर रख दिया। काकोरी कांड के फैसले से उत्पन्न परिस्थितियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और दशा ही बदल दिया।

बिस्मिल की पहली पुस्तक 1916 में छपी थी जिसका नाम था- 'अमेरिका की स्वतंत्रता का इतिहास'। यह पुस्तक स्वतंत्र भारत में फिर से उनकी जन्म शताब्दी वर्ष 1996-97 में प्रकाशित की गई और उसका विमोचन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने किया। पं. रामप्रसाद बिस्मिल एक लेखक भी थे और उन्होंने कई कविताएँ, ग़ज़लें एवं पुस्तकें लिखी थीं।

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।'

यह ग़ज़ल उनके बलिदान के बाद सभी क्रांतिकारियों का मंत्र बन गयी। 'जिंदगी का राज' की इस ग़ज़ल में जीवन का वास्तविक दर्शन निहित है। वास्तव में अपने लिए जीने वाले मरने के बाद विस्मृत हो जाते हैं पर दूसरों के लिए जीने वाले हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। तभी तो उन्होंने स्वयं भी स्वीकार करते हुए लिखा है-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

बिस्मिल की अंतिम रचना थी- 'बिस्मिल की तड़प'। इसमें उन्होंने लिखा कि-

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या
दिल की बर्बादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या!
मिट गई जब सब उम्मीदें मिट गए जब सब खयाल,
उस घड़ी गर नामावर लेकर पयाम आया तो क्या!

गोरखपुर जेल की आठ नंबर की कोठरी जिसमें रहकर बिस्मिल भोजन करते, सोते और नित्य का क्रिया कर्म भी उसी में करना था। उस कोठरी का बिस्मिल की रचना क्षेत्र में जितना योगदान है, विश्व के किसी भी जेल अथवा राजनीतिक बंदीगृह का अब तक नहीं है। उन्होंने इस कोठरी के संबंध में यह भी लिखते हैं कि मुझे इस कोठरी में बड़ा आनंद आ रहा है। मेरी इच्छा थी कि किसी साधु की गुफा पर कुछ दिन निवास करके योगाभ्यास किया जाता। अंतिम समय यह इच्छा भी पूर्ण हो गई। साधु की गुफा न मिली तो क्या साधना की गुफा तो मिल गई।

महसूस हो रहे हैं, वादे फना के झोंके।
खुलने लगे हैं मुझपर, इसरार जिंदगी के
बारे अलम उठाया, रंगे निशात देखा
आए नहीं हैं यू ही, अंदाज बेहिसी के।

शत्-शत् नमन है उस काकोरी कांड के महानायक अमर वीर बलिदानी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की शहादत को। ✠✠

वरिष्ठ अनुवादक/प्रभारी
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क:09794840672

जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो, इससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस ओर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। तुम अपनी अंतस्थ आत्मा को छोड़ किसी और के सामने सिर मत झुकाओ। जब तक तुम यह अनुभव नहीं करते कि तुम स्वयं देवों के देव हो, तब तक तुम मुक्त नहीं हो सकते।

स्वामी विवेकानंद

◆ विज्ञान ◆

पाँच उपग्रहों का प्रक्षेपण-एक बड़ी उपलब्धि

संजय वर्मा

भारत ने अंतरिक्ष उड़ान के क्षेत्र में 10 जुलाई शुक्रवार की रात्रि को इतिहास रच दिया जब उसने ब्रिटेन के पाँच उपग्रहों को एक साथ अंतरिक्ष में भेजने में कामयाबी हासिल किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ऐतिहासिक मिशन के तहत श्रीहरिकोटा के सतीश धवन केंद्र से रॉकेट पी.एस.एल.वी.सी-28 के जरिये कुल 1,440 किग्रा. वजन के पाँच ब्रिटिश उपग्रहों को प्रक्षेपण के बीस मिनट के अंदर अंतरिक्ष के कक्षा में स्थापित करने में कामयाबी हासिल कर लिया। 62.5 घंटे की उल्टी गिनती के बाद 44.4मी. लंबे पी.एस.एल.वी.सी-28 का प्रक्षेपण रात 9:58 बजे किया गया।

यह इसरो एवं उसकी व्यावसायिक शाखा एंट्रिक्स कारपोरेशन का अभी तक का सबसे अधिक भार वाला व्यावसायिक मिशन हो गया। इससे पहले इसरो का सबसे अधिक व्यावसायिक मिशन स्पाट-7 मिशन था। फ्रांस के इस 712किग्रा. वजनी उपग्रह को 30 जून 2014 को पी.एस.एल.वी. के जरिये प्रक्षेपित किया गया था। भारत अब तक सन् 1999 से अब तक 40 विदेशी उपग्रह को अंतरिक्ष में स्थापित कर चुका है।

इसरो की ओर से जारी बयान में यह बताया गया कि 44.4मी. लंबे एवं 320 टन वजन वाले पी.एस.एल.वी.सी की कुल क्षमता 1,750किग्रा. वजन ढोने की है। अपने 30वें मिशन में पी.एस.एल.वी. तीन आइडेंटिकल डी.एम.सी.-3 ऑप्टिकल अर्थ ऑब्जर्वेशन सेटेलाइट को अंतरिक्ष में ले गया। इन तीन उपग्रहों का निर्माण ब्रिटेन की सुरेश सेटेलाइट टेक्नालॉजी ने किया है जबकि भेजे जाने वाले अन्य दो पूरक उपग्रह हैं। डी.एम.सी.-3 उपग्रहों में एक का भार 447किग्रा. है। इससे पहले इसरो ने 5 नवंबर 2013 को मंगल अभियान लांच किया था। 22 अक्टूबर 2008 को चंद्रयान-1 लांच किया था।

यह पी.एस.एल.वी.सी-28 प्रक्षेपण यान की 13वीं उड़ान रही। डी.एम.सी.-3 सेटेलाइट के प्रक्षेपण के लिए इसके उच्च श्रेणी के संस्करण(पी.एस.एल.वी.-एक्स.एल)की मदद ली जाएगी।

डी.एम.सी.-3 सेटेलाइट

भार: 447 किग्रा. (प्रत्येक)
लंबाई: 3 मीटर (प्रत्येक)
कक्षा: 647 किमी.
जीवन काल: 7 वर्ष
झुकाव: 98.06 डिग्री

- इस श्रेणी के तीन सेटेलाइट प्रक्षेपित किए जाएँगे। यह आप्टिकल अर्थ आब्जर्वेशन सेटेलाइट है। ब्रिटेन के सरे सेटेलाइट टेक्नालॉजी लि.(एस.एस.टी.एल.) द्वारा इसको विकसित किया गया है।
- पृथ्वी की कक्षा में 647 किमी. ऊँचाई पर स्थित सन सिंक्रोनस आर्बिट में इनको स्थापित किया गया।
- इसके जरिये प्रतिदिन पृथ्वी की सतह पर लक्षित किसी भी इमेज को देखा जा सकेगा।
- पृथ्वी पर उपस्थित संसाधनों के सर्वे, पर्यावरण, शहरी बुनियादी ढाँचे के प्रबंधन और आपदा के बाद निगरानी कार्यों में मदद मिलेगी।

सी.बी.एन.टी.-1

भार: 91 किग्रा.
आप्टिकल अर्थ आब्जर्वेशन टेक्नालॉजी पर आधारित माइक्रो सेटेलाइट है।

डी-आर्बिट सेल

भार: 7 किग्रा.
सरे स्पेश सेंटर द्वारा निर्मित प्रयोगात्मक नैनो सेटेलाइट है।

व्यावसायिक कार्यक्रम

- 16 वर्ष पहले इसरो ने विदेशी सेटेलाइट को व्यावसायिक रूप से अंतरिक्ष में भेजने की शुरुआत की थी। 26 मई 1999 को इस कार्यक्रम की शुरुआत के तहत जर्मनी का 45 किग्रा. भार था डी.एल.आर.-टुबसेट और कोरिया का 110 किग्रा. भार था किटसेट-3 प्रक्षेपण यान पी.एस.एल.वी.-सी-2 द्वारा भेजा गया था।
- इसके तरह के 40वें मिशन के तहत पी.एस.एल.वी.सी-23 के जरिये पिछले वर्ष 30 जून को फ्रांस, जर्मनी, कनाडा एवं सिंगापुर के सेटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित किए गए थे।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन(इसरो) के इस नये कीर्तिमान से न केवल एक अपार सफलता के रूप में सफलता मिली है अपितु अंतरिक्ष बाजार में एक बार फिर भारत का लोहा माना जाने लगा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अब भारत अपने 40 विदेशी सेटेलाइट के गौरवपूर्ण सफलता से इसरो को एक नई पहचान मिली है। इसके लिए इसरो के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं अन्य पूरी टीम बधाई के पात्र हैं। ✠✠

स्वतंत्र विज्ञान एवं खेल पत्रकार
कंप्यूटर सेंटर
दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर-273009 (उ.प्र.)
संपर्क: 09452112461

◆ लेख ◆

गणित और मनोविज्ञान

डा. हरिशंकर कुमार सिन्हा

गणित में अंक 'एक' का बहुत महत्व होता है। यदि 'एक' को 'एक' से गुणा कर दिया जाए तो गुणनफल एक ही आएगा। इसी प्रकार एक ब्रह्म को एक प्रकृति से द्विगुणित कर दिया जाए तो भी 'एक' ही रूप निर्मित होगा। 'भगवान शिव' का अर्द्धनारीश्वर-रूप इसी एक का प्रतीक है। इस नानात्मक जगत में गणित के 'एक' अंक का यह भी महत्व है कि उसके माध्यम से अनेक असंभव कार्य संभव हो जाते हैं। एक में एक से भाग देने पर भागफल 'एक' ही आता है। इसका अर्थ यह हुआ कि 'एक' का विभाजन नहीं किया जा सकता है। वही 'एक- ब्रह्म' है जिसका विभाजन असंभव है। यह संसार उसी 'एक-ब्रह्म' का रूप है। 'एक' में एक जोड़ने पर दो होता है दोनों के संयुक्त रूप से 'एक'का निर्माण होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वीर्य और रज जब संयुक्त रूप से 'एक' होता है तब 'एक-संतान' की उत्पत्ति होती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

'मम् योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवतु भारत।। 3-1।।

अर्थात् मेरी महत्-ब्रह्मरूप मूल प्रकृति संपूर्ण भूतोंकी योनि अर्थात् गर्भाधान का स्थान है और मैं उस योनि में चेतन समुदाय रूप गर्भ की स्थापना करता हूँ। उस जड़-चेतन के संयोग से सब भूतों की उत्पत्ति होती है।

जड़ का अर्थ 'रज' होता है और चेतन का अर्थ 'वीर्य'। इसी जड़ को प्रकृति भी कहा जाता है। प्रकृति और चेतन मिलकर एक देहधारी प्राणी को उत्पन्न करते हैं। जिसके अंदर पंचभूत(क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर) होते हैं। 'एक वीर्य और एक रज का निर्माण एक लंबी प्रक्रिया संपन्न होने के बाद होता है। अन्न और जल ही इसका मूल है। क्योंकि खाया हुआ अन्न ही जल के द्वारा द्रवीभूत होकर जठराग्नि द्वारा पचाया जाता है। वह रस रूप में परिणत हो जाता है। उस रस से रक्त, रक्त से माँस बनता है फिर माँस से मेद, फिर मेद से अस्थि(हड्डी) बनती है । उस अस्थि से मज्जा और मज्जा से वीर्य तैयार होता है। इसीप्रकार औरत द्वारा अन्न खाये जाने के पश्चात् उक्त प्रक्रिया क्रमानुसार रसादि से लेकर मज्जा तक बनता है। फिर मज्जा से रस बनता है। इतना ही नहीं उसी अन्न से वीर्य और रज पुष्ट होते हैं।'

वीर्य और रज जब आपस में मिलते हैं तब 'एक-जीव' का निर्माण होता है जो 280 दिनों के अंदर क्रमशः विकसित होकर एक देहधारी संतान (पुत्र/पुत्री) के रूप में स्त्री के गर्भ से बाहर आ जाती है। यह शरीर पृथ्वी का विकार रूप पाप का आवरण है जिसके अंदर एक वायुयुक्त प्राण रूप आत्मा-परमात्मा का अंश होता है। बृहदारण्योपनिषद् में कहा गया है कि- 'स वा अयं पुरुषो जायमानः शरीरमभिसम्पद्यमानः पाप्मभिः संसृज्यते'।।8-2।। अर्थात् वह यह पुरुष जन्म लेते समय शरीर का आत्मभाव से प्राप्त होता हुआ पापों से (देह और इंद्रियों से) संश्लिष्ट हो जाता है।' श्रीमद्भग्वद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।।7-3।। अर्थात् इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है।

गणित के अंतर्गत सबसे छोटी संख्या 'एक' है। इसका अर्थ यह हुआ कि सूक्ष्म अतिसूक्ष्म ब्रह्म है जो हृदयकमल के भीतर पुरुष में (प्राणी में) व्याप्त है। जो सभी ग्रह, नक्षत्र और लोकों से बड़ा है। वह एक होकर भी सर्वत्र व्याप्त है। इसलिए वह एक होकर भी अनेक है। यह ब्रह्म वही है जो आत्मा है और वह आत्मा भी वही है जो ब्रह्म है। दोनों अभेद, एकरूप में सर्वत्र और सभी प्राणियों में स्थित है। शांडिल्य मुनि ने ऐसा कहा है- एष म आत्मांतर्हृदयेऽणीयान्व्रीहेर्वा यवाद्वा सर्षपाद्वा श्यामकाद्वा श्यामाकतझडुलाद्वैव म आत्मान्तर्हृदये ज्यायान्पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाज्ज्यायान्दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः।।3।।

अर्थात् हृदयकमल के भीतर यह मेरा आत्मा धान से, यव से, सरसों से, श्यामाक से अथवा श्यामाकतंडुल से भी सूक्ष्म है तथा हृदयकमल के भीतर यह मेरा आत्मा पृथ्वी, अंतरिक्ष, द्युलोक अथवा इन सब लोकों की अपेक्षा भी बड़ा है।

एक में से एक घटा देने पर शून्य हो जाता है। यह शून्य रूपी ब्रह्मांड में एक चेतन सभी लोकों के निर्माता, जगत पालन-पोषण कर्ता और महाकाल, कल्याणकारी

शिव का प्रतीक है। जब कोई नहीं था तब इस जगत शून्य ब्रह्मांड में भगवान शिव थे, भविष्य में यदि जगत शून्य हुआ तो भी एक मात्र 'शिव' रहेंगे और आज भी हर कण में, हर दिशा में और हर जीव में शिव है और ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ शिव न हो।शिवमयी दुनिया अनेक सुगंधों से सुवासित हो रही है। शिव ही चंतन है और शिव ही ब्रह्मा। छांदोग्योपनिषद में कहा गया है-
मनोमयः प्राणशरीरो भरूपः सत्यसंकल्प आकाशात्मा सर्वकामः सर्वगंधः सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरः।।2।।

अर्थात् वह ब्रह्म मनोमय, प्राणशरीर, प्रकाशस्वरूप, सत्यसंकल्प, आकाशशरीर, सर्वकर्मा, सर्वकाम, सर्वगंध, सर्वरस इस संपूर्ण जगत को सर्वत्र व्याप्त करने वाला, वाक्रहित और संभ्रमशून्य है।

एक अंक की सबसे बड़ी संख्या नौ है। गणित में नौ सबसे बड़ी संख्या मानी जाती है। नौ एक ऐसी संख्या है जिसे गणितीय ज्योतिष में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। क्योंकि यह शुभ अंक के अंतर्गत, परिगणित किया जाता है। गणित में 'एक' सबसे निचली सीढ़ी(पायदान)पर है जिसके सहारे शून्य के ऊपर क्रमशः बढ़ते क्रम में दूसरी, तीसरी आदि सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उच्चतम शिखर पर पहुँचा जाता है। जिसके बाद क्रमशः घटते क्रम में उतरते हुए शून्य पर आकर समाप्त हो जाता है। शून्य ब्रह्मांड का प्रतीक है। जहाँ कोई नहीं है वहाँ शून्य है। उस शून्य में एक ज्योति प्रकाशित हो रही है। वह प्रकाश कोई दूसरा नहीं, चैतन्य है जिसे 'कल्याणकारी-शिव' कहा जाता है। एक चैतन्य से विश्व की रचना हुई है। गणित में एक में एक जोड़कर दो बनते हैं। दो में एक जोड़ने पर तीन, तीन में एक जोड़ने पर चार, चार में एक जोड़ने पर पाँच, पाँच में एक जोड़ने पर छः, छः में एक जोड़ने पर सात, सात में एक जोड़ने पर आठ और आठ में एक जोड़ने पर नौ बनती है जो गणित में उच्चतम शिखर होता है। नौ में एक जोड़ने पर नीचे गिरकर शून्य बन जाता है और उस शून्य की बायीं ओर एक आता है जिसे दस पढ़ा जाता है। स्पष्ट है गणित एक और नौ के बीच की दूरी है। शून्य एक और नौ की पृष्ठभूमि है। किसी संख्या या अंक के ऊपर शून्य होता है जिसे आवश्यकतानुसार लिखते हैं और पढ़ते हैं। बिना जरूरत के वह शून्य छिपा रहता है जो उस अंक या संख्या की पृष्ठभूमि का काम करता है। ज्योतिष विद्या पूर्णतः गणितीय विद्या है। अर्थात् गणितीय-पृष्ठभूमि शून्य हो जाती है। एक में एक जोड़ते रहने पर क्रमशः नयी संख्या बनकर उच्चतम शिखर नौ तक पहुँच जाती है। उसीप्रकार एक के पहाड़ा में प्रत्येक गुणनफल से प्राप्त संख्या क्रमशः ऊपर की ओर बढ़कर उच्चतम शिखर को प्राप्त कर लेता है। जबकि नौ के पहाड़ा के प्रत्येक गुणनफल का दायाँ अंक क्रमशः घटता जाता है और अंत में शून्य हो जाता है और इसकी बायीं ओर सिर्फ नौ रह जाता है। अर्थात् अंतिम संख्या नब्बे होता है जिसके दोनों अंकों का योगफल नौ होता है। यानी नौ और शून्य (9+0=9) को जोड़ने पर नौ हो जाता है। इतना ही नहीं, नौ के पहाड़ा के प्रत्येक गुणनफल का योगफल एक ही उच्चतम अंक नौ होता है। जो गणित के उच्चतम शिखर का बोध कराता है। इसप्रकार शून्य से लेकर नौ तक कुल दस संख्या होती है जिसे पूर्ण संख्या (whole number) कहते हैं। प्रत्येक अंक के पहाड़ा में शून्य पृष्ठभूमि का कार्य करता है, उसके बाद एक होता है। यह एक प्राणी के अंदर तेज और ज्ञान -ज्योति का बोध कराता है जिसके कारण प्राणी में विकास होता है। जब कोई प्राणी अपने तपोबल और ज्ञानबल के कारण उच्चतम शिखर पर पहुँच जाता है जो गणित में नौ का प्रतीक है। जिसके बाद प्राणी का सिर्फ गिरना या नष्ट होना ही शेष रह जाता है। बृहदारण्यकोपनिषद के अनुसार-याज्ञवल्क्य ने गार्गी के पूछने पर बढ़ते क्रम में कुल नौ लोकों का वर्णन किया है जिसका पृष्ठभूमि 'जल' है और 'वायु' में जल ओत-प्रोत है। लोकों में अंतरिक्ष लोक सबसे निचला लोक होता है जबकि ब्रह्मलोक को उच्चतम लोक कहा जाता है। ब्रह्मऋषि याज्ञवल्क्य जी ने जल और वायु के साथ-साथ अंतरिक्ष लोक, गंधर्व लोक, आदित्य लोक, चंद्र लोक, नक्षत्र लोक, देव लोक, इंद्र लोक, प्रजापति लोक और ब्रह्म लोक का वर्णन किया है।

अंक-ज्योतिष के अंतर्गत भी शून्य और एक का महत्वपूर्ण स्थान है। एक के आगे शून्य बैठा देने पर उसकी महार्द्धता दस गुणी बढ़ जाती है। लेकिन रीतिकालीन कवि बिहारीलाल ने तो यहाँ तक कहा है कि उसकी महार्द्धता दस गुणी ही नहीं, बल्कि अनगिनत हो जाती है। 'बिहारी-सतसई' में बिहारीलाल लिखते हैं-

'कहत सबै बिंदी दियै ऑक दस गुनो होत।
तिय लिलार बिंदी दिये, अगणित होत उदोत।।'

अर्थात् किसी एक अंक के आगे बिंदी यानी

शून्य डाल देने से उसमें दस गुणा वृद्धि हो जाती है। जबकि नारी के ललाट पर एक बिंदी आ जाने से उसका अनगिनत सौंदर्य बढ़ जाता है।

'वशिष्ठ-संहिता' में 'एक' को ब्रह्म तथा गौतम संहिता में एक को प्रकृति माना जाता है। इस एक और एक के संयोग से दो बनते हैं जिसे कल्प शास्त्र में पुरुष और प्रकृति कहा जाता है और इसी से ब्रह्मांड की सृष्टि होती है। श्रीराम भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस दो को 'राम' नाम की संज्ञा दिया है। तुलसी-सतसई में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है-

'नाम चुतर्गुण पंच युत, दूने हरवसु शेष।
तुलसी सकल चराचर, राम नाममय पेश।।'

अर्थात् 'नाम जितने अक्षर का हो उसका चौगुणा करके उसमें पाँच जोड़ देंगे। फिर उसे दोगुणा करके आठ से भाग देंगे। शेष दो ही बचेगा जो राम है।'

प्रभु 'राम' शून्य और एक का हेतु है। ✠✠

मुहल्ला-पोखरा(वीमेंस कॉलेज के पश्चिम)
कचहरी रोड, हाजीपुर-844101
वैशाली (बिहार)
संपर्क: 09430622941

डा. हरिवंश राय बच्चन

हालावाद के प्रवर्तक डा. बच्चन जी हिंदी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक है। उनकी प्रसिद्ध कृति **'मधुशाला'** है। इन्होंने पहले उर्दू की शिक्षा प्राप्त की जो उस समय कानून की डिग्री के लिए पहला कदम माना जाता था। इन्होंने प्रयाग वि.वि. से अंग्रेजी में एम.ए. और कैंब्रिज वि.वि. से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्ल्यू. बी. यीट्स की कविताओं पर शोध कर पी.एचडी. की उपाधि हासिल की। उनकी कृति **'दो चट्टानें'** को 1968 में हिंदी कविता का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गयाथा। इसी वर्ष इन्हें **सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार** तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन में **कमल पुरस्कार** से भी सम्मानित किया गया था। बिड़ला फाउंडेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए **सरस्वती सम्मान** प्रदान किया था। भारत सरकार द्वारा 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में **'पद्मभूषण'** से सम्मानित किया था।

कृतियाँ

कविता संग्रह- तेरा हार, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, जाल समेटा, दो चट्टानें।

आत्मकथा- क्या भूलूँ क्या याद करुँ, नीर का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, बच्चन रचनावली के नौ खंड, दशद्वार से सोपान तक

अन्य- खय्याम की मधुशाला, मैकबेथ, ओथेलो, उमर खय्याम की रूवाइयाँ, हैमलेट, आ रही रवि की सवारी।

मधुशाला

एक बरस में, एक बार ही जगती होली की ज्वाला
एक बार ही लगती बाजी, जलती दीपों की माला
दुनियावालों, किंतु, किसी दिन आ मदिरालय में देखो,
दिन में होली, रात दिवाली, रोज मनाती मधुशाला।।

◆ लघुकथाएँ ◆

के.एल.पांडेय

दीवाली

दीवाली! जगमग करते दियों, मिठाइयों और पटाखों का त्योहार। किसे इंतजार नहीं होता इसका? कितनी तरह की फुलझड़ियाँ, पटाखें और उनके चलाने में उताबले बच्चे। मैंने इस बार सोचा दीवाली कुछ अलग तरह से मनाने के लिए। बच्चों के लिए पटाखों की खरीददारी के साथ मैंने एक पैकेट बनवाया पटाखों और मोमबत्तियों का बिल्कुल बच्चों की पसंद।

यह किसके लिए है पापा?

अरे अपने लिए ही समझ लो।

'तो फिर मुझे यह फुलझड़ी भी चाहिए' -मेरे छोटे बेटे ने कहा।

ठीक है इसे भी ले लो।

शाम को मैं अपने बेटे के साथ गली के उस छोटे से मकान पर पहुँचा जहाँ एक गरीब परिवार रहता था। मकान में कोई खास रोशनी नहीं थी और एक बूढ़े के खाँसने की आवाज आ रही थी।

मैंने दरवाजे पर दस्तक दी।

एक छोटे बच्चे ने दरवाजा खोला। वह मेरे बेटे से थोड़ी कम उम्र का था।

मैंने उसे वह पैकेट दिया जिस पर लिखा था- 'शुभ दीपावली' और भेजने वाले के नाम की जगह पर-'एक दोस्त'।

उसने कहा- 'पर मेरा तो ऐसा कोई दोस्त नहीं है।'

'मैं हूँ ना' -एक बाल सुलभ निश्छलता के साथ मेरे बेटे ने कहा। अच्छा खोलो तो इसे- 'इतने सारे पटाखे, दादा, अम्मा देखो तो, मुझे मेरे दोस्त ने दिए हैं।'

'अच्छा, पर तुम्हारा दोस्त है कहाँ?'

'अरे अभी तो यहीं था अपने पापा के साथ।'

मैं छिप कर देख रहा था उसकी आँखों में झलकती खुशी को, और अपने बेटे की आँखों में भी। पर मैंने तो अपनी दीवाली मना ली थी, बिल्कुल अपनी तरह से।

कन्या भोज

नवरात्रि का अंतिम दिन और मेरी माँ। हर वर्ष की तरह कन्या भोज की तैयारी। आसपास की छोटी-छोटी लड़कियों को निमंत्रित जिनमें से ज्यादातर छोटे तबके के परिवारों की। पूरी तैयारी- खीर, पूड़ी, छोले, फल और उसके साथ चॉकलेट और चिप्स भी।

मैंने पूछा- 'माँ यह तो माडर्न स्टाइल है।'

वह बोली- 'प्रयोजन तो कन्याओं को प्रसन्न करने का है तभी तो देवी माँ प्रसन्न होंगी।'

एक साथ बैठी उन कन्याओं में जब मुझे उस मुस्लिम परिवार की तीन बच्चियाँ दिखाई दीं तो बहुत आश्चर्य हुआ।

मैंने माँ से पूछा- 'ये तो....'

'हाँ-हाँ कल जब मैं कन्याओं को आमंत्रित करने गई थी तो इन्हें देखा। मैंने इनकी माँ से कहा तो वह खुशी-खुशी तैयार हो गई इन्हें भेजने के लिए। देखो तो कितनी प्यारी लग रही हैं ये।'

एक कट्टर सनातनी महिला के अंदर यह परिवर्तन मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम न था।

उन्होंने सभी को बड़े प्यार से भर पेट खिलाया, उन्हें चॉकलेट और छोटे-मोटे गिफ्ट दिए, तिलक लगाकर चरण छुए और दक्षिणा दी।

मुझे उनके इस व्यवहार पर गर्व हो रहा था और लग रहा था जैसे देवी माँ मेरे पूरे परिवार पर अपनी कृपा का वरद् हस्त रखे हुए धीरे-धीरे मुस्करा रही हैं। ✠✠

सदस्य तकनीकी
रेल दावा अधिकरण
गोरखपुर
संपर्क: 09794840076

सफलता के तीन रहस्य हैं- योग्यता, साहस और कोशिश।

◆ लघु कथाएँ ◆

अरविंद कुमार मुकुल

एक

रात अंधेरी थी। उसे नींद नहीं आ रही थी। अचानक उसने आसमान की तरफ देखा। असंख्य तारे टिमटिमा रहे थे। उसे लगा तारे उसे बुला रहे हैं। वह डर गया क्योंकि वह तारा बन टिमटिमाना नहीं चाह रहा था। वह रोने लगा, तभी उसे लगा कि उसकी पत्नी जो कि खुद भी एक तारा बन चुकी थी, उसे समझा रही है रोओ मत, हँसो क्योंकि तुम तारा नहीं एक मनुष्य हो जो तारा नहीं सितारा है।

और वह खिलखिलाकर हँसने लगा।

दो

मैं जूता पहनता था। एक किसी भाई ने जूता पर चपत लगा दी। मैं चप्पल पर उतर आया। एक दूसरे भाई ने इसे भी गायब कर दिया। अब क्या खड़ाऊँ पहनूँ? लेकिन यदि किसी तीसरे भाई ने.... तो क्या?

अपने पाँव सबसे सुरक्षित हैं
इसे कोई चुरा नहीं सकता।

तीन

मैं शहर में शहर बनता जा रहा हूँ और तुम महानगर बनती जा रही हो।

हमें कौन जोड़ेगा?
मेट्रो
और कौन?

चार

मैं इश्क में धुआँ-धुआँ हो रहा हूँ और तुम इश्क में जहाँ- जहाँ।

तुम कहाँ?
मैं कहाँ?

पाँच

जब भी तुम बोरिंग रोड से गुजरती हो मैं अशोक राजपथ-सा महसूस करता हूँ।

यह पटना है पटना।
लेकिन पटना में सब कुछ राजधानी-सा नहीं है।
अनेक जगहों पर कचरा, कूड़ा का ढेर है।
तो अनेक जगहों पर गंदे पानी का।
फिर भी शहर में प्यार है।
और मैं, इस शहर को प्यार करता हूँ।

छः

दिन का पटना अलग है।
रात का अलग।
दिन में गति है, गति बीच जाम है।
दफ्तरों में कंप्यूटर की टर्-टर्।
तो चाय दुकानों में चहल-पहल।
मगर रात में
सारा शहर सो जाता है।
कुछ कुछ नहीं
बहुत कुछ
खो जाता है।

सात

मकान मालिक ने कमरा खाली करने को कह दिया है।

मगर वह कैसे खाली करवा पाएगा।
कमरे में फैली मेरी सुगंध
कमरे में फैले मेरे स्वप्न
और कमरे से जुड़ी मेरी यादें।

आठ

मैं हंस पढ़ रहा था।
तुम गृहशोभा
मैं अवधेश प्रीत की कहानी में टहल रहा था।
तुम पाक कला के पत्रों पर
मैं कहानी में रोमांस खोज रहा था
तुम नये नये व्यंजन विधि
मुझे रोमांस मिला अपना वाला
तुम्हें कई नये व्यंजन
तुम नये व्यंजन बनाना चाहती थी
मैं नये रोमांस पाना चाहता था।
और यह कोई नयी लड़की ही दे सकती थी।
जबकि तुम शिमला मिर्च काट रही थी
नये व्यंजन की तैयारी में। ✠✠

लेखक, कवि, समीक्षक और पत्रकार
और अब (लप्रेक) लघु प्रेम कथाकार
एल. एफ-27, श्रीकृष्णपुरी
पटना-800001(बिहार)
संपर्क: 09931918578

◆ तकनीकी ◆

अमान परिवर्तन- एक परिदृश्य

एल.एन.मालवीय

भारतवर्ष की आजादी से पहले वर्ष 1849 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने पूरे देश में 5'-6'' गेज की बड़ी लाइन ही बनाने का निर्णय लिया था। लगभग 4 वर्ष पश्चात बांबे और थाने के बीच बड़ी लाइन दिनांक 16 अप्रैल 1853 को यात्रियों के लिए खोली गई। इस लाइन से प्राप्त सुविधा एवं लाभ को देखते हुए सामाजिक तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं हेतु विभिन्न नये क्षेत्रों में रेलवे लाइन बिछाने की योजनाएँ बनाई गईं। धनाभाव के कारण इन योजनाओं को अमली जामा पहनाने में कठिनाई का अनुभव किया गया। इसकारण यह सोचा गया कि विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार अलग-अलग गेजों की रेल लाइनें बिछाई जाएँ जिससे कम बजट में ही काम हो जाए। मुख्य मार्गों पर बड़ी लाइन, ब्रांच तथा फीडर लाइनों में मीटर गेज तथा जंगलों व पहाड़ों पर नैरो गेज लाइनें बिछाने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। इस क्रम में देश की पहली मीटर-गेज लाइन दिल्ली व रेवाड़ी के बीच वर्ष 1873 में बनाई गई।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि देश का पहला अमान-परिवर्तन मीटर-गेज से ब्राड-गेज न होकर ब्राड-गेज से मीटर-गेज में हुआ था। यह घटना वर्ष 1875 की है। उस समय भरतवर्ष के विभिन्न भागों में रियासत एवं कंपनियाँ अपनी-अपनी रेल परिवहन सेवा चलाती थीं और उनमें बहुत कम सामंजस्य था। ऐसी ही एक ब्राड-गेज लाइन इरोड व नागापट्टिनम स्टेशनों के मध्य थी। कुछ वर्ष पूर्व बनी इस लाइन का स्वामित्व तत्कालीन एस.आई. रेलवे ने प्राप्त कर लिया। लेकिन एस.आई. रेलवे मूल्यतः मीटर-गेज की होने के कारण वह इस ब्राड-गेज खंड के रख-रखाव में आर्थिक व तकनीकी रूप से असुविधा का अनुभव कर रही थी। इस कारण उन्होंने इस ब्राड-गेज को मीटर-गेज में परिवर्तन करने का निर्णय लिया।

इस क्रम में सर्वप्रथम पूर्वोत्तर रेलवे का इतिहास जानना भी अप्रासंगिक नहीं होगा। पूर्वोत्तर रेलवे की स्थापना 11 अप्रैल 1952 को निम्नलिखित कंपनी व स्टेट रेलवे को कुछ भागों को जोड़कर किया गया था-

1. अवध तिरहुत रेलवे (ओ.टी.आर.)
2. असम-बंगाल रेलवे (ए.एस.आर.)
3. बांबे-बड़ौदा एंड सेंट्रल इंडिया रेलवे (बी.वी.एंड सी.आर.)

लेकिन अपने विशाल आकार के कारण इसको विभिन्न प्रकार की परिचालन एवं प्रशासनिक असुविधाएँ होने लगी। इस कारण रेल मंत्रालय को इसको दो भागों मे बाँटने का निर्णय लेना पड़ा और अंततः 15 जनवरी 1958 इसे विभाजित कर एक नये जोन पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे का गठन कर दिया गया। इस विभाजन के पश्चात पूर्वोत्तर रेलवे का विस्तार पश्चिम में आगरा के निकट अचनेरा से लेकर पूर्व में कटिहार तक रह गया। इस समय इसके पाँच मंडल इज्जतनगर, लखनऊ, वाराणसी, सोनपुर व समस्तीपुर थे और मूलतः यह एक मीटर-गेज रेलवे थी। इस रेलवे की सबसे पुरानी मीटर-गेज लाइन का निर्माण नवंबर 1875 में अकाल राहत कार्य के अधीन दलसिंहसराय से समस्तीपुर होते हुए दरभंगा तक 61 किमी. लंबाई में किया गया था।

वर्ष 1996 के पहले भारतीय रेल पर कुल 9 जोनल रेलवे थीं, लेकिन प्रशासनिक कारणों से रेलवे बोर्ड ने दिनांक 16.06.1996 को इनका पुनर्गठन कर 6 नई जोनल रेलवे बना दी और इनकी कुल संख्या 15 हो गई। इसी क्रम में 1 अक्टूबर 2002 को पूर्वोत्तर रेलवे के समस्तीपुर व सोनपुर मंडलों का विलय नवनिर्मित पूर्व मध्य रेलवे में कर दिया गया और इसका मुख्यालय हाजीपुर बनाया गया। इस विभाजन के पश्चात पूर्वोत्तर रेलवे का विस्तार उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार के कुछ जिलों तक सीमित रह गया। पूर्वोत्तर रेलवे में कुल 486 रेलवे स्टेशन हैं और इसका रूट किलोमीटर 3868 है जो कि भारतीय रेल के रूट किलोमीटर का लगभग छः प्रतिशत है। भगवान श्रीराम एवं श्रीकृष्ण की जन्मभूमि अयोध्या व मथुरा भी इसी रेलवे के स्टेशन हैं। विभिन्न बौद्ध परिपथ से जुड़े स्थान तक पहुँचने का मार्ग भी पूर्वोत्तर रेलवे से ही होकर जाता है। देश के महत्वपूर्ण तथा औद्योगिक शहरों में ब्राड-गेज होने के कारण मीटर-गेज स्टेशनों के यात्रियों के आवागमन एवं ट्रांसिपमेंट के

कारण माल-परिवहन में विलंब तथा असुविधा होती है। कभी-कभी समुचित सामंजस्य न हो पाने के कारण आर्थिक क्षति भी होती है। इस अवरोध को समाप्त करने हेतु पूरे देश में एक समान गेज (5'-6'') रखने की अवधारणा का जन्म हुआ। ब्राड-गेज लाइन पर अधिक भार वाहन क्षमता तथा गति प्राप्त की जा सकती है तथा इसका रख-रखाव भी मीटर-गेज के अपेक्षा कम होने के कारण देश में इसे ही अपनाने का निर्णय किया गया। इसी क्रम में तत्कालीन पूर्वोत्तर रेलवे में भी वर्ष 1962 में समस्तीपुर-बरौनी खंड 51 किमी. मीटर-गेज लाइन का अमान-परिवर्तन कर ब्राड-गेज की लाइन बनाई गई। उक्त थोड़े से अमान-परिवर्तन से हुए लाभों को देखते हुए पूर्वोत्तर रेलवे पर वर्ष 1972 में अलग से बड़ी लाइन निर्माण संगठन की स्थापना की गई। इस संगठन के अंतर्गत कराया गया प्रथम अमान-परिवर्तन समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर खंड (51 किमी.) 02जनवरी 1975 को संपन्न हुआ। यह स्वीकृत समस्तीपुर-बाराबंकी अमान-परिवर्तन का एक खंड था। विभिन्न राजनैतिक एवं आर्थिक कारणों से इस महत्वाकांक्षी योजना का शेष 570 किमी. अमान-परिवर्तन कार्य पूरा हाने में लगभग 8 वर्ष लग गये और अंतिम चरण में मल्हौर-लखनऊ (19.86 किमी.) खंड का अमान-परिवर्तन 01जनवरी 1984 को पूरा हो गया। इसके पश्चात गोरखपुर देश के अन्य महत्वपूर्ण शहरों तथा दिल्ली, मुंबई तथा चेन्नई आदि से सीधे जुड़ गया। इस अमान-परिवर्तन के कारण पूर्वोत्तर रेलवे यातायात एवं माल परिहन में असाधारण वृद्धि हुई। यात्री एवं मालगाड़ी की संख्या में वृद्धि होने के कारण गोरखपुर से गोंडा तक एक वैकल्पिक ब्राड-गेज मार्ग की आवश्यकता अपरिहार्य हो गई। इसका सरल एवं सुलभ उपाय गोरखपुर-गोंडा मीटर-गेज लूप लाइन का अमान- परिवर्तन दिखाई दिया। अब इस खंड के अंतिम चरण में बढ़नी से गोंडा तक का अमान-परिवर्तन दिनांक को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ तथा पूर्वोत्तर रेलवे के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया।

रेलवे इंजीनियरों के लिए अमान-परिवर्तन का कार्य नयी लाइन निर्माण या दोहरीकरण की अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि इसमें ट्रेनों में आवागमन को स्थगित करना पड़ता है और यह अवधि कम-से-कम रखे जाने का प्रयास रहता है। अमान-परिवर्तन के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य ट्रेनों के संचालित रहते हुए ही अल्प अवधि के ब्लाकों में करना पड़ता है।

1. खंड में पड़नेवाले छोटे एवं बड़े पुलों का बीजी मानक के अनुसार नव-निर्माण।
2. बड़ी लाइन के मानक के अनुसार बनने वाले पुलों की ऊँचाई बढ़ जाने के कारण उसके दोनों तरफ की रेल लाइन को उठा कर ढाल को समुचित करना।
3. बड़ी लाइन बनने के कारण उत्पन्न अवरोधों को हटाने का कार्य।
4. स्टेशन एवं यार्डों के री-माडलिंग के कार्य।
5. लगभग 130 मीटर वेल्डिंग की हुई रेल पटरियों को रेल वैगन से उतार कर उचित स्थान पर रखना।

इत्यादि।

अमान-परिवर्तन के कारण होने वाले सामाजिक एवं अर्थिक लाभ निम्नलिखित हैं-

1. आवागमन एवं पर्यटन सुलभ हो जाने के कारण राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।
2. औद्योगिक इकाइयाँ बड़े शहरों से सीधे जुड़ जाती है इससे समय से एवं सुविधापूर्वक कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित होती है। इस कारण उन्हें इनका अनावश्यक भंडारण नहीं करना पड़ता। फलस्वरूप उत्पादन मूल्य में कमी आती है।
3. सवारी तथा माल डब्बों के फेरे बढ़ जाने के कारण रेलवे के आपरेटिंग अनुपात में सुधार आता है।

इस समय पूर्वोत्तर रेलवे पर 532 किमी. अमान-परिवर्तन का कार्य है तथा 2658 किमी. अमान-परिवर्तन के सर्वे का कार्य स्वीकृत है। ✠✠

सेवानिवृत्त कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 97

सोने चाँदी से नहीं किंतु तुमने
मिट्टी से किया प्यार
हे ग्राम देवता नमस्कार

डा. रामकुमार वर्मा

◆ तकनीकी ◆

रेन वाटर हार्वेस्टिंग

के.के.यादव

मानव शरीर की रचना के संबंध में एक चौपाई इसप्रकार है-

छिति जल पावक गगन समीरा
पंच तत्व मिलि बना सरीरा।

अर्थात मनुष्य शरीर के बनने में पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु नामक पाँच तत्वों का योगदान है।

जल के द्वारा हमारे दैनिक क्रिया-कर्म की शुरुआत होती है। सुबह विस्तर से उठने के पश्चात मनुष्य अपने दिन की शुरुआत जल से ही करता है। जल का उपयोग दैनिक जीवन के अलावा खेती-बाड़ी, कल-कारखानों, भवन निर्माण आदि में होता है। जल की प्राप्ति नदियों, तालाबों, कुँओं आदि से होती है। जल का दोहन भूगर्भ से अत्यधिक मात्रा में करने के कारण भूगर्भ जल का स्तर अत्यधिक तेजी से गिर रहा है। अगर भूगर्भ जल का दोहन इसी गति से होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब जमीन से जल की जगह बालू निकलने लगेगा। इस समस्या का समाधान मात्र यह है कि हम सब लोग मिलकर वर्षा के जल का संचयन करें। वर्षा जल संचयन की निम्न पद्धति है-

1. देहाती इलाके में बड़े-बड़े तालाबों का निर्माण कर वर्षा जल का संचयन करना।
2. शहरी क्षेत्रों में स्थित पुराने जलाशयों एवे तालाबों में साफ-सफाई कर वर्षा जल का संचयन करना।
3. भवनों के द्वारा वर्षा के जल को टैंक में इकट्ठा करके।
4. लॉन के अंदर गिरने वाले वर्षा के जल द्वारा।
5. वर्षा के जल द्वारा पुराने कूपों को रिचार्ज करके।
6. नदी एवं नालों पर चेक डैम बनाकर।
7. वर्षा के जल द्वारा भूगर्भ जल स्रोत को रिचार्ज करके।

देहाती क्षेत्रों में वर्षा के जल को नदी-नालों में न बहाकर इस जल के द्वारा तालाबों को भरा जाए तो इससे भूगर्भ जल का स्तर ऊँचा होगा एवं कम खर्च में इस जल का उपयोग खेतीबाड़ी, पशुओं को पीने के अलावा स्नान आदि में किया जा सकता है। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि वर्षा का जल खेती के लिए सर्वोत्तम होता है।

वर्षा के जल की मात्रा की गणना निम्न सूत्र से कर सकते हैं-

V= कैचमेंट एरिया X प्रेसिपिटेशन X (% इफीसिएंशी)

कैचमेंट एरिया = मी²

मूसलाधार वर्षा = मिमी. में

% इफीसिएंशी = वास्तविक जल जो सतह पर गिरा = 75%-90%

स्टोरेज टैंक के निर्माण में उपयोग होने वाला पदार्थ पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए। स्टोरेज टैंक लीक टॉक्सिन, फास्टर पैथागोन्स पदार्थ से नहीं बना होना चाहिए। अगर वर्षा के जल का संग्रह भवन के छत से किया जा रहा हो तो छत में लगे पदार्थ टॉक्सिन-रहित होना चाहिए।

वर्षा जल संग्रह से लाभ

1. वर्षा जल प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनमोल उपहार है।
2. इसको संग्रहित करने से सीवर पाइप लाइन ओवर फ्लो होने से बच सकेंगी एवं नदी नालों में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होने में काफी कमी आएगी तथा सीवर पाइप लाइन में सिल्टिंग की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।
3. भूगर्भ जल का स्तर ऊँचा होगा एवं कम खर्च में हानि रहित प्राकृतिक जल प्राप्त होगा।
4. इस जल में क्लोरिन नहीं होने से पौधों एवं वनस्पतियों के लिए अति उत्तम होगा।
5. महानगर पालिकाओं/नगरपालिकाओं पर निर्भरता कम होगी।
6. नागरिकों पर पड़ने वाले पानी के बिल में पैसों की बचत होगी।
7. भूगर्भ जल के दोहन में इस्तेमाल होने वाली बहुमूल्य ऊर्जा की भी बचत होगी।

अत: हम सबका पुनीत कर्तव्य बनता है कि प्रकृति प्रदत्त इस अनमोल उपहार का संरक्षण करें और समग्र मानव जाति एवं सृष्टि के कल्याण हेतु इस पुनीत कार्य में यथासंभव अपना-अपना सहयोग करें अन्यथा जल के लिए ही अगला विश्व युद्ध भी संभव एवं सन्निकट है। ✠✠

कार्यपालक इंजीनियर/बाढ़
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क:9794840222

◆ लेख ◆

यूनिकोड के हिंदी फांट में टाइपिंग

सपना खरे

अभी तक गैर-यूनिकोड हिंदी के स्थानीय पुराने प्रचलित फांट में हिंदी टाइपराइटर की तरह ही कंप्यूटरों पर हिंदी में टाइपिंग की जाती रही है। परंतु कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने पर स्वत: ही हिंदी का यूनिकोड का फांट मंगल और इंस्क्रिप्ट (INSCRIPT- INDIAN SCRIPT) की-बोर्ड इंस्टॉल हो जाता है।

इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड यूनिकोड फांट में टाइपिंग के लिए मानक की-बोर्ड है और यह सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में पहले से ही उपलब्ध रहता है। इसे भारतीय भाषाओं के लिए यूनिवर्सल की-बोर्ड भी कहा जा सकता है। इसे भारत सरकार ने भी मान्यता प्रदान की है। यह की-बोर्ड इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यूनिकोड फांट को सपोर्ट करने वाली अन्य भारतीय भाषाओं की कुंजियाँ की-बोर्ड पर समान स्थान पर हैं। जैसे- जिस कुंजी पर हिंदी का 'क' है, उसी कुंजी पर बंगला भाषा का 'क' भी होगा। इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड में टाइपिंग सीख लेने पर अन्य भारतीय भाषाओं में भी यूनिकोड फांट में टाइपिंग करना संभव हो पाएगा। यह सबसे उपयुक्त की-बोर्ड है। यह की-बोर्ड अन्य की-बोर्डों की तुलना में जल्दी याद हो जाता है। इससे टाइपिंग की स्पीड बढ़ जाती है। हर प्रयोक्ता को इसे ही सीखने का प्रयास करना चाहिए।

www.ildc.in, www.bhashaindia.com, http://bhashaindia.com/ilit/hindi.aspx आदि अनेकों वेबसाइटों पर विभिन्न प्रकार के टाइपिंग टूल उपलब्ध हैं। इनके माध्यम से रेमिंगटन की-बोर्ड, फोनेटिक की-बोर्ड, लिप्यंतरण आदि पर यूनिकोड हिंदी में टाइपिंग की जा सकती है। इनके अलावा गूगल के इनपुट टूल भी डाउनलोड किए जा सकते हैं।

रेमिंग्टन की-बोर्ड

इस की-बोर्ड से मुख्यत: पहले से हिंदी टाइपिंग मशीन पर कार्य करने वाले प्रयोक्ता जैसे- हिंदी टाइपिस्ट और हिंदी आशुलिपिक प्रयोग करते हैं। यहाँ पर http://bhashaindia.com/ilit/Hindi.aspx की वेबसाइट से माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल जो कि भारतीय भाषाओं हेतु एक टाइपिंग औजार (इनपुट मैथड एडीटर) है और जो ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों ही रूप में उपलब्ध है। इसके माध्यम से रेमिंगटन की-बोर्ड में टाइपिंग करने हेतु सेटिंग करने की विधि बतायी जा रही है। इस टूल में 9 प्रकार के की-बोर्ड हैं- Hindi Transliteration, Hindi Typewriter, Hindi Typewriter Akruti, Hindi Remington (PNB), Hindi Remington (GAIL), Hindi Remington (CBI), Hindi Inscript, Hindi Webdunia Keyboard और Hindi Anglo-Nagri। उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार की-बोर्ड का चयन कर सकता है।

यह टूल विंडोज- एक्स.पी., विस्टा, विंडोज-7 एवं विंडोज-8 पर अलग-अलग संस्करण के अनुसार कार्य करता है। यहाँ पर विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटरों में इसे इंस्टॉल करने की विधि दी जा रही है।

विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटरों मेंHindiIndicInput2 64bit को इंस्टॉल करना:

http://www.bhashaindia.com/Downloads/Pages/home.aspx की वेबसाइट से अपने विंडोज-7 कंप्यूटरों में इंस्टॉल करने के लिए HindiIndicInput2 64bit को डाउनलोड कर लें। उसकी सेटअप फाइल को रन करा लें। कोई भी माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस ऐप्लिकेशन ओपेन करके, जैसे कि माइक्रोसॉफ्ट वर्ड। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड ऐप्लिकेशन ओपेन करें और नीचे दी गई विधि के अनुसार लैंग्वेज बार से हिंदी भाषा का चयन करें।

Show the Language bar__Keyboards__ Hindi Transliteration, Hindi Typewriter, Hindi Typewriter Akruti, Hindi Remington (PNB), Hindi Remington (GAIL), Hindi Remington (CBI), Hindi Inscript, Hindi Webdunia Keyboard, Hindi Anglo-Nagri - में से Hindi Remington (GAIL) का चयन करें।

यह लैंग्वेज बार अब चयनित भाषा दिखाएगी। इस विधि से सेटिंग करके यूनिकोड के हिंदी फांट में रेमिंगटन की-बोर्ड से टाइपिंग की जा सकती है।

फोनेटिक की-बोर्ड

केवल अंग्रेजी अथवा रोमन लिपि में टाइपिंग का ज्ञान होने पर भी हिंदी/देवनागरी में टाइप करने के लिए फोनेटिक टूल्स का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे- अंग्रेजी में ENGINEERING टाइप करने पर हिंदी में 'इंजीनियरिंग' टाइप हो जाएगा। ऊपर दी गई विधि के अनुसार Keyboards में Hindi Remington (GAIL) के स्थान पर Hindi Transliteration का चयन करें। इसप्रकार Hindi Transliteration के की-बोर्ड को चयन कर के रोमन अक्षरों से फोनेटिक की-बोर्ड से टाइपिंग की जा सकती है।

हैंडराइटिंग टूल

भारतीय भाषाओं द्वारा कंप्यूटर पर कार्य करने में सक्षम बनाने में गूगल का भी महत्वपूर्ण योगदान है। गूगल की हैंडराइटिंग ऐप्लीकेशन इसी की एक अंग है। यह ऐप्लीकेशन सभी ऐंड्रॉयड आधारित उपकरण जैसे कि- स्मार्टफोन, टैबलेट, टच-स्क्रीन वाले लैपटॉप आदि

पर कार्य करती है। यह विश्व की 82 भाषाओं को सपोर्ट करती है। इसके ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों संस्करण उपलब्ध हैं। इसे डाउनलोड करके जैसे हम पेन से कागज पर लिखते हैं उसी प्रकार स्क्रीन पर हिंदी लिख कर इनपुट कर सकते हैं।

HindiIndicInput2

इंडिक इनपुट 2 – 32 बिट : 32 बिट वर्ज़न वाले विंडोज़ विस्टा या विंडोज़-7 या विंडोज़ सर्वर 2008 ऑपरेटिंग सिस्टम पर इंडिक इनपुट 2 – 32 बिट इंस्टॉल किया जाए.

इंडिक इनपुट 2 – 64 बिट : 64 बिट वर्ज़न वाले विंडोज़ एक्स.पी. या विंडोज़ विस्टा या विंडोज़-7 या विंडोज़ सर्वर 2003 या विंडोज़ सर्वर 2008 ऑपरेटिंग सिस्टम पर इंडिक इनपुट 2 – 64 बिट इंस्टॉल किया जाए.

Language	Vista/Windows-7 32 Bit	Vista/Windows-7 64 Bit	Help
Assamese	Download	Download	Download
Bengali	Download	Download	Download
Gujarati	Download	Download	Download
Hindi	Download	Download	Download
Kannada	Download	Download	Download
Malayalam	Download	Download	Download
Marathi	Download	Download	Download
Nepali	Download	Download	Download
Oriya	Download	Download	Download
Punjabi	Download	Download	Download
Tamil	Download	Download	Download
Telugu	Download	Download	Download

✠✠

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय, गोरखपुर

नरेश मेहता

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी के यशस्वी कवि श्री मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं। दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इन्होंने काव्य जगत को आधुनिक कविता की नयी व्यंजना के साथ नया नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्व हैं जो उन्हें प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्यत्सुक बनाते हैं। इनके काव्य में आर्ष-परंपरा और साहित्य को नयी दृष्टि मिली। साथ ही प्रचलित साहित्य सम्मानों से एक तरह की दूरी ने उनकी काव्य-शैली और संरचना को विशिष्टता प्रदान की। इंदौर से प्रकाशित **'चौथा संसार'** हिंदी दैनिक के संपादन का काम भी किया। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली, विषयानुकूल, भावपूर्ण तथा प्रवाहमयी है जिसमें शिल्प और अभिव्यंजना के स्तर पर ताजगी और नयापन पाया जा सकता है। सीधे, सरल बिंबों का प्रयोग भी किया गया है। उनके काव्य में रूपक, मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। बी.एच.यू. से एम.ए. किया और ऑल इंडिया रेडियो, इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी रहे। 1992 में **ज्ञानपीठ पुरस्कार** से सम्मानित हुए।

कृतियाँ– **अरण्या, उत्तर कथा, एक समर्पित महिला, कितना अकेला आकाश, चैत्या, दो एकांत, धूमकेतुः एक श्रुति, पुरुष, प्रतिश्रुति, प्रवाद पर्व, बोलने दो चीड़ को? यह पंथ बंधु था, हम अनिकेत।**

◆ लेख ◆

शरणार्थी और विस्थापित

संतोष कुमार पासवान

शरणार्थी और विस्थापित

मानवीय समस्या है। यह छोटी और नयी नहीं बल्कि सदियों पुरानी समस्या है। भारत में यह समस्या आज से नहीं बल्कि सदियों प्राचीन काल से चली आ रही है। यहाँ के ऐतिहासिक साक्ष्य भी मिलते हैं। तत्कालीन समय के शासक अपने शरण में आये हुए लोगों के लिए जान न्यौछावर तक कर देते थे। शरणार्थी और विस्थापित ये दो शब्द भावुक और अंतर्राष्ट्रीय है। जो वर्तमान समय में सभ्यता और समाज के ऊपर प्रश्न चिह्न लगाते हैं।

शरणार्थी और विस्थापित एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसे एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। शरणार्थी और विस्थापित के आशय में मामूली सा अंतर है। शरणार्थी उसे कहते हैं जो वास्तविक रूप से सताया हुआ व्यक्ति होता है जिसे धर्म, जाति, गृह-युद्ध, अकाल, आतंकवाद, नस्लीय संघर्ष, वित्तीय संकट, धार्मिक हिंसा, युद्ध, तानाशाही, लोकतांत्रिक मांग, क्रांति, अशांति के कारण अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में (अंतर्राष्ट्रीय सीमा) के बाहर आश्रय लेना पड़ता है। किंतु उपरोक्त कारणों के चलते देश की सीमाओं के अंदर ही जो आश्रय लेता है तो उसे विस्थापित कहते हैं।

मानवाधिकार की सार्वभौमिकता की घोषणा अनुच्छेद 14 (।) में स्पष्ट रूप से की गई है और उसमें यह प्रावधान किया गया कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को उत्पीड़न से बचने के लिए शरण देने या शरण पाने का अधिकार है। लेकिन वह व्यक्ति जिसके पास एक से अधिक देशों की नागरिकता है, वह शरणार्थी नहीं माना जाएगा। जो शरण लेने वाले देश में प्रवेश करने से पूर्व शांति के विरूद्ध, मानवता के विरूद्ध गंभीर व राजनीतिक अपराध किया हो तो वह शरणार्थी नहीं माना जाएगा।

शरणार्थी शब्द की परिभाषा शरणार्थी से संबंधित अभिसमय और उसके सहमति पत्र में किया गया है जिसके अनुसार शरणार्थी वह व्यक्ति है जो अपनी धर्म, जाति, नागरिकता किसी विशिष्ट समाज वर्ग की सदस्यता या राजनीतिक मान्यता के आधार पर सताये जाने की दृढ़ आशंका के कारण अपना मूल देश छोड़कर आया है और अपने मूल देश लौटने में असमर्थ है अथवा पीड़ित भय की आशंका के कारण अपने देश लौटने को अनिच्छुक हो अथवा जो लोग मूल देश छोड़ अन्यत्र देश में आश्रय लेते हैं तो वह शरणार्थी कहलाएँगे, किंतु हिंसा के कारण मूल देश के अंदर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर आश्रय लेते हैं तो वह विस्थापित कहलाते हैं। भारत में कश्मीरी पंडित जो दिल्ली में सरकारी संरक्षण वाले कालोनी में जीवन व्यतीत करते हैं।

उपरोक्त परिभाषा की परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं क्योंकि शरणार्थी शब्द के अंतर्गत युद्ध, अकाल, महामारी आदि के कारण व्यक्ति यदि अपना मूल देश छोड़ आया है, तो उसे भी शरणार्थी माना जाएगा अथवा नहीं। यह प्रमुख प्रश्न बनकर खड़ा है। क्या यह युद्ध जातीय संघर्ष, नृजातीय संघर्ष, धार्मिक हिंसा आदि के कारण मूल देश से पलायित लोगों पर लागू होता है।

किंतु ऐसा व्यक्ति जो देश के भीतर ही घर-बार छोड़ने के लिए बाध्य हैं और न ही मूल देश में आश्रय की मांग की है, तो उसे शरणार्थी न मानकर विस्थापित की संज्ञा दी जाएगी।

शरणार्थी और विस्थापित की समस्या काफी पुरानी है। लेकिन इस दिशा में सोचने का कार्य विशेष रूप से लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना के समय से लागू होता है। तत्कालीन रूसी क्रांति, आटोमन साम्राज्य का विघटन (तुर्की) प्रथम विश्व युद्ध के उत्तरवर्तीय परिणामों से पीड़ित था। उस समय बड़े पैमाने पर लोग यूरोप तथा एशिया माइनर जाने के लिए बाध्य थे। अर्थात घर-बार छोड़कर अन्यत्र देश में शरण लेना पड़ा। यद्यपि उस समय यूरोप तथा विश्व के लिए शरणार्थी और विस्थापित की समस्या चुनौती बनकर उभरी और सही मायनों में दुनिया परिचित हुई। लीग ऑफ नेशन्स के अंतर्गत शरणार्थी को गतिविधि का आधार प्रस्तावित किया गया। कोई भी शरणार्थी या विस्थापित जिसने वैध कानून से अपने मूल देश अर्थात स्वदेश लौटने में आपत्ति जाहिर की है तो उसे अपने मूल देश लौटने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त 14 दिसंबर 1950 को स्वीकार किया कि जो संस्था शरणार्थी समस्या पर निगरानी करती है। इसके अलावा भी विश्व के कई

महाद्वीपों तथा देशों में शरणार्थी उच्चायुक्त कार्यालय भी है। यूरोप में जेनेवा, अफ्रीका में आदिश अबाबा, एशिया में बैंकाक और अमेरिका में मैक्सिको जो शरणार्थी से संबंधित विधिक अधिकारों की रक्षा करती है।

भारत में शरणार्थी की समस्या स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सामने आयी क्योंकि भारत और पाकिस्तान बँटवारे के उपरांत लाखों लोग बेघर हो गये। पाकिस्तान से भारत आने वाले लोगों को शरणार्थी का दर्जा दिया गया जबकि भारत से पाकिस्तान जाने वाले लोगों को काफिर का दर्जा दिया गया। तत्कालीन भारत में पुनर्वास तथा वित्त आयोग अधिनियम 1948 तथा विस्थापित व्यक्तियों का अधिनियम 1954 के माध्यम से इन शरणार्थी को संरक्षण प्रदान किया गया।

साठ के दशक में एक लाख से ज्यादा तिब्बती भारत में शरण लेने के लिए आये क्योंकि वे चीन के आधिपत्य का विरोध कर रहे थे। दलाई लामा तथा उसके अनुयायी भागकर भारत में शरण लेना पड़ा। तिब्बत शरणार्थी उच्चायोग ने नये तिब्बत शरणार्थी स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या हेतु 3 लाख अमेरिकी डॉलर आवंटित किए। वर्ष 1971 में पाकिस्तान में आम चुनाव हुआ तो पूर्वी पाकिस्तान के नेता शेख मुजीबुर्रहमान ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर ली, लेकिन पाकिस्तानी शासक उन्हें प्रधानमंत्री की कुर्सी न सौंपकर दमनात्मक रवैया अपनाया। बल्कि पश्चिमी पाकिस्तान की सेना ने पूर्वी पाकिस्तान की सेना पर कहर बरसाया। फलत: पूर्वी पाकिस्तान से भारत की ओर लोगों का पलायन शुरू हो गया और भारत में शरणार्थी की बाढ़ सी आ गयी। परिणामस्वरूप मानवता के आधार पर भारत की शांति सेना ने बंग्लादेश की मुक्ति सेना के साथ मिलकर पाक से युद्ध लड़ा और पूर्वी पाकिस्तान को मुक्त कराया। इसप्रकार बंग्लादेश का जन्म हुआ। बंग्लादेश के जन्म के उपरांत अनेक शरणार्थी अपने घरों को लौट गये, किंतु 26 हजार लोग असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, पश्चिम बंगाल में अपने रिश्तेदारों के यहाँ रूक गये। राजनीतिक कारणों से उनका निष्कासन न हो सका जो आज बिकराल समस्या बन चुकी है।

80 के दशक में श्रीलंका में तमिल और सिंहली संघर्ष प्रारंभ हुआ। वहाँ तमिल अल्पसंख्यक थे। फलत: संघर्ष के कारण 2 लाख से ज्यादा लोग भारत आ गये जिससे शरणार्थियों की संख्या भारत में लगातार बढ़ रही है। वहीं एक तरफ तालिबानी हिंसा के कारण भारत में अफगानी शरणार्थी आश्रय पाने के उद्देश्य से भारत में आ पहुँचे तथा वहीं दूसरी तरफ नेपाल में माओवादियों के चलते भारत में लगातार लोग शरण ले रहे हैं।

वर्तमान समय भारत में लगभग 2 लाख मिलियन से अधिक शरणार्थी हैं। भारत एशिया में ही नहीं अपितु दुनिया में शरणार्थियों को आश्रय देने में विशिष्ट स्थान रखता है। यद्यपि शरणार्थियों का विधि-सम्मत कोई करार नहीं है, फिर भी भारत अपने-आप उन शरणार्थियों को आश्रय दे रहा है जो आज भारत के लिए जटिल समस्या बनती जा रही है। वहीं बंग्लादेश के चकमा शरणार्थी आये दिन भारत के अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र पार कर शरण ले रहे हैं। इससे शरणार्थियों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। वहीं माननीय कलकत्ता हाईकोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला दिया कि भारत में 1971 के पहले रहने वाले बंग्लादेशी शरणार्थियों को भारत का ही नागरिक माना जाएगा।

06 जून/2015 को भारत-बंग्लादेश के बीच 41 साल से चले आ रहे सीमा विवाद का अंत हो गया। इन बस्तियों के लोगों को भारत या बंग्लादेश की नागरिकता चुनने का विकल्प दिया गया। साथ ही बाड़ लगाने का कार्य भी शुरू हुआ। इससे शरणार्थियों की आवाजाही और घुसपैठ करने वालों पर रोक लगेगी तथा भविष्य में यह मील का पत्थर साबित होगा।

रोहिंग्या मुसलमान विश्व भर में शरणार्थी के रूप में दर-बदर भटक रहे हैं। म्यांमार में सरकार तथा बौद्ध कटट्र उन्हें म्यांमार का मूल निवासी नहीं मानते। वहीं दूसरी तरफ रोहिंग्या मुसलमानों का कहना है कि म्यांमार में रहते हुए कई शताब्दी हो गया। वहाँ के संसाधनों पर बौद्धिक हक बताता है। वर्ष 2012 में व्यापक दंगे हुए जिसमें लाखों रोहिंग्या मुसलमानों को बंग्लादेश, सऊदी अरब, भारत, मलेशिया व इंडोनेशिया की ओर विस्थापित होना पड़ा। यह स्थिति 10 लाख की जनसंख्या में से दो लाख शरणार्थी और विस्थापित के रूप में रहते हैं।

सीरिया और लीबिया उत्तरी अफ्रीका का देश है जहाँ की जनता हिंसा के कारण यूरोपीय देशों में शरण पाने की इच्छा से भूमध्य सागर का चक्कर लगा रहे हैं। हाल ही के दिनों में गृह-युद्ध से परेशान होकर यूरोपीय देशों की तरफ रूख किए हुए हैं और नावों से भूमध्य सागर पार करने की कोशिश कर रहे हैं। नावों की क्षमता कम होने तथा अतिरिक्त बोझ न झेल सकने के कारण लोगों को

जान तक गँवानी पड़ी। तुर्की तट पर आलयान कुर्द नामक 3 वर्ष का बालक डूब जाने के कारण वह मृत पाया गया जिसे देखकर पूरी दुनिया काँप उठी। वैसे तो शरणार्थी और विस्थापित पर कई लेखकों ने किताबें भी लिखीं तथा कई फिल्म निर्देशकों ने फिल्में बनाकर इस गंभीर समस्या से चिर-परिचित कराने का प्रयास किया है।

प्राचीन काल में सभ्यताओं के संघर्ष के कारण शांति भंग होती थी। इससे कहीं-न-कहीं लोगों का पलायन होता था। जिसके कारण शरणार्थी और विस्थापित की समस्या उत्पन्न होती थी। जैसे- रोम और कारथेज सभ्यता के बीच संघर्ष के कारण प्रभावित हुआ। शरणार्थी और विस्थापित यूरोप महाद्वीप विकसित होने के कारण निजात पा लिए। किंतु अन्य महाद्वीपों के लोगों को मानवीय आधार पर शरण दे रहे हैं। वर्तमान में सबसे अधिक समस्या अफ्रीका महाद्वीप की है जो प्रथम स्थान पर है। एशिया द्वितीय और अमेरिका महाद्वीप तृतीय स्थान पर है।

शरणार्थी और विस्थापित की समस्या अफ्रीका महाद्वीप के सीरिया में सरकार व विद्रोही गुट के कारण लीबिया में इस्लामिक स्टेट (IS) नाइजीरिया में बोको हराम तथा माले में अशांति के कारण शरणार्थी और विस्थापित की संख्या बढ़ी है। जबकि एशिया में अरब क्रांति, लोकतंत्र बहाली, इस्लामिक कट्टरवाद, आतंकवाद के कारण शरणार्थियों की समस्या गंभीर बनी हुई है। अमेरिका महाद्वीप भी इससे अछूता नहीं है। वहाँ भी हिंसा के बारदातों के कारण अन्यत्र स्थान पर जाने के लिए विवश हैं। शरणार्थी और विस्थापित जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

निष्कर्ष में हम यह कह सकते हैं कि शरणार्थी और विस्थापित की समस्या से कोई भी महाद्वीप तथा देश बचा नहीं है, बल्कि यह एक चुनौती बनकर उभरी है जिसका समाधान सिर्फ और सिर्फ स्थायी शांति से ही संभव है। यह अत्यंत विचारणीय प्रश्न है। ✠✠

चपरासी, मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 979244825

कर्रतुल ऐन हैदर

एनी आपा के नाम से जानी जाती हैं। आपके पिता 'सज्जाद हैदर यलदरम' उर्दू के जाने-माने लेखक के साथ-साथ ब्रिटिश शासन में राजदूत भी रहे। आपकी माँ भी उर्दू की लेखिका थीं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा लखनऊ तत्पश्चात अलीगढ़ में हुई। आपने एम.ए. की पढ़ाई लखनऊ से किया। लंदन हीदरलेस आर्ट्स स्कूल से भी शिक्षा ग्रहण किया। आप एक स्वतंत्र लेखिका व पत्रकार के रूप में भी कार्य किया साथ ही बी.बी.सी. लंदन से जुड़ी। **'दि टेलीग्राफ'** की रिपोर्टर, **'इंप्रिंट'** पत्रिका की प्रबंध संपादिका भी रहीं। आप **'इलेस्ट्रेटेड वीकली'** की संपादकीय टीम में भी शामिल रहीं।

आपने बहुत कम उम्र से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था। आपका प्रथम उपन्यास **'मेरे भी सनमखाने'** और **'शीशे का घर'** (कहानी संकलन) प्रकाशित हुआ। आपके बहुत से उपन्यासों का अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी भाषा में हो चुका है। आप साहित्य अकादमी में उर्दू सलाहकार बोर्ड की दो बार सदस्य भी रहीं। आप विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में जामिया इस्लामिया वि.वि. व अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. और कैलिफोर्निया वि.वि. से भी जुड़ी रहीं। 1959 में आपका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास **'आग का दरिया'** प्रकाशित हुआ जिसे आजादी के बाद लिखा जाने वाला सबसे प्रसिद्ध उपन्यास माना गया था। इसमें आपने ई.पू.चौथी शताब्दी से लेकर 1947 तक की भारतीय समाज की सांस्कृतिक व दार्शनिक स्थितियों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया था। आपको **साहित्य अकादमी** और **ज्ञानपीठ पुरस्कार** के अतिरिक्त 1984 में **पद्मश्री** एवं 1989 में **पद्मभूषण** से भी अलंकृत किया गया था।

कृतियाँ

कहानी संकलन- शीशे का घर, सितारों से आगे, पतझड़ की आवाज, रोशनी की रफ्तार।

उपन्यास- मेरे भी सनमखाने, हाउसिंग सोसाइटी, सफीन-ए-ग़मे दिल, आखिरे-शव के हमसफर, आग का दरिया, गर्दिशे-रंगे-चमन, चाँदनी बेगम, यह दाग दाग उजला। 'निशांत के सहयात्री शीर्षक से हिंदी अनुवाद।

◆ लेख ◆

प्राथमिक शिक्षा में सुधार एवं रोजगार की संभावनाएँ

मुकेश प्रधान

देश की आजादी को 68 वर्ष बीत जाने के बावजूद सरकारी नियंत्रण वाले प्राथमिक एव माध्यमिक स्कूलों में न तो शिक्षा का स्तर सुधार पा रहा है और न ही इनमें विद्यार्थियों को जरूरी बुनियादी सुविधाएँ मिल पा रही हैं। बेरोजगारी का दंश अलग हमारे यहाँ के शिक्षितों को झेलना पड़ता है सो अलग। जाहिर है कि प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के सुधार के लिए जब तक कोई बड़ा कदम नहीं उठाया जाता तब तक हालात नहीं बदलेंगे।

शिक्षा की वर्तमान स्थिति तो यह है कि आबादी के लिहाज से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों की दशा में सुधार के लिए अब अदालत तक को आगे आना पड़ा है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अभी अगस्त के उत्तरार्द्ध में अपने एक फैसले में कहा है कि मंत्री और सरकारी अधिकारी तथा सरकारी खजाने से वेतन या मानदेय पाने वाले हर व्यक्ति के बच्चे का सरकारी प्राइमरी स्कूल में पढ़ना अनिवार्य किया जाय। जो ऐसा न करें उसके विरूद्ध दंडात्मक कार्रवाई की जाय। राज्य सरकार इस काम को छः महीना में पूरा करे। यह भी कोशिश करे कि अगले शिक्षा सत्र से यह कार्रवाई लागू हो जाय। सरकार इस काम के हो जाने पर अदालत को रिपोर्ट भी पेश करे। प्राथमिक शिक्षा के ढाँचे में अपेक्षित सुधार के लिए ऐसे कदम जरूरी है।

अदालत ने अपने फैसले में कहा कि जब तक जन-प्रतिनिधियों, जज और अफसरों के बच्चे प्राइमरी स्कूलों में अनिवार्य रूप से नहीं पढ़ेंगे, तब तक इन स्कूलों की दशा नहीं सुधरेगी। यह क्रांतिकारी आदेश न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल ने उत्तर प्रदेश के जूनियर हाई स्कूलों में गणित और विज्ञान के सहायक अध्यापकों की चयन प्रक्रिया पर दाखिल याचिकाओं की सुनवाई पर दिया।

कुछ अपवादों को छोड़ दें तो देश के ज्यादातर प्राथमिक स्कूलों की दशा अच्छी नहीं है। विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में शिक्षकों की कमी है जो है, वे भी बहुत योग्य नहीं मिलते। कहीं स्कूल के लिए भवन अथवा पेयजल अथवा अन्य सुविधाएँ नहीं है। उत्तर प्रदेश देश का विशालतम राज्य है किंतु यहाँ के एक लाख चालीस हजार जूनियर एवं सीनियर बेसिक स्कूलों में शिक्षकों के लगभग पौने तीन लाख पद रिक्त पड़े हैं। जब कई स्कूलों में शिक्षक ही नहीं है तो पढ़ाई कैसे होगी? यह दशा तब है जब पूरे देश में शिक्षा के अधिकार का कानून लागू है। स्पष्ट है कि इस कानून को राज्य सरकारें अपेक्षित गंभीरता से नहीं लेती।

वर्तमान शिक्षा की स्थिति तो यह है कि एक तरफ देश में सरकारी स्कूलों का ऐसा ढाँचा है जहाँ बुनियादी सुविधाएँ और अच्छे शिक्षक नहीं हैं तो दूसरी ओर कार्पोरेट घरानों, व्यापारियों और मिशनरियों के द्वारा बड़े पैमाने पर संचालित ऐसे निजी स्कूलों का जाल-सा फैला हुआ है जहाँ शिक्षार्थियों को सारी सुविधाएँ और गुणवत्तायुक्त शिक्षा मिल रही है। इन्हीं स्कूलों में अधिकारी वर्ग, उच्च वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग के ज्यादातर बच्चे पढ़ते हैं। चूँकि इन स्कूलों में प्रवेश और फीस आम आदमी के बूते से बाहर है लिहाजा निम्न मध्य वर्ग के और सामान्य आर्थिक स्थिति वालों के बच्चे सरकारी स्कूलों के आसरे ही पढ़ते हैं। अधिकारियों के बच्चों के सरकारी स्कूलों में पढ़ने की अनिवार्यता नहीं होने से ही सरकारी स्कूलों की जो दुर्दशा हुई है, उसमें कोर्ट के निर्णय पर अमल होने से सुधार अवश्य होगा।

बेरोजगारी की समस्या से निजात तभी संभव है जब शिक्षा पद्धति रोजगारपरक हो। जैसे टीचिंग के जरिये कैरियर बनाने की अच्छी संभावनाएँ हैं। आज एक पेशेवर शिक्षक बनने के लिए सिर्फ एम.ए., बी.ए. की डिग्री ही पर्याप्त नहीं, अलग से ट्रेनिंग भी लेनी पड़ती है। इसके बाद ही वे शिक्षण संस्थानों में अपनी सेवाएँ दे सकते हैं। अच्छे वेतन के कारण ही युवाओं को शिक्षण का पेशा पसंद भी आ रहा है।

आर्थिक उदारीकरण के बाद शिक्षा एक बड़े उद्योग के रूप में सामने आया है। इसे निजीकरण की व्यवस्था ने खूब बढ़ावा दिया है। व्यवसाय के रूप में देश के कोने-कोने में स्कूल-कालेज और विश्वविद्यालय

खुल रहे हैं। निजी उद्यमी भी इस व्यवसाय में खूब निवेश कर रहे हैं किंतु यदि मामला नर्सरी स्कूल के बच्चें का है तो उसके लिए एन.टी.टी. का प्रशिक्षण जरूरी है। प्राथमिक स्कूल के लिए जे.बी.टी और माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाने के लिए बी.एड.। कालेज में अध्यापन के लिए प्रशिक्षण की जरूरत तो नहीं, किंतु एम.ए. और नेट अथवा डाक्टरेट की जरूरत पड़ती है। देश में शिक्षा का अधिकार विधेयक पारित हो जाने से अध्यापन का भविष्य और भी उज्ज्वल हुआ है। अनेक स्कूलों में इससे शिक्षार्थियों की संख्या बढ़ेगी। इससे शिक्षकों की मांग भी बढ़ेगी। बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नर्सरी के बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण उपयोगी होता है।

जे.बी.टी.या एलीमेंट्री टीचर्स की डिग्रीधारक युवाओं को दो साल की ट्रेनिंग के बाद प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाने का मौका मिलता है। दिल्ली में जहाँ इसे जूनियर टीचर ट्रेनिंग कोर्स कहा जाता है, वहीं उत्तर प्रदेश में इसे बी.टी.सी. कहा जाता है। मध्य प्रदेश में इसे डी.एड. अर्थात डिप्लोमा-इन-एजूकेशन कहा जाता है। यह दो साल का कोर्स है जिसमें दाखिले के लिए न्यूनतम योग्यता बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना है। कहीं इसमें प्रवेश परीक्षा के आधार पर मिलता है तो कहीं मेरिट के आधार पर।

माध्यमिक स्कूलों में पढ़ाने के लिए टी.जी.टी. शिक्षकों की जरूरत पड़ती है। ट्रेंड ग्रेजुएट टीचर बनने के लिए बी.ए. और बी.एड. की डिग्री होनी चाहिए। ये शिक्षक देशभर के स्कूलों में दसवीं तक के शिक्षार्थियों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किए जाते हैं। कालेज में शिक्षण के लिए संबंधित विषय में एम.ए. या एम.एससी. होना जरूरी है। ये शिक्षक 12वीं तक के लिए शिक्षार्थियों के लिए नियुक्त किए जाते हैं।

यह मानना सही नहीं कि बी.एड. या एम.एड. करके सिर्फ टीचर या लेक्चरर ही बना जा सकता है। आप बी.एड., एम.एड. इत्यादि करने के बाद एम.फिल. या पी.एचडी. भी कर सकते हैं। इस क्षेत्र में अनुभव रखते हुए सुपरवाइजर, इंचार्ज, उप प्रधानाचार्य,प्रधानाचार्य चेयरमैन, निरीक्षक, अधिकारी, इंसपेक्टर, सहायक अधिकारी, डेवलपमेंट आफिसर, एजूकेशन चीफ आफिसर, प्रबंधक, सलाहकार इत्यादि भी बन सकते हैं। ऐसे चयन में उन लोगों को प्राथमिकता दी जाती है जिन्हें टीचिंग के क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव हो। बी.एड.करने वालों को चाहिए कि वे अनुशासित और समय के पाबंद हों तभी जीवन में सफलता पा सकते हैं। इसी तरह देश में अनुसंधान के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों से रोजगार के अच्छे अवसर सामने आ रहे हैं किंतु विषय में विशेषज्ञता पहली शर्त है।

शैक्षणिक योग्यता के रूप में शोध के लिए न्यूनतम पचपन प्रतिशत अंकों के साथ पोस्ट ग्रेजुएशन जरूरी है तभी किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय के गाइड के अधीन शोध या अनुसंधान किया जाना संभव है। कुछ विश्वविद्यालयों में प्री-पीएच.डी. टेस्ट भी होते हैं जिसे उत्तीर्ण करने के बाद अनुभवी, मान्यता प्राप्त गाइड चुना जा सकता है जो भी पीएच.डी.करेगा, उसका गाइड प्रमाणित करेगा कि रिसर्चर ने जो कार्य किया है वह मौलिक और स्तरीय है। ऐसे गाइड का चयन न कर जो विषयक का विशेषज्ञ हो। कई अध्यायों में सिनाप्सिस को बाँटकर कार्य करें। सफलता मिलने के बाद निजी संस्थानों और कंपनियों के आर.एंड डी., स्पेशल रिस्पांसिबिलिटी डिपार्टमेंट में भी वरिष्ठ पदों पर नौकरी पा सकते हैं। इसके अलावा इन दिनों अलग-अलग विषयों के अनुवादकों के लिए भी शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसर हैं। ✠✠

मुकार्याधी
मुपरिप्र.कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क:

यह ठीक है, पश्चिम बहुत ही कर रहा उत्कर्ष है,
पर पूर्व-गुरु उसका यही पुरु वृद्ध भारतवर्ष है।
मैथिलीशरण गुप्त

◆ यात्रा वृत्तांत ◆

नीलम प्रभा श्रीवास्तव

ट्रेन अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। ट्रेन की खिड़की के पास बैठकर हरे-भरे खेत, आकाश में उड़ते भाँति-भाँति के पक्षी, खेतों में हल चलाता किसान, खेती के काम में अपने पतियों की मदद करतीं महिलाएँ और भी मनोहारी दृश्य देखने का शौक मुझे बचपन से है। बचपन में तो खिड़की के पास बैठने के लिए छोटे भाई-बहनों से अक्सर लड़ाई भी हो जाया करती थी, पर आज की यात्रा में मेरी निगाहें खिड़की के बाहर से ज्यादा कोच के अंदर के नजारे देखने में व्यस्त थीं।

बरेली जंक्शन स्टेशन से आला हजरत एक्सप्रेस पकड़ने के दौरान स्टेशन पर युवक-युवतियों के उपस्थित झुंड से मैंने अंदाजा लगा लिया था कि कहीं कोई चयन परीक्षा आयोजित होने वाली है। आगे के स्टेशनों पर भी यही दृष्टव्य था। ट्रेन रुकते ही अन्य यात्री के साथ-साथ अभ्यर्थी बच्चों का समूह ट्रेन में सवार होता जा रहा था। यूँ तो एक बर्थ पर तीन यात्री के बैठने की जगह होती है, लेकिन ये बच्चे छः-सात की संख्या में बर्थ पर बैठ रहे थे। बच्चों की बातचीत से ही पता चला कि अजमेर और जयपुर में बैंक की चयन परीक्षा आयोजित हो रही है और बच्चों का काफिला अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर रहा था। कोच में ढेर-सारे युवक-युवतियों की उपस्थिति से पूरा कोच किसी कालेज के क्लास रुम में तब्दील हो गया था। बच्चे कभी साथ लाए पुस्तकों को पढ़ने लगते, कभी किसी विषय को लेकर आपस में चर्चा करने लगते तो कभी अपनी-अपनी जानकारी को एक-दूसरे से बाँटने लगते। इन परीक्षार्थियों में चार माँ भी थीं जो गोद में बच्चे को लिए परीक्षा की तैयारी कर रही थीं। उन्हें देखकर एक सुखद अनुभूति हो रही थी। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ स्वयं के अस्तित्व को तलाशने की उनके बुलंद हौसले किसी भी विवाहिता के लिए प्रेरणास्रोत की तरह लग रहे थे।

कोच के कुछ यात्रियों के लिए बच्चों की भीड़-भाड़ परेशानी की सबब बन रही थी- 'क्या फायदा आरक्षण कराने का? लेटना तो दूर, आराम से बैठ भी नहीं सकते। एक बर्थ पर इतने लोग बैठेंगे तो आराम कहाँ मिलेगा। अभी इन बच्चों को कुछ कह दो तो बड़े होने का लिहाज नहीं करेंगे, लड़ने पर उतारु हो जाएँगे।'- सामने वाली बर्थ पर की महिला लगातार बड़बड़ करती जा रही थी। इतने में कोच के दूसरे छोर से टिकट जाँच करता हुआ एक टी.टी.ई. नजर आया। उसे देखते ही बच्चों में हलचल होने लगी। कुछ बच्चे बर्थ पर बैठे रहे तो कुछ इधर-उधर खिसकने लगे। बाद में पता चला कि इनमें से कुछ बच्चों के पास जनरल क्लास के टिकट थे तो कुछ बेटिकट ही यात्रा कर रहे थे, पकड़े जाने पर जुर्माना भरना पड़ता इसलिए इधर-उधर भाग रहे थे।

टी.टी.ई. टिकट जाँच करता हुआ जब मेरे बर्थ के पास आया तब तक कोच में वही यात्री रह गए थे जिनका आरक्षण था। टी.टी.ई. के पास आते ही बड़बड़ करने वाली महिला ने टी.टी.ई. से शिकायत की- 'मैं बरेली से आ रही हूँ मुझे अहमदाबाद जाना है। इसके लिए मैंने एक महीने पहले रिजर्वेशन करवाया था लेकिन यात्रा में कोई आराम नहीं है। इतने सारे बच्चे कोच में घुस आए और छः-छः, सात-सात की संख्या मे बर्थ पर बैठ गए थे। आपको देखकर भाग गए, अवश्य उनके पास टिकट नहीं रहा होगा। आपको उन्हें रोकना चाहिए यह आपकी जिम्मेदारी है।' महिला की शिकायत पर टी. टी.ई. ने भरोसा दिलाया कि आगे बच्चों को रोकने का प्रयास किया जाएगा। यह कह कर टी.टी.ई. तो चला गया लेकिन उसके जाते ही एक-एक करके बच्चे पुनः कोच में वापस आ गए। ट्रेन चलती जा रही थी और उसके साथ ही यात्रियों का ट्रेन पर चढ़ने-उतरने का सिलसिला भी चलता जा रहा था।

ट्रेन दिल्ली स्टेशन पर आकर रुकी। यहाँ की विराम अवधि अधिक थी तो सभी यात्री अपने खाने-पीने की व्यवस्था में लग गए। कुछ स्टेशन पर उतर कर खाने-पीने की सामग्री की तलाश में लग गए तो कुछ साथ लायी भोजन सामग्री निकालने में व्यस्त हो गए। निर्धारित विराम के बाद ट्रेन पुनः चल पड़ी। ट्रेन अभी कुछ दूरी ही तय कर पाई थी कि एक दूसरा टी.टी.ई. पुनः टिकट जाँच के लिए कोच में आ गया। उसे देखते ही बच्चे इधर-उधर होने लगे। टी.टी.ई. जब मेरी बर्थ के पास आया तो बड़बड़ करने वाली महिला ने पुनः अपनी व्यथा टी.टी.ई. को सुनायी। इस उम्रदराज टी.टी.ई. ने महिला की शिकायत बड़े इत्मीनान से सुनी। फिर महिला से प्रश्न किया- 'आपके कितने बच्चे हैं?'

'दो बेटे हैं' -महिला ने जवाब दिया।

'दोनों क्या करते हैं?' -टी.टी.ई. ने पुनः प्रश्न किया।

'बड़ा पढ़ाई पूरी करके नौकरी करता है और दूसरा अभी पढ़ रहा है।' -महिला ने कहा।

'तब तो आपको पता होगा कि पढ़ाई पूरी करने के बाद आपका दूसरा बेटा इन्हीं जमात में शामिल होने वाला है।' -टी.टी.ई. ने महिला को देखते हुए कहा।

'ये देश की युवा पीढ़ी है जो बेरोजगारी की समस्या से जूझ रही है। जब तक नौकरी की उम्र रहती है इधर-उधर भागते रहते हैं। इनमें से न जाने कितने ऐसे बच्चे होंगे जिन्होंने अपने स्कूल/कालेज की फीस भी बड़ी मुश्किल से जुटाई होगी। अब नौकरी के लिए फार्म भरने में भी काफी पैसा खर्च होता है। ट्रेन में यात्रा के लिए भी टिकट के पैसे लगते हैं। पैसा नहीं होने पर ट्रेन में लुक-छिपकर भी कुछ लोग अपनी यात्रा पूरी कर लेते हैं। इस ट्रेन से चलने वाले सभी टी.टी.ई. को पता है कि तमाम युवा इस ट्रेन में बेटिकट यात्रा कर रहे हैं फिर भी टिकट जाँच में सख्ती नहीं कर रहे हैं जो कि उनकी ड्यूटी है और सरकार इसके लिए उन्हें वेतन देती है। आपकी तकलीफ का मुझे भी अहसास है पर मानवता के नाते आप बच्चों का इतना तो सहयोग कर ही सकती है कि उन्हें बैठने के लिए अपनी बर्थ पर थोड़ी सी जगह दे दें। मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि जयपुर तक सारी भीड़ छँट जाएगी और आप आगे की यात्रा आराम से कर पाएँगी।'

टी.टी.ई. अपनी बात पूरी कर टिकट जाँच हेतु दूसरे कोच में चला गया। टी.टी.ई. की सहृदयता देखकर अच्छा लग रहा था वरना ज्यादातर टी.टी.ई. और यात्रियों के बीच का जो संपर्क देखा था- वह तो बर्थ के लिए यात्रियों का टी.टी.ई. की खुशामद करते हुए और टी.टी.ई. को ऐंठ दिखाने की स्थिति में ही देखा था। बड़बड़ करने वाली महिला शांत हो गई थी। उसने टी.टी.ई. की बात का कोई जवाब नहीं दिया था। पता नहीं उसे अपनी गलती का अहसास हो गया था या फिर इन बच्चों पर रहम आ गया।

मैं सोच रही थी कि रेलवे देश का सबसे बड़ा विभाग है। जिससे देश को सबसे ज्यादा राजस्व प्राप्त होता है। यह न जाने कितने जरूरतमंदों को सहारा देती है। इसके परिसर में न जाने कितने जिंदगी जनम लेती है, पलती है, बढ़ती है फिर भी लोग इसके महत्व को नहीं समझते और इसके संसाधनों को क्षतिग्रस्त करते हैं। जगह-जगह पर लिखे स्लोगन- 'रेलवे आपकी संपत्ति है इसकी रक्षा करें।' या फिर 'इसे साफ रखने में हमारा सहयोग करें।'- को नजरअंदाज करते हुए इसके संचलन में व्यवधान उत्पन्न करते हैं।

शाम के पाँच बजने वाले थे। ट्रेन का अगला पड़ाव जयपुर ही था। यहाँ उतरने वाले सभी यात्री अपने सामान एकत्र करने में जुट गए थे। मुझे भी जयपुर उतरना था तो मैं भी ट्रेन से उतरने के उपक्रम में लग गई थी। ✠✠

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर

वे ही विजयी हो सकते हैं जिनमें विश्वास है कि वे विजयी होंगे।

◆ व्यंग्य ◆

मुस्कराइए कि आप गोरखपुर में हैं

डा.के.के.चंद्र विश्वप्रेमी

हमारे एक दूर के मित्र हैं, दूर के इसलिए कि जब भी हमलोग सड़क पर मिलते हैं तो अक्सर दोनों दो किनारे पर होते हैं और जब सभा-सोसाइटी में भेंट होती है, तो वो अलग बड़े आदमी से मिलने के चक्कर में रहते हैं, मैं अलग उसी चक्कर में रहता हूँ। संयोग से अगर टकरा गए तो दोनों फिर बड़े प्रेम से मिलते हैं और कोई भी व्यक्ति असलियत का अनुमान नहीं लगा सकता है। एक दिन सामने-सामने टकरा गए तो लगे कहने, कोई लेख लिख दीजिए, नहीं कुछ तो व्यंग्य ही लिख दीजिए। मैंने समझाया कि जिसका दिमाग तंग होता है उसके पास कोई व्यंग्य नहीं होता और मेरे पास भी नहीं है। लेकिन मित्र और भूत में यही एक समानता होती है कि जिसे पकड़ लेते हैं बहुत तंग करते हैं। यही बात इनके साथ भी थी। लगे कहने, अरे कुछ नहीं आता है तो अपने शहर पर लिख दीजिए। रेलवे पर लिख दीजिए, ट्रैफिक भी एक अच्छा टॉपिक है लिखने के लिए और मुझे भी लगा अपने शहर पर लिखना आसान है, सो मैंने अपने शहर गोरखपुर पर लिखने को ठान लिया।

जैसे मैंने लिखा मेरे शहर का नाम गोरखपुर है, मुझे लगा कि यह तो गलत हो गया, यह नाम इस शहर का कैसे हो सकता है, यहाँ तो लोग गाय दुहने के बाद ही सड़क पर खदेड़ देते हैं। इसका नाम तो 'गोखदेड़ पुर' होना चाहिए, क्योंकि अब हमारे में उन पूर्वजों वाली बात तो रह नहीं गई है, अत: नाम बदलने पर जरूर सोचना चाहिए। बहरहाल, यह बाद की बात है, सोचा आगे चलूँ और चौहद्दी ही लिख दूँ, वहीं अटक गया। असली हमें याद नहीं आ रही थी और चालू वाली आप लोग मानने को तैयार नहीं होंगे। लेकिन चौहद्दी आवश्यक होती है, नहीं तो गोरखपुर देवरिया में भी बढ़ जाएगा। अत: चालू चौहद्दी दे रहा हूँ। अगर सहमत हों तो संपादक महोदय को ही समझाइएगा। हर चीज बिना काट-छाँट के छाप देते हैं। इस शहर के एक तरफ 'कूड़ाघाट' दूसरी तरफ 'डोमिनगढ़' तीसरी तरफ है 'नौसड़' यानी दस सामान रखिएगा तो नौ सड़ जाएगा और चौथी तरफ है 'बरगदवा'। बरगदवा से हमारा बचपन का नाता है, जब हम गले में 'गाँती' बाँध कर देह में कड़ू का तेल की चपाचप मालिश करा कर धूप में बैठते थे, तो साथ में दादी की कड़ी नसीहत भी होती थी- 'बाबू बरगदवा के नीचे मत जइयें, वहाँ दिन में भूत और रात में चुड़ैल रहती हैं।' रात में पेड़ पर जुगनू चमकता देखकर हम भी मान लेते थे कि चुड़ैल सब खाना बना रही है, अत: बरगदवा के बारे में हम कुछ नहीं कहेंगे बाकी तीन से तो आप का पूरा परिचय है ही।

मित्रों! हमारा शहर बहुत बड़ा है, लेकिन इसमें अभी तक यहाँ घर नहीं बन पाये हैं, यहाँ सी.एम.,डी.एम. और जी.एम. सभी रहते हैं लेकिन पता नहीं क्यों अभी तक घरों की संख्या केवल दो पर ही अटकी है, एक गोलघर दूसरा घंटाघर और मजे की बात देखिए यहाँ आदमी नहीं रहते हैं, सब दुकानें हैं, यहाँ आदमी हाते में रहते हैं जैसे बेतियाहाता, तिवारी जी का हाता और पांडेय हाता। अब हमारे समझ में आया कि हाते के जानवरों को हाँक कर हमलोग सड़क पर कर दिए और खुद हाते में काबिज हो गये, तो सड़कों पर जानवर क्यों नहीं दिखाई देंगे। वैसे हमारे शहर की एक खास बात है कि यहाँ सभी का बहुत आदर-सम्मान होता है, अपने लिए भले ही घर नहीं बना पाये , पर जो किसी के भी खास न हो , जो कभी भी कहीं भी धोखा दे सके, या जिनपर कभी भी भरोसा न कर पाएँ, उनके लिए हमारे शहर में पूरा एक मुहल्ला है 'नखास'। अगर आप भी वहीं रहते हैं तो बुरा मत मानिएगा, क्षमा कर दीजिएगा, थोड़ा साफ-साफ बोलने की आदत है, इसी नाते डर कर असुरों के मुहल्ले 'असुरन' के बारे में कुछ नहीं लिख रहा हूँ।

शहर की यातायात व्यवस्था में यहाँ के पुलों की बड़ी अहमियत है। सभी पुल शहर की पहचान हैं, जैसे थवई का पुल, रेती का पुल, मखनिया का पुल, गोड़धोइया का पुल, कप्तानगंज का पुल। किसी भी रिक्शे वाले से कहिए तुरंत पहुँचा देगा। अगर आप कंपोजीटर क्वालिटी के आदमी नहीं हैं और घर में खुद्दी बीनने की आदत नहीं है तो आपको उसके नीचे नदी की तलाश नहीं करनी चाहिए नहीं तो आप भी उसी तरह फँस जाएँगे जैसे सरस्वती नदी की तलाश करने के

चक्कर में सरकार फँस गई थी। कृपया रोडवेज के नियमों का पालन करें कि यात्री अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करे, दूसरे के चक्कर में न पड़े, नदी-नाला न तलाशे, अपना काम निकालें और रास्ता नापें।

भाई, लेख हमेशा छोटा ही अच्छा होता है। बड़ा लिखने में गड़बड़ होने की गुंजाइश वैसे ही होती है, जैसे हमारे मित्र के साथ है। हमसे बराबर कहते हैं कि हम 'आज' के संवाददाता हैं और अभी तक का रिकार्ड है कि जो भी उनके सौजन्य से अखबार में छपा है, वह कम से कम चौबीस घंटे की बासी खबर होती है। ऐसा कुछ नहीं है कि सबेरे पिटाई हुई और शाम को अखबार में आ जाए। अगर आपको पता लगाना है कि कितनी पिटाई हुई तो दूसरे दिन सबेरे का ही अखबार उसे बता पाएगा। फिर भी हम मान लेते हैं कि कहते हैं तो सच ही होगा। इन्हीं शब्दों के साथ आपको भी 'जय राम जी की'। अगर कहीं कोई बात लग गई हो तो क्षमा कीजिएगा उसे दिल से निकाल दीजिएगा।

हाँ, एक चीज और बता दें, हमारे शहर से पंगा लेने की कोशिश मत कीजिएगा, वरना बड़ा भारी पड़ेगा। बाद में न कहिएगा कि बताये नहीं, इसीलिए बता देता हूँ कि गौतम बुद्ध जी आये थे सुधारने, कुशीनगर नहीं पार कर पाये, महावीर स्वामी भी पावा नगर से आगे नहीं जा पाये, कबीर दास तो मगहर में ही यात्रा रोक दिए और भगवान गोरक्षनाथ भी आये तो यहीं के होकर रह गये। अत: आप अपनी औकात समझ लीजिए, उस समय यह सब स्थान गोरखपुर में ही था और आज का गोरखपुर तो और गोल-मटोल होकर पावरफुल हो गया है। अत: सब बचा के काम कीजिएगा, कोई हड़बड़ी नहीं है। स्वस्थ रहिए-मस्त रहिए। ✠✠

भूतपूर्व प्राचार्य, डी.ए.वी.डिग्री कालेज, गोरखपुर
710, गोकुल अपार्टमेंट्स
हुमायूँपुर, गोरखपुर (उ.प्र.)
संपर्क: 09336415844

बाबू देवकी नंदन खत्री

हिंदी के प्रथम तिलिस्मी लेखक के रूप में जाने जाते हैं। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में उनके उपन्यास **'चंद्रकांता'** का बहुत बड़ा योगदान रहा है। गैर-हिंदीभाषियों ने इनके उस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। इन्होंने 'तिलिस्म', 'ऐय्यार', 'ऐय्यारी' जैसे शब्दों को हिंदी भाषियों के बीच लोकप्रिय बनाया। आपने अपनी विख्यात रचना **'चंद्रकांता'** के लिए जितने हिंदी पाठक उत्पन्न किए उतने किसी और ग्रंथकार ने नहीं किया।

आपकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू-फारसी, बाद में हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में हुई। आपने वाराणसी में एक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी। 1883 ई. में आपने हिंदी मासिक 'सुदर्शन' की शुरुआत की। आप सैर-सपाटे के अत्यंत शौकीन थे। खत्री जी बिहार के चकिया और नौगढ़ के बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन इमारतों के खंडहरों की खाक छानते रहते थे। इसी की पृष्ठभूमि पर आधारित तिलिस्म और ऐय्यारी के कारनामों की कल्पनाओं को मिश्रित कर आपने **'चंद्रकांता'** की रचना की। आपका मुख्य लक्ष्य था ऐसी रचना करना जिससे देवनागरी हिंदी का प्रचार-प्रसार हो सके। आपकी भाषा इतनी सरल, सरस व रोचक है कि 5वीं कक्षा का छात्र भी उसे आसानी से पढ़ लेता था। आपकी रचनाओं की तिलिस्मी रोचकता के चलते लोग पढ़ते-पढ़ते अपना खाना-पीना तक भूल जाते थे।

आपकी कृतियों में मुख्यत: **'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति', 'काजर की कोठरी', 'नरेंद्र मोहिनी', 'कुसुम कुमारी', 'गुप्त गोदना', 'वीरेंद्र वीर उर्फ कटोरा भर खून', 'भूतनाथ'** (अपूर्ण) है। **'भूतनाथ'** आपकी अपूर्ण रचना थी जिसे आपकी मृत्यु के बाद आपके पुत्र दुर्गा प्रसाद जी ने पूरा किया।

◆ गीत ◆

यंत्रालय संरक्षा गीत

ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'

अनुशासन में रहना सीखो,
अच्छी बातें कहना सीखो।
स्वास्थ्य, सुरक्षा, दूर-दृष्टि से-
सब भारत वासी सा दीखो।
स्वाभिमान की रक्षा से, रेल की प्रगति कराना है
संरक्षा का पालन करते, कार्य स्थल पर आनाहै।।1।।

स्वच्छ बने परिवेश हमारा,
स्वस्थ्य रहेगा, तब जग सारा।
तकनीकी हम ज्ञान बढ़ाएँ,
समय का पालन करें-कराएँ।
उत्पादन अब बढ़ना है, सूर्य क्षितिज से चढ़ना है।
भारत की पहचान विश्व में, नंबर एक बनाना है।।2।।

जूता पहन कर शाप में जाएँ।
हेल्मेट सिर पर आप लगाएँ।
ढीले कपड़े कभी न पहनें।
व्यर्थ में पानी न दें बहने।
ऊर्जा संरक्षण हे मित्रों! हमको हर पल करना है।
संरक्षा का पालन करते कार्यस्थल पर आना है।।3।।

श्रम दान से करें सफाई,
कचरे का हम करें ढुलाई।
धूम्रपान न करें, सार्वजनिक-
जलती तीली नहीं फेंकना।।
संरक्षा का पालन करते कार्यस्थल पर आना है।
दुर्घटना ना घटने पाए, आग से हमें बचाना है।।4।।

ओवर हेड क्रेन से बचना,
ट्रैवरसर से कोच खींचना।
वेल्डिंग में सतर्क है रहना,
साड़ी, ओढ़नी नहीं दें फसना।।
ऐप्रन पहन मशीन पे जाकर, दुर्घटना से बचानाहै।
संरक्षा में ढील का कोई, होता नहीं बहानाहै।।5।।

अग्नि शमन यंत्र संचालन,
बालू पानी का रख साधन।
रखें सतर्क दृष्टि परिसर में,
संरक्षा नियमों का पालन।
हम हैं श्रमिक रेल के मित्रों! स्वाभिमान यह लाना है।
संरक्षा का पालन करते, यंत्रालय में आना है।।6।।

मन में भाव प्रथम रहने का,
रेल राजस्व बचत करने का।
आज करें संकल्प हम सभी-
उत्पादन बढ़ते रहने का।।
गोरखपुर यंत्रालय का, गौरव हमें बढ़ाना है।
हम हैं श्रमिक रेल के मित्रों! स्वाभिमान यह लाना है।।7।।

'धुनी' मानते जीवन अपना
है, बहुमूल्य हमारा सपना।
बचें-बचाएँ काम बढ़ाएँ-
यह संदेश ध्यान में रखना।।
सभी बड़ों की बात जो माने, गुणवत्ता को लाना है।
संरक्षा का पालन करते, कार्यस्थल पर आना है।।8।।

हम हैं श्रमिक रेल के मित्रों! स्वाभिमान यह लाना है।
संरक्षा का पालन करते, कार्यस्थल पर आना है।।

प्रधानाचार्य
प्रारंभिक प्रशिक्षण केंद्र/बी.टी.सी.
यांत्रिक कारखाना, गोरखपुर
संपर्क: 9771443276

है एक लिपि विस्तार होना योग्य हिंदुस्तान में।
अब आ गई है यह सभी विद्वजनों के ध्यान में।
है किंतु इसके योग्य उत्तम कौन लिपि गुण आगरी।
इस प्रश्न का उत्तर यथोचित है उजागर 'नागरी'।

मैथिलीशरण गुप्त

◆ कविता ◆

कामर्शियल ब्रेक

अनिल कुमार दत्ता

मैं गुड़िया हूँ।
अब बड़ी हो गयी हूँ,
मनुष्यता भोग चुकी हूँ।
अब पशुता से डर नहीं लगता।
उसे पशु कहना....
पशुता का अपमान होगा।
कम-से-कम पशुओं में
नहीं पायी जाती है ऐसी निकृष्टता
ऐसी विकृति, घिनौनी प्रवृत्ति।
पशुओं में कम-से-कम
रक्त संबंधों और उम्र का
लिहाज तो रहता है।
अब भी प्रतिदिन उधेड़ी जाती हैं
कितनी ही निर्दोष, मासूम गुड़ियाएँ।
हर शाम निकलती हैं सड़कों पर
शांत, जलती, मोमबत्तियों की
उदास कतारें मूल्य की तलाश में।
अब भी हर बार याद आ जाती है मुझे
वह यातना, वह वेदना।
तथाकथित मनुष्यता उस दिन अचानक
दरिंदगी और क्रूरता की
हदें पार कर गयीं।
चूर हुए अरमान,
स्वप्न हुए चीथड़े,
एक अनमिट अंधकार घोल गयी
मेरे कोंपलाते-पनपते जीवन में।
असह्य पीड़ा, अंतहीन वेदना।
किसी बड़े, खाली, बदबूदार
फाइबर-ड्रम में
किसी सिर कटी मुरगी की-सी
मेरी भी तड़प, फड़फडाहट गूँजती रही
अंधेरे, बदबूदार कमरे में-
देर तक,
बहुत देर तक,
शायद बहुत देर हो जाने तक।
मेरी मासूम, घुटती चीखों से
फट पड़ रहा था
कंक्रीट की पक्की दीवारों का भी
कलेजा।
कमरे में बंद डरी, सहमी-सिमटी चुप्पी
बार-बार पूछ बैठती एक मूक सवाल-
न जाने किससे।
किस अपराध की सजा है यह?
बहरहाल-
अब भी चिड़ियों द्वारा खेत पूरी तरह
चुग लिए जाने के बाद भी शुरू होती हैं
सभी नैतिक-अनैतिक,
न्यायिक-अन्यायिक प्रक्रियाएँ।
न्यूज चैनलों पर प्रायोजित
बहसों के गरम बाजार में
ठंडी चर्चाएँ होती हैं,
झंडों और बैनरों के बीच
आपसी खींच-तान का पर्व,
एक-दूसरे के से ठीकरा फोड़ने का
त्योहार होता है।
दरिंदों के लिए अधिक-से-अधिक,
कठोर-से-कठोर सजा की
बढ़ती मांग के साथ
घट जाती है शिकार हुई गुड़िया की
उम्र हर बार।
कुछ और नीचे गिर जाता है
हर बार स्तर दरिंदगी का।
बढ़ जाते हैं हर बार किंतु
हौसले दरिंदों के।
और टी.आर.पी.न्यूज चैनल के।
कदाचित, आस्था और विश्वास
खो चुकी मनुष्यता से अब
डर लगने लगा है मुझे।
पता नहीं, मुझमें इस बदलाव के लिए
कौन जिम्मेदार है।
खुद मैं, या कि मूल्य
या कि विकृत मानसिकतायुक्त

वह तथाकथित पुरुष-
जिसे यह विश्वास होता है कि
उसकी अपनी गुड़िया के साथ
ऐसा कदापि नहीं होगा।
रंगीन टीवी-स्क्रीन पर,
मेरे साथ हुए खौफनाक हादसे की
लंबी फूटेज के बीच
जले पर नमक-मिर्च छिड़कते हुए
सवालों और बहसों के बीच
निर्धारित कामर्शियल ब्रेक में
अब भी सजता एक बाजार होता है।
भरपूर पौरुष, मर्दाना ताकत व
जोश के लिए जिसमें
शक्ति, बल, जोश-वर्द्धक
उन गोलियों और कैप्सूलों का
जरूरी प्रचार होता है।
वर्तमान में हैं जो रेग्यूलर यूज में।
ब्रेक की समाप्ति तक
पहली से भी कम उम्र की
एक और बदनसीब गुड़िया
जगह पा चुकी होती है
ब्रेकिंग न्यूज में....।

कार्याधी, विधि कार्यालय/कार्मिक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9005092337

◆ कविताएँ ◆

सुधीर कुमार चंदन

कलाम हजार सलाम

'मिसाइल मैन' मानों उपनाम-सा बन गया
सपना साकार किया जो बस दृढ़ मन गया
फूल बन निजी गुण-सुगंध से सुरभित रहे
उफ! आज वो मुरझाकर इस वतन-चमन गया।
निज देश-विदेश के जन-जन नयन नम-नम हैं
सूखें कैसे, बताओ भिगोते जो ग़म हैं
हाथ से निकले, हाथ मलते रह गए सभी
दिल-दिल गवाह सब तरफ बिखरे गम-ही-गम हैं।
मानवता से सदैव साधा सच्चा नाता
गुणगान बेहद सदा बच्चा-बच्चा गाता
साहस, उमंग मानवता का सबक सिखाया
जीवन में इनसे जन-जन बन अच्छा पाता।
जहाँ चरण धरे हर जगह हाथों-हाथ लिया
'कर्मठता के सहन' में भाग्य ने साथ दिया
कदम जो उठाया, पीछे ना कभी हटाया
तभी तो सफलता ने सिर पर रख हाथ दिया।
हिंद-हीर छीन कुदरत तूने यह क्या किया
देकर ग़म अरे ओ विगत! तूने यह क्या किया
'चंदन' चंद दिन और बख़्शती चंद साँसें
साँसें छीन वक्त-ताकत तूने यह क्या किया।
कुदरत ने भावी सपन-सपन चूर-चूर किया
बुला अपने पास सभी से दूर-दूर किया
साधना था सदा-सदा संग कुछ पाने को
श्रद्धांजलि देने क्यों आज मजबूर किया।

पाक पैगाम

मेरे प्यार का पाक पैगाम पढ़ लो साथियो!
मेरे प्यार का पाक पैगाम पढ़ लो साथियो!
नेक राह की ओर तेजी से बढ़ लो साथियो
अमन अड़ा हुआ है तुम्हारी संगत आने को
बस, इंसानियत कामूलमंत्र पढ़ लो साथियो!
मेरे प्यार का पाक पैगाम पढ़ लो साथियो!
दिल में अपनेपन की तस्वीर जकड़ लो साथियो
सुखद संग का हाथ-में-हाथ पकड़ लो साथियो
हैवानियत का खयाल ग़र ज़ेहन में घुस जाए
बाइबिल, गीता, क़ुरआन तुरत पढ़ लो साथियो
मेरे प्यार का पाक पैगाम पढ़ लो साथियो!

भूतपूर्व निजी सचिव
341, मेकनियर रोड
प्रेमनगर, बरेली-243005
संपर्क: 09997689075

सफलता के लिए कोई लिफ्ट नहीं जाती इसलिए सीढ़ियों से ही जाना पड़ेगा।

◆ कविताएँ ◆

शंभू नारायण

1. अकिंचन

कीचड़ में खिला फूल हूँ
मुझमें सुगंध क्या?
अक्सर हवा से गंध
चुराता रहा हूँ मैं
कीचड़ में खिला फूल हूँ।
कितने नगर बसाये थे, कलियों के ख्वाब के
पर दश दिशा भी ढूढ़ के, लौटे हैं हार के
बरबादियों की फूँक से, उड़कर गिरी जो राख
मुट्ठी में उसको ले के, खड़े हम कगार पे
कल-कल नदी बहाती मेरा जलता आशियाँ
अक्सर लहर की नाव बनाता रहा हूँ मैं
कीचड़ में खिला फूल हूँ।

2. अनुभव

मधुशालाएँ खुलीं बहुत हैं
पीने वाले पीते हैं
हम साकी से दूर बहुत हैं
बोलो कैसे? जीते हैं।
मधुशालाएँ खुलीं बहुत हैं।
पैमाने को जिसने तोड़ा
तोड़ा है जी भर-भर के
हम लौटे हैं- दर से तेरे
टुकड़े-टुकड़े हो कर के
डूब रहे दिन को देखा है
आँखों की खुमारी में
चैन कहाँ मिलता है? किसको?
यूँ-दिल की ऐयारी में
इस अतीत में- शाम, बुत्त है
प्यास-ही अधर पीते हैं।
मधुशालाएँ खुलीं बहुत हैं।

3. प्रश्न

जिंदगी-क्यों आह भरे-रे
प्रतिशोधों से दहक रही है, जीवन की प्राचीर
प्राणों का पंछी घायल है, मरहम लिए फकीर
घेरे-घन-श्याम घने रे-।
जिंदगी-क्यों आह भरे-रे।
चंदन में किसके घर्षण ने, अग्निपुंज भर दी
संवेदना हुई क्यों निष्ठुर, पूछ रही हल्दी
हमदर्दी-क्यों बिसुरे-रे।
जिंदगी-क्यों आह भरे-रे।

4. कलरव

अच्छा लगता है
आँगन में चिड़िया का आना
कभी-कभी खुद से बतियाना
अच्छा लगता है।
भोली बातें सुन कब कोई
पंख तोड़ दे, सपनों के
अंतराल का ताल-दूर के दृश्य
दिखाये अपनों के
कैनवास पर रंग लुटाना
चित्रों से पाना-अनजाना
अच्छा लगता है।

5. आश

ऐसा आकाश न दो
रेत की प्यास नहीं
याद मधुमास नहीं
एक उलझन में पले
मेरा विश्वास कहीं
तुम मुझे नीड़ के स्वप्नों का तो आभास न दो
ऐसा आकाश न दो।

6. सहबोध

दूरी कितना पास बनाऊँ?
आज स्वप्न में, बोल उठा मन
प्रिय, तुझको कितना बहलाऊँ?
दूरी कितना पास बनाऊँ?
दर्द हमारा लेकर जाने
तुम कितनी पीड़ा पाते हो
स्निग्ध हृदय में कैसे चुप-चुप
इतना सारा सह जाते हो
कहने की शृंखला विकल है
कैसे तुम्हें न और बुलाऊँ?
प्रिय तुझको सुधि अंतर्मन की
देने को घन रंग उकेरे
झलक नियति है प्रेम नटी की
मुझे नयन नत अलक घनेरे
कौंध रही है चंचल दामिन,
अनकह दृश्य किसे दिखलाऊँ?
दूरी कितना पास बनाऊँ?

मकान नं. सी/116/455
मुहल्ला मियाँ बाजार पश्चिम फाटक
प्रधान डाकघर, जिला-गोरखपुर-273001
संपर्क: 0551-2108503

◆ **कविताएँ** ◆

बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

रेल के दोहे

रेल करे सेवा सदा सबकी एक समान,
जाति धर्म के भेद की यहाँ नहीं पहचान।
रेल एकता की कड़ी जोड़े देश-प्रदेश,
चरैवेति का मनुज को देती है संदेश।
रेल देश की रीढ़ है रेल अनंत विकास,
लिखती है यह रात-दिन जीवन का इतिहास।
रेल संपदा देश की रहे हमेशा ध्यान,
हम इसकी रक्षा करें यह कर्तव्य महान।
रात-दिन होता जा रहा रेलों का विस्तार,
रेल प्रगति के पंथ का है अनुपम आधार।
आओ लेकर टिकट यदि करना चाहो सैर,
सभी यात्री बंधुकी रेल मनाए खैर।
घर जैसी सुविधा यहाँ घर जैसा आराम,
खाने-सोने का करे रेल प्रबंध तमाम।
गाँव-नगर को जोड़ती रेल करे उजियार,
पर्वत जंगल घाटियाँ करती पल में पार।
अन्न वस्त्र सब वस्तुएँ ढोती है दिन-रात,
रेल करे हर क्षेत्र में खुशियों की बरसात।

फूले लाल पलाश

आधी रात फूलता बेला
महुए चुएँ सवेरे,
शतदल और गुलाब खिलें
जब किरन प्रात की हेरे।
कलरव में डूबते बाँसवन
पुरवा सीटी मारे,
महके मह-मह मंजरियों से
बगिया नदी किनारे।
फूले लाल पलाश हँसे दिन
अमलताश के आये,
घनी डाल पत्तों में बैठी
कोयल राग सुनाये।
वासंती उमंग में भूले
पथ के बंधन सारे,
उड़े हंस गीतों के नभ में
अपने पंख पसारे।

इंद्रपुरी, पोस्ट-मानसनगर
लखनऊ-226023 (उत्तर प्रदेश)

◆ **कविताएँ** ◆

प्रवीण कुमार सिंह

एक

हम जख्मों के सौदागर हैं
दर्द को हँस कर सह लेते हैं
बंद जुवाँ रखते हैं लेकिन
आँखों से सब कह लेते हैं

मन की पीड़ा मन से कहते
नहीं ग़मों से हम हैं डरते
तन्हाई को मीत बना कर
ख्वाब संजोते हम रहते हैं

अश्कों को मोती कर लेते
हम यादों के ख्वाब पिरोते
तेरे सब झूठे वादों को
नाम वफा का हम देते हैं

कतरा-कतरा सागर बनता
बूँद-बूँद से गागर भरता
हर धड़कन में प्यार सँजोंकर
प्यार लुटाते हम रहते हैं।

दो

रूठ कर आप मुझसे कहाँ जाएँगे
कब तलक दूर मुझसे यूँ रह पाएँगे।

आँख होती है हर एक दिल की जुवाँ,
कुछ कहे बिन ही हर बात कह पाएँगे।

आप को याद हर पल मेरी आएगी,
कब तलक प्यार को आप झुठलाएँगे।

आप ही से है जन्मों का रिश्ता जुड़ा,
तोड़ कर हमसे रिश्ता न रह पाएँगे।

हर तरफ होंगे चर्चे मुहब्बत के जब,
रोकते-रोकते आप रह जाएँगे।

जब यादें सताएँगी तन्हाई में,
खुद-ब-खुद अश्क आँखों में भर जाएँगे।

जन संपर्क विभाग
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9935757146

◆ ग़ज़लें ◆

सुशील 'साहिल'

एक

दिल में उम्मीद तो होठों पे दुआ रखता हूँ
तुम चले आना मैं दरवाजा खुला रखता हूँ

ये तेरा हुस्न अगर जलता शरारा है तो क्या
मैं भी जज़्बात की जोशीली हवा रखता हूँ

राहे-उल्फ़त में तू अपने को अकेला न समझ
दिल में चाहत का दिया मैं भी सदा रखता हूँ

खुशनुमा मंज़रों - तस्वीर न गुल बूटे से
अपने कमरे को दुआओं से सजा रखता हूँ

अपनी औक़ात नहीं भूल न जाऊँ 'साहिल'
इसलिए महल में मिट्टी का घड़ा रखता हूँ

दो

गालों पर बोसा दे देकर मुझको रोज़ जगाती है
छप्पर के टूटे कोने से याद की रौशनी आती है

दालानों पर आकर, मेरे दिन निकले तके सोने पर
कोयल, मैना, मुर्गी, बिल्ली मिलकर शोर मचाती है

सबका अपना काम बँटा है आँगन से दालानों तक
गेहूँ पर बैठी चिड़ियों को दादी मार भगाती है

यूँ तो है नादान अभी, पर है पहचान महब्बत की
जितना प्यार करो बछिया को उतनी पूँछ उठती है

लाख छिड़कता हूँ दाने औ' उनपर जाल बिछाता हूँ
लेकिन घर कोई चुहिया मुझको हाथ न आती है

शाम सबेरे छोटे-छोटे बच्चों के स्वर से निकली
रामायण की चौपाई मेरे दिल को छू जाती है

मेरी रोटी और पकाए उसकी साग कहीं सीझे
एक ही माचिस की तीली सब चूल्हों को सुलगाती है

तीन

फ़रिश्ता हूँ न कोई देवता हूँ
खिलौना हूँ मैं मिट्टी से बना हूँ

दग़ा खाने में तू रहता है आगे
दिले-नादान मैं तुझसे ख़फ़ा हूँ

सिला मुझको भलाई का भला दे
ज़ियादा कुछ नहीं मैं मांगता हूँ

मैं जबसे लौटा हूँ दैरो-हरम से
पता सबसे खुदा का पूछता हूँ

मेरा चेहरा किताबे-ज़िदगी है
ज़ुबां से मैं कहाँ कुछ बोलता हूँ

चार

ज़ुल्फ जब उसने बिखेरी बज़्मे-ख़ासो-आम में
फ़र्क़ बेहद कम रहा उस वक़्त सुब्हो-शाम में

झाँककर परदे से उसने इक नज़र क्या देख ली
जी नहीं लगता हमारा अब किसी भी काम में

सिर्फ़ ख़ाकी, खादी पर उठती रही हैं उंगलियाँ
मुझको तो नंगे नज़र आये हैं सब हम्माम में

मान-मर्यादा, ज़रो-ज़न, इज्ज़तो, ग़ैरत तमाम
क्या नहीं गिरवी पड़ी है ख़्वाहिशे-ईनाम में

एक दिन में मुफलिसों का दर्द क्या समझेंगे आप
कुछ महीने तो गुज़ारे आके ख़ासो-आम में

हैफ़ 'साहिल' तू ने भी तोड़ा भरोसे का भरम
बिक गई खुद्दारियाँ तेरी भी सस्ते दाम में

सी. 11/22,
ऊर्जानगर कालोनी, महागामा,
जिला-गोड्डा-814154 (झारखंड)
संपर्क: 09955379103

किसी की करुणा व पीड़ा को देखकर मोम की तरह दयार्द्र हो पिघलने वाला हृदय तो रखो, परंतु विपत्ति की आँच आने पर कष्टों-प्रतिकूलताओं के थपेड़े खाते रहने की स्थिति में चट्टान की तरह दृढ़ व ठोस भी बनो रहो।

द्रोणाचार्य

◆ कविताएँ ◆

किरन श्रीवास्तव

योग

काया रहे निरोग
कर ले तू भी योग,
दर्शन करके उदित सूर्य का
तन-मन को पावन कर लो
रग-रग में ऊर्जा भर कर
जन-जन को जाग्रत कर दा
इतना दो सहयोग
कर ले तू भी योग
आदि काल से चरम शिखर तक
ऋषि-मुनियों से ज्ञान योग में
निरोगी जीवन संयमित मन
ध्यान है योग, योग है जीवन
सदा करे उपयोग
कर ले तू भी योग
जाति-पाँति का भेद ना हो
उनसे कोई द्वंद्व ना हो
सबके लिए जरूरी स्वास्थ्य
हो हिंदू या कोई जाति
बना रहे संयोग
कर ले तू भी योग
स्वस्थ शरीर स्वस्थ हो भारत
सदा योग में रहे कार्यरत
योग करें प्राणायाम करें
सपनों को साकार करें
प्रचार-प्रसार चहुँओर
कर ले तू भी योग।

जीवन

जीवन है सपने की तरह
ये सपना है अपने की तरह।
जो है मेरा वो न है मेरा,
जो था मेरा वो न था मेरा।
आया है जैसे जाएगा,
हो जाएगा मिट्टी की तरह।।
जीवन है सपने की तरह
ये सपना है अपने की तरह।
तेरा-मेरा का झगड़ा है,
पदवी ओहदे का रगड़ा है
कस्तूरी की चाह में जैसे,
उथल-पुथल है मृग की तरह।।
जीवन है सपने की तरह
ये सपना है अपने की तरह।
फिर सोचेगा पछताएगा
क्या खोया है क्या पाएगा?
कितना भी ऊँचा क्यूँ ना उड़,
बिखरेगा तिनके की तरह।।
जीवन है सपने की तरह
ये सपना है अपने की तरह।

द्वारा सचिव/ मुवाप्र.
जी-2/105
रेल विहार फेज-।
संपर्क: 9794840967

हिंदी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर हिंदी में देना

जिस अधिकारी के हस्ताक्षर से कोई पत्रादि जारी होता है, स्वयं उसकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि यदि कोई पत्र हिंदी में प्राप्त हुआ है अथवा किसी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन पर यदि हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

◆ गीत ◆

दीनानाथ तिवारी

संदर्भ (शारदागमन)

जाने कौन देश गये घन पंखी दिन
लौट आये हंसों से धुले धुले दिन।
कामायनी गायेगी
उर्वशी सी चाँदनी
छंदों से सिहरेगी
मन की टहनी टहनी
गंध नयी बाँटेंगे चंदन से दिन
लौट आये हंसों से धुले धुले दिन।
संजीवनी बोयेगी
शाकुंतल धूप
जीवन रस पीयेंगे
जड़-चेतन रूप
सम्मोहन बाँटेंगे रासलीला से दिन
लौट आये हंसों से धुले धुले दिन।
उन्मन मन कर देगी
मौसम की बाँसुरी
संयम की गाँठ बाँध
रखना हर साँस री
पल पल रंग बदलेंगे कंचन मृग दिन
लौट आये हंसों से धुले धुले दिन।

शरद धूप साहित्यिक बिंबों में

एक

रोज सुबह एक रंगरेज लड़की
नहा धो अपने
लाल पीले कपड़े
टाँग जाती है दिन की अर्गनी पर
सूखने
और शाम
होते सब पहन
कहीं चली जाती
घूमने।

दो

हर रोज
पूर्वी झरोखे से
शर्मीली धूप
झाँकती है ऐसे
तुम्हारे गोरे मुखड़े से
सरक गयाहो अचानक
घूँघट जैसे।

तीन

एक जंगली सुग्गा
अपनी चोंच में
बिंबा फल दबाये उड़ा
चोंच खुली
फल गिरा
टुकड़े-टुकड़े हो गये
पीला-पीला रस
बहने लगा।

चार

ठिठुरन
भरी ठंड
और ये रंगों की
पिचकारियाँ
क्या मौसम बावला हो गया है?
या रंगों का कोई नया
व्यापारी आ गया है?
जो नित नये रंगों का
विज्ञापन दे रहा है।

1/8 लेबर कालोनी
मोहद्दीपुर, गोखपुर
संपर्क:09839421262

राजभाषा हिंदी किसी व्यक्ति या प्रांत की संपत्ति नहीं है, उस पर सारे देश का अधिकार है।

सरदार वल्लभभाई पटेल

मुख्यालय

महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र की अध्यक्षता में 06.11.15 को क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। राजभाषा सप्ताह समारोह के अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी में चयनित सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी के लिए इस बैठक में महाप्रबंधक महोदय द्वारा यांत्रिक इंजीनियरी विभाग को प्रथम, कार्मिक विभाग को द्वितीय एवं सुरक्षा विभाग को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र की अध्यक्षता में 14.09.15 को हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन, रेलमंत्री के संदेश का वाचन एवं मुंशी प्रेमचंद पर साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी विश्वविद्यालय के प्रो. ने विस्तार से मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ओ.पी.अग्रवाल की अध्यक्षता में 16.09.15 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, विभागेतर इकाइयों, कारखानों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई।

मुख्य चिकित्सा निदेशक श्री की अध्यक्षता में 16.09.15 को 'हृदय रोग- कारण एवं बचाव' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ओ.पी.अग्रवाल की अध्यक्षता में 18.09.15 को मुख्यालय में राजभाषा सप्ताह समारोह के समापन के अवसर पर अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के निर्माण संगठन में 10.09.15 से 15.09.15 तक और यांत्रिक कारखाना/गोरखपुर में 14.09.15 से 21.09.15 तक राजभाषा सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएँ, तकनीकी संगोष्ठी जयंती एवं काव्य संध्या आदि का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के सिंगनल कारखाना द्वारा 24.09.15 को रामधारी सिंह दिनकर की जयंती एवं हिंदी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के परिचालन, इंजीनियरी व सिगनल विभागों में समीक्षा बैठकें तथा निर्माण संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के निर्माण संगठन में 16.10.15 को अधिकारियों व कर्मचारियों के लाभार्थ हिंदी डिक्टेशन की कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र में 05.09.15 को एच.एच.पी. लोकोमोटिव को स्टार्ट एवं बंद करने का तरीका, 12.09.15 को ए.पी.यू.पेंट एवं एल.एच.बी. पावर यूनिट-परिचय व उपयोगिता तथा रेमलॉट- परिचय व उपयोगिता, 03.10.15 को डब्ल्यू.डी. जी. 4 एवं डब्ल्यू.डी.पी. 4 लोकोमोटिव का कैब चेंज करना एवं लोको स्टार्ट करना, 10.10.15 को स्पैड, 17.10.15 को कोहरे में सावधानियाँ (फागी वेदर प्रीकाशन), 24.10.15 को ब्रेक बाईंडिंग के कारण एवं निवारण विषयों पर तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

15.09.15 को निर्माण संगठन में भारतेंदु हरिश्चंद की जयंती मनाई गई।

श्री वी. डुंगडुंग, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा 17.09.15 को मुसुआ कार्यालय एवं प्रबंध विभाग 02.11.15 को भंडार एवं कार्मिक विभाग का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

श्री ध्रुव कुमार श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी द्वारा 04.09.15 को मानीराम व पीपीगंज स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों, 17.09.15 को उप मुसाप्र/विक्रय, भंडार डिपो एवं लेखा विभाग का संयुक्त निरीक्षण, 29.10.15 को वाणिज्य विभाग एवं मुप्रअ/निर्माण कार्यालय एवं 30.10.15 को चिकित्सा व सिगनल विभाग का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

इज्जतनगर

14.09.15 से 21.09.15 तक राजभाषा सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया।

14.09.15 को श्री चंद्रमोहन जिंदल, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मंडल की विभिन्न शाखाओं में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इसी अवसर पर 'वैश्विक परिदृश्य में अच्छे दिनों की आहट' विषय पर हिंदी संगोष्ठी, विभिन्न प्रतियोगिताएँ, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा प्रदर्शनी, पुरस्कार वितरण व कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया।

13.10.15 को श्री चंद्रमोहन जिंदल, मंडल रेल प्रबंधक ने लालकुआ स्टेशन परिसर में राजभाषा उद्यान का औपचारिक उद्घाटन किया। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के निमित्त इस उद्यान के अंदर जमीन पर कंक्रीट से बनाए गए देश के नक्शे पर भाषाई क्षेत्रों को दर्शाया गया है।

यांत्रिक कारखाना, इज्जतनगर में 14.09.15 से 21.09.15 तक राजभाषा सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया जिसमें 14.09.15 को मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री ए.सी.वेसरा की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी, विभिन्न प्रतियोगिताएँ व पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया।

0 .0.15 को फतेहगढ़, 18.09.15 को भंडार डिपो/इज्जतनगर, 0.0.15 को बदायूँ, 0.0.15 को लालकुआ स्टेशनों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 0.0.15 को स्टेशनों का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी निरीक्षण के लिए निर्धारित चेक लिस्ट पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की भी जाँच की।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ने 0.0.15 का निरीक्षण किया। उक्त निरीक्षणों के दौरान निर्धारित चेक लिस्ट पर हिंदी प्रयोग की जाँच की एवं उक्त निरीक्षणों में हिंदी पैरा को भी सम्मिलित किया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार द्वारा 13.10.15 को लालकुआ स्टेशन पर नव-निर्मित राजभाषा उद्यान का निरीक्षण किया गया।

लखनऊ

मंडल रेल प्रबंधक श्री की अध्यक्षता में 16.09.15 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों तथा शेड में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

14.09.15 से 21.09.15 तक राजभाषा सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी संगोष्ठी, विभिन्न प्रतियोगिताएँ, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा प्रदर्शनी, पुरस्कार वितरण व कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया।

19.09.15 को मंडल चिकित्सालय, बादशहनगर में 'डेंगू रोग के लक्षण- कारण व बचाव' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

09.09.15 को डीजल शेड, गोंडा में भारतेंदु हरिश्चंद की जयंती मनाई गई। 03.10.15 को बस्ती में महान साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डा. अष्टभुजा शुक्ल, प्रवक्ता (हिंदी), संस्कृत महाविद्यालय, चिलखोर, बस्ती ने शुक्ल जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला।

27.11.15 को गोरखपुर स्टेशन पर श्री एस.के.भारती, ओ.एस.डी. की अघ्यक्षता श्री जे.पी.सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक की उपस्थिति में डा. हरिवंश राय बच्चन की जयंती मनाई गई।

09.09.15 को डीजल शेड, गोंडा में 'आक्जीलरी पावर यूनिट- परिचय व उपयोगिता' तथा 'रेमलॉट- परिचय व उपयोगिता' तथा 03.10.15 को बस्ती स्टेशन पर 'समपार फाटकों पर अपनाई जाने वाली सावधानियाँ' विषयों पर तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

28.09.15 को नानपारा, 29.09.15 को बहराइच व ऐशबाग तथा 29.10.15 को बलरामपुर स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुराधि श्री एस. के.सपरा ने 12.09.15 को सीतापुर स्टेशन स्थित हिंदी ग्रंथालय तथा 15.09.15 को मैलानी स्थित हिंदी ग्रंथालय का गहन निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री शैलेश कुमार मिश्र द्वारा का गहन निरीक्षण किया गया।

वाराणसी

मंडल रेल प्रबंधक श्री एस. के. कश्यप की अध्यक्षता में 14.09.15 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों तथा प्रशिक्षण केंद्र में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

14.09.15 से 28.09.15 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ, विचार गोष्ठी एवं वाराणसी स्टेशन परिसर में राजभाषा प्रदर्शनी व पुरस्कार वितरण आदि का आयोजन किया गया।

09.10.15 को वाराणसी सिटी स्टेशन, 29.10.15 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र मंडुवाडीह तथा 30.10.15 को मऊ जं. स्टेशन पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

24.11.15 को मंडल कार्यालय में कौमी एकता काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वाराणसी नगर के प्रतिष्ठित कवियों ने कौमी एकता से संबंधित काव्य पाठ किया।

04.09.15 को कप्तानगंज, 07.09.15 को के.या.नि./ गोरखपुर, 10.09.15 को औड़िहार, 18.09.15 को सीवान, 19.09.15 को देवरिया सदर स्टेशन की स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 16.09.15 को मंडल स्थित लेखा कार्यालय तथा 23.09.15 को सी.से. इंजी./कार्य (उत्तर) कार्यालय, वाराणसी में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

14.09.15 को मुख्यालय में आयोजित हिंदी दिवस के अवसर पर लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र साथ में श्री ओ.पी.अग्रवाल, मुराधि व अन्य अधिकारीगण

14.09.15 को मुख्यालय में आयोजित हिंदी दिवस के अवसर पर लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र साथ में श्री ओ.पी.अग्रवाल, मुराधि व अन्य अधिकारीगण

14.09.15 को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र साथ में श्री ओ.पी.अग्रवाल, मुराधि विशिष्ट अतिथिगण व अन्य अधिकारीगण

14.09.15 को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी में संबोधित करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र

18.09.15 को हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में आमंत्रित कवियों के साथ श्री ओ.पी.अग्रवाल, मुराधि व श्री पी.एन.राय, वरि.उप महाप्रबंधक

20.11.15 को उदयपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में इस रेलवे द्वारा प्रस्तुत की गई नाटक 'पन्ना धाय' का दृश्य

डा. हरिवंश राय बच्चन
27.11.1907 ई.-18.01.2003 ई.
इलाहाबाद (उ.प्र.)

नरेश मेहता
15.02.1922 ई.-2000 ई.
शाजापुर (म.प्र.)

बाबू देवकी नंदन खत्री
29.06.1861 ई.-01.08.1913 ई.
मुजफरपुर (बिहार)

कर्रतुल एन हैदर
20.01.1927 ई.-21.08.2007 ई.
अलीगढ़ (उ.प्र.)

श्री ओ. पी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री नानी चुंदूरी, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित